

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जनवरी, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2022

वर्ष : 80 अंक : 01
पौष, 2078 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवानी

जनवरी, 2022



Website : www.jinwani.in

हर एक को अपना जीवन शुद्ध करने के लिए अपनी
आलोचना स्वयं बारीकी से करनी चाहिए।

— आचार्यश्री हस्ती

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः
जय गुरु हीरा जय गुरु महेन्द्र जय गुरु मान

28-7-1945 – 18-12-2021



माँ तुम काशी हो,
माँ तुम अविनाशी हो

Smt. Meema Choudhary

(W/o Late Sh. Sampat Raj Choudhary)

Delhi (Pipar)

अनन्य गुरु भक्त, आनंदमयी, धर्मनिष्ठ, मंगलमयी

IN CELEBRATION OF HER LIFE

Dr Sunil-Sangita, Vimal-Priyanka,
Anand, Sneha, Akshay, Aagam & Entire Choudhary Family

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

जय गुरु हीरा

जय गुरु महेन्द्र

जय गुरु मान

अंक सौजन्य

मनुष्य के अन्तःकरण में व्याप्त सघन अन्धकार को जो विनष्ट कर विवेक का आलोक फैला देता है, वह 'गुरु' कहलाता है।

-आचार्यश्री हस्ती

नियमों, प्रत्याख्याओं एवं जितने भी व्रत और महाव्रत हैं
उन सबमें कषायों का शमन करना सबसे बड़ा व्रत है।

-आचार्यश्री हीरा



श्राविकारत्न स्वर्गीय

श्रीमती शकुन्तलाजी हीरावत

(स्वर्गवास 23 मार्च, 2008)



**समर्पित गुरुभक्त श्रावकरत्न
प्रकाशचन्द हीरावत एवं
समस्त हीरावत परिवार,
जयपुर**

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

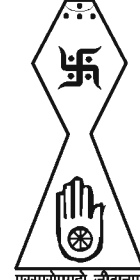
नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परपद्मो जीवनाय

न हु जिणे ब्रज्ज दिस्सई,
बहुमए दिस्सई मग्गदेसिण।
संपइ नेयाएए पढे,
समयं गोयम! मा पमायए॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.31

निश्चय न आज 'जिन' का दर्शन,
पथदर्शक भी ना एक नज़र।
भवतारक पथ पर प्राप्त तुम्हें,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर॥

जनवरी, 2022

वीर निर्वाण सम्बत्, 2548

पौष, 2078

वर्ष 80

अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS

से जमा कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	कॅरियर का चयन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	जीवन-सुधार के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	समाधिमरण के लिए जीवन सुधार जरूरी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	भाई का भाई के प्रति प्रेम कैसा?	-भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.	15
	क्या भगवान ने पुण्य को हेय बताया है?	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	18
	श्रेष्ठ संघ में श्रेष्ठ जीवन जीने का अवसर	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	24
	आचार्यश्री हस्ती की तीन विशेषताएँ	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	26
	पानी, पुण्यवानी और जिनवाणी	-श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.	29
59वाँ दीक्षा-दिवस-	गुरुहीराष्टकस्तोत्रम्	-श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.	30
स्वास्थ्य-विज्ञान-	क्या रात्रि-भोजन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है?	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	32
English-section	Ethical Solution Through Śrāvākācāra (12 Vrats) For Business Excellence	-Dr. H. Kushal Chand	36
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें	-श्री धर्मचन्द जैन	42
जीवन-व्यवहार-	कैसे करें मन का निग्रह?	-श्री पारसमल चण्डालिया	45
	निज अनुभव से पढ़ा इन्सानियत का पाठ	-श्री गौतम पारख	48
	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (12)	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	50
अध्यात्म-	अध्यात्म-साधना का मूल : सम्यग्दर्शन	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	51
चिन्तन-	संसार भावना	-श्री लड्डुलाल जैन (देवली वाले)	59
पावन-स्मृति-	प्रभो! जन-जन का तूँ मंगल कर	-श्रीमती मीमा चौधरी	54
	महामनस्वी कविप्रवर श्री तिलोकऋषिजी म.सा.	-श्री एस. सी. कटारिया	57
सुवा-स्तम्भ	युवक परिषद् करती आह्वान	-श्री मनीष मेहता	55
गीत/कविता-	नव-वर्ष का उपहार	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	17
	ऐसा नया साल हो	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	23
	आलोकित पथ	-डॉ. रमेश 'मयंक'	28
	अनमोल जिन्दगी है, इसको सँवारना है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	31
	गरिमा को बढ़ा देना	-श्री निपुण डागा	41
	विधि का विधान	-श्री शिखरचन्द छाजेड़	41
	संयम को उसका इंतज़ार है	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	47
	कब तलक अपने ही कर्मों.....	-श्री निर्मल कुमार जामड़	47
	दो गज़लें	-डॉ. दिलीप धींग	53
	जीवन को जीना सिखलाएँ	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	53
	गुरु हीरा कृपा से	-महासती श्री रुचिताजी म.सा.	56
	वन्दना हमारी है	-श्री धर्मचन्द जैन	56
	सुख का आधार : शाकाहार	-श्री कस्तूरचन्द बाफणा	58
	जिनवाणी	-डॉ. पी. सी. जैन	63
विचार/चिन्तन-	प्रार्थना का महत्त्व	-कमला सिंघवी	35
	यादगार बनाओ जिन्दगी	-श्री गणपतलाल जैन	49
	जैनत्व को जन-जन तक पहुँचाएँ	-श्री सुगालचन्द जैन	52
	प्रेरणास्पद वचन	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया	60
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	61
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	64
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

कॅरियर का चयन

डॉ. धर्मचन्द जैन

जीवन में मुश्किल, किन्तु महत्त्वपूर्ण निर्णय होता है- 'कॅरियर का चयन।' इसमें आजीविका के साधन के साथ सम्पूर्ण जीवनयात्रा का महत्त्वपूर्ण पक्ष जुड़ा होता है। जीवनयात्रा की दिशा एवं सञ्चालन इस कॅरियर के निर्णय से सुनिश्चित होते हैं।

आधुनिक युग के युवा कॅरियर का चयन करने एवं कॅरियर बनाने के प्रति अत्यन्त जागरूक हैं। वे शिक्षा भी इस तरह के शिक्षण संस्थानों से प्राप्त करना चाहते हैं जहाँ उन्हें आजीविका अथवा जीवनयात्रा का आकर्षक अवलम्बन प्राप्त हो। माता-पिता भी शिक्षा पर विशेष ध्यान देने लगे हैं। अंग्रेजी माध्यम के महँगे कॉन्वेण्ट स्कूल में बच्चों का प्रवेश करवाने में अपनी शान समझते हैं। मातृभाषा हिन्दी का शुद्ध अध्ययन गौण होता जा रहा है। अध्ययन की शाखाओं में विज्ञान के विषयों को प्राथमिकता दी जाती है। इञ्जीनियरिंग, मेडिकल, कानून, प्रशासन, सी.ए. आदि के अध्ययन पर बल दिया जा रहा है। अच्छे शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए भी पात्रता परीक्षाएँ होती हैं। प्रारम्भिक विद्यालयों की शिक्षा भी अनेक माता-पिता की जेब पर भारी बन रही है। फिर आई.आई.टी., आई.आई.एम., एम्स जैसे शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए कोचिंग संस्थानों की राह देखनी पड़ती है। लाखों की संख्या में कोचिंग लेने वाले छात्रों में से मुश्किल से 5% छात्रों का अपेक्षित संस्थानों में प्रवेश हो पाता है। शेष विद्यार्थी निराशा के घने अन्धकार में किंकर्तव्य विमूढ़ जाते हैं।

कॅरियर का आशय है आजीविका का वह साधन जिसको पाकर व्यक्ति प्रसन्नता का और सन्तोष का अनुभव करे। इसमें आजीविका के साधन की कार्यशैली का भी समावेश हो जाता है। आजीविका के साधन में प्रायः आय की राशि की मुख्यता होती है, किन्तु कहीं

आय के साधन के साथ सम्मान पूर्वक सेवाएँ देने का आयाम भी समाविष्ट होता है। उदाहरण के तौर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी प्रजा के मध्य सम्मान पूर्वक जीवन यापन करते हैं। उनके पास आय के अतिरिक्त कुछ करने का अधिकार और शक्ति भी होती है। चिकित्सक का पेशा रोगियों की दृष्टि में भगवान की भाँति होता है। वहाँ आजीविका भी मिलती है और आदर भी। न्याय के क्षेत्र में जाने वाले बुद्धि सम्पन्न छात्र प्रतिष्ठित वकील एवं न्यायाधिपति के गरिमामय पद को सुशोभित करते हैं। चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव आदि के क्षेत्र में जाने वाले विद्यार्थी निजी क्षेत्र में कार्य करने के साथ बड़ी-बड़ी कम्पनियों में अपनी सेवाएँ देकर धन एवं यश अर्जित करते हैं। कुछ लोग शिक्षा के क्षेत्र में अपनी योग्यता से छात्रों के जीवन-निर्माण का कार्य करते हैं। भारत में आजीविका का यह भी बड़ा साधन है जिससे लाखों शिक्षित लोग जुड़े हैं। कुछ लोग निजी व्यापार एवं उद्योग को आजीविका का साधन बनाते हैं और उनमें भी देश सञ्चालन को प्रभावित करने की क्षमता होती है। बड़े-बड़े उद्योगों पर उनका कब्जा होता है। उत्पादन, वितरण आदि के माध्यम से वे आम जनता तक आवश्यक सामग्री एवं विलासिता की वस्तुएँ पहुँचाते हैं। कुछ लोग देश की सुरक्षा के लिए सेना में भर्ती हैं तो कुछ पुलिस के रूप में सेवा दे रहे हैं। कुछ बैंकों, वित्तीय संस्थाओं, सूचना तकनीकी उद्योग आदि में संलग्न हैं। भारत में लाखों की संख्या में लोग कृषि कार्यों से जुड़े हुए हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो राजनीति को अपना पेशा बनाते हैं। वे जनता की सेवा का नाम लेते हैं, किन्तु वही उनका कॅरियर एवं आजीविका का साधन बन जाता है। यह कहा जा सकता है कि सबकी रुचि भिन्न-भिन्न है तथा उसके अनुसार ही वे अपने

कॅरियर का चयन करते हैं।

यह आश्चर्यजनक लग सकता है कि कोई ऐसे कॅरियर का भी चयन कर सकता है जिसमें धन कमाने का कोई लक्ष्य न हो, परन्तु जीवन में शान्ति, सुख, ज्ञान एवं संयम-साधना का उत्कृष्ट स्वरूप हो। आज कतिपय उच्च शिक्षित युवक-युवति इस प्रकार के कॅरियर का चयन कर रहे हैं। 9 दिसम्बर, 2021 को पीपाड़ में अभी 13 मुमुक्षुओं ने साधु एवं साध्वी-जीवन को अपना कॅरियर बनाया है। उनमें कोई सी.ए., जौहरी, ग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट रहे हैं, किन्तु उन्होंने सन्तों एवं महासतियों की सन्निधि में रहकर यह जान लिया कि जीवन का श्रेष्ठ स्वरूप क्या है और उसे कैसे जिया जा सकता है। उसका उन्होंने साथ में रहकर आस्वादन किया है, प्रशिक्षण लिया है और उसके पश्चात् परिवारजनों से अनुमति लेकर जीवन की इस दुर्गम यात्रा का चयन किया है।

भौतिक चकाचौंध के इस युग में जहाँ विलासी जीवन की समस्त सामग्री उपलब्ध है, उसे त्यागकर कठिन चुनौती पूर्ण संयम-मार्ग पर क्रम बढ़ाना निश्चित रूप से दृढ़ संकल्प का ही परिणाम हो सकता है। इस दशक में ऐसे अनेक युवक-युवति हुए हैं जिन्होंने करोड़ों का पैकेज छोड़कर प्रव्रज्या का पथ अपनाया है।

प्रव्रजित सन्त-सती के पास न कोई अपना घर होता है, न कोई रुपया होता है, न चलने को कोई वाहन होता है, न अपना कोई रसोईघर होता है। यही नहीं पहनने को चप्पल नहीं होती, खाने के लिए दूसरे दिन क्या मिलेगा, यह निश्चित नहीं होता, न कम्प्यूटर और मोबाइल उनके पास होता है। केवल सुबह से शाम निज की साधना करनी होती है। स्वाध्याय, ध्यान और वैय्यावृत्य उनके प्रमुख कर्तव्य होते हैं। जो भौतिक सुविधाओं में जीवन-जी चुका हो, उसके लिए यह संयम जीवन चुनौती पूर्ण होता है। कठिनाई पदे-पदे अनुभूत होती है, नंगे पाँव विहार करने पर पैरों में छाले हो जाते हैं, अस्वस्थ होने पर चिकित्सा में पराधीनता का अनुभव होता है। प्रातः एवं सायंकाल प्रतिलेखना और प्रतिक्रमण करना होता है। आत्मसाधना करने और दूसरों

को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा करने के अलावा कोई विशेष कार्य नहीं होता है।

कॅरियर का यह पथ अत्यन्त कठिन होते हुए भी इसे वीरता का पथ कहा जा सकता है। क्योंकि इस पथ पर सुकुमार और सुविधाभोगी मानसिकता के लोग नहीं चल पाते हैं। आत्म-साधना का पथ अत्यन्त कठिन है। इसीलिये कहा गया है-लाखों युद्धों को जीत लेने की अपेक्षा स्वयं को जीत लेना परम जय है-

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे।

एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जयो॥

-उत्तराध्ययनसूत्र 9.34

दुनिया का, राष्ट्र का, राज्य का, कम्पनी का प्रबन्धन इतना कठिन नहीं होता है जितना स्वयं के आन्तरिक विकारों पर विजय का प्रबन्धन कठिन होता है। जो ज्ञानपूर्वक वीरता के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं वे निश्चित रूप से सबके पूजनीय स्वतः ही बन जाते हैं। क्योंकि जो मार्ग हम सबको कठिन प्रतीत होता है उस मार्ग पर वे बड़ी सहजता से बड़े उत्साह से चल पड़ते हैं।

आज जो करोड़ों का पैकेज प्राप्त कर रहे हैं। वे स्वयं के लिए एवं परिवार के लिए कुछ पल निकालने में भी असमर्थ होते हैं। जिन कम्पनियों में वे काम करते हैं वे कम्पनियाँ उनका इतना शोषण करती हैं, कि उन्हें अन्य कुछ सोचने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता। पैसे में जीवन बिक जाता है। वे धन के और कम्पनी के अधोषित दास बन जाते हैं। स्वाधीनता या स्वतन्त्रता छिन जाती है।

कॅरियर का सही स्वरूप क्या है? यह मात्र आजीविका के साधन तक सीमित नहीं है। उस साधन में गुण-दोष का परीक्षण करके यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जीवन-यापन के साथ इससे कितने आनन्द, सुख, शान्ति और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। केवल जीवन चलाने के लिए कमाना ही कॅरियर नहीं है, उस जीवन को क्या दिशा दी गयी है यह भी कॅरियर का अङ्ग है। कभी आजीविका का साधन ऐसा भी होता है कि जो चित्त को विकृत बनाने के साथ परिवार को भी संकट में

डाल देता है। तनाव तीव्र होता चला जाता है। स्वास्थ्य एवं परिवार की देखभाल भी गौण हो जाती है।

साधु-जीवन में आजीविका की चिन्ता और किसी प्रशासक का दबाव नहीं होता। यह कैरियर का अद्भुत विलक्षण क्षेत्र है। इसमें जीवन के सत्य को समझने का और उसको आचरण में लाने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है। यहाँ यह समझ में आता है कि शरीर अनित्य है अशुचिमय है और इस शरीर में शाश्वत निवास नहीं है। यह भी समझ में आता है कि काम-भोगों और विषय-वासनाओं को जीतना आवश्यक है। नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के बिना करोड़ों रुपये के पैकेज पर काम करने वाले लोग भी यदि उन्मार्ग पर चले गये तो वे स्वयं के शत्रु बन जाते हैं।

आज मनुष्य कैरियर में काम-भोगों को ही प्रमुख बनाता है। उनकी प्राप्ति के लिए ही आवश्यकता से अधिक धन-सम्पत्ति जुटाना चाहता है। उसी के लिए दिन-रात मेहनत, मजदूरी करता है। परन्तु यह भी सत्य है कि अनेक राजाओं ने और चक्रवर्तियों ने समस्त राज्य एवं सुख-सुविधाओं को त्यागकर प्रव्रज्या अङ्गीकार की थी।

साधु-जीवन सबसे उत्कृष्ट है। उद्योगपति, प्रोफेसर, न्यायाधिपति, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री आदि सभी उनके चरणों में झुकते हैं। क्योंकि सुविधाओं में जीना सरल है, किन्तु उनके बिना प्रसन्नतापूर्वक जीना कठिन है। साधु-जीवन त्याग-तपस्या से युक्त संयमी जीवन है, जो संसारी गृहस्थों को कठिन अनुभूत होता है, इसलिए वे तप-त्याग के समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं।

साधु रत्नत्रय के आराधक होते हैं वे भावों से विरक्त होते हैं तथा आत्म-विजय, आत्मशुद्धि एवं वीतरागता के मार्ग पर चलते हैं। वे हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन सेवन एवं परिग्रह के पाप से रहित होते हैं। मन में किसी के भी प्रति अशुभ नहीं सोचते हैं। क्रोध, मान, माया एवं लोभ पर विजय प्राप्त करने के लिए

प्रयत्नशील होते हैं। वे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श एवं शब्द इन सभी विषयों के अनुकूल होने पर राग तथा प्रतिकूल होने पर द्वेष नहीं करते हैं। वे जागरूक होकर समभाव में रहने का प्रयत्न करते हैं। वे जीवन पर्यन्त समभाव की साधना को प्रमुखता देते हैं। विकट उपसर्गों एवं परीषहों में भी विचलित नहीं होते हैं। उनका आत्मबल एवं मनोबल प्रबल होता है। वे भय के कारण उपस्थित होने पर भी भयभीत नहीं होते हैं। अहंकार के निमित्त रहने पर भी अभिमान नहीं करते हैं। साधु-जीवन की समस्त दिनचर्या आत्म-साधना एवं सजगता से युक्त होती है। तभी वे ज्ञान के आवरण को दूरकर ज्ञान की निर्मलता एवं उच्चता का अनुभव करते हैं। उनका चारित्र्य दिखावे के लिए नहीं, जीने के लिए होता है। इसलिए वे मात्र वेश से या दिगम्बरत्व से साधु नहीं होते, अपितु भाव से भी साधु होते हैं। भाव से साधु होने पर ही सच्चा साधुत्व आता है। वह परदोष दर्शन पर नहीं निज दोष के प्रेक्षण एवं निराकरण पर केन्द्रित होता है। जिस चित्त पर असंख्यात या अनन्तकाल के संस्कारों का प्रभाव है, उन्हें दूर करने हेतु सजग एवं तत्पर होता है। वह दूसरों से प्रशंसा का अभिलाषी नहीं होता है, किन्तु दूसरों के गुणों से प्रमुदित होता है। वह अपनी कमियों एवं दोषों को जानता है, उन्हें छिपाता नहीं है, अपितु आलोचना, गर्हा एवं प्रायश्चित्त से उनका निराकरण कर निर्मल बनता है। वह नये कर्म नहीं बाँधता और पुराने कर्मों को क्षय करने हेतु संवर एवं निर्जरा की साधना में संलग्न रहता है। वह बाहर की नहीं भीतर की उलपब्धि के लिए समर्पित रहता है।

साधु-जीवन में आजीविका का साधन भिक्षाचर्या है। भिक्षा उन्हें गृहस्थों के घरों से ससम्मान प्राप्त होती है। शेष समय आत्म-साधना के लिए सुरक्षित रहता है। कैरियर का यह रूप बाहर से भले ही पसन्द न आता हो, किन्तु आत्मार्थियों, सत्यान्वेषियों एवं निजानन्द में रहने वालों के लिए साधु-जीवन से बढ़कर कोई कैरियर नहीं है। इसका चयन प्रज्ञाशील व्यक्ति ही कर पाते हैं।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

खेत्तं वत्थुं हिरण्यं च, पुत्तदारं च बंधवा।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, 19.17

अर्थ-खेत, भवन, स्वर्ण, पुत्र, पत्नी तथा बन्धुजन और इस शरीर को छोड़कर (एक दिन) विवश होकर मुझे अवश्य ही चले जाना है।

विवेचन-उत्तराध्ययनसूत्र के 19वें अध्ययन मृगापुत्रीय में इस सत्य का उद्घाटन किया गया है कि जब मृत्यु आती है तो मनुष्य जिनको अपना समझता है और जिनके प्रति गाढ़ आसक्त होता है उन सबको छोड़कर चल देता है।

मनुष्य संसार में जब तक रहता है तब तक इस भ्रान्त धारणा में जीता है कि जो भूमि-भवन, खेत-खलिहान, सोना-चाँदी, पुत्र-पौत्र, पति-पत्नी, बन्धुजन, मित्रगण यहाँ पर प्राप्त हुए हैं तथा यह जो शरीर मिला है वे सब सदैव साथ में रहने वाले हैं। एक दिन इनसे वियोग हो जायेगा इस सत्य को देखते हुए भी अन्तश्चेतना से मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता है। इसीलिये वह इनके संरक्षण, संवर्द्धन आदि के प्रति समर्पित एवं लालयित रहता है। इनमें थोड़ी भी हानि होने पर उसे लगता है कि मेरा जीवन अब आगे कैसे चलेगा। वह व्यर्थ ही आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान में जीता है।

यह भी सत्य है कि ये वस्तुएँ और व्यक्ति हमें बाँधने में असमर्थ हैं। हम स्वयं ही उनसे बाँधते हैं। उनके होने पर हमें सुख की और जीवन की अनुभूति होती है। जीवन के वास्तविक सत्य से हम आँख मूँद कर जीते हैं। वास्तविक सत्य यही है कि इनसे वियोग होना निश्चित है। यह भी सत्य है कि हमारा जीवन इन सबके सहयोग से चलता है। इसलिये जब तक जीवन है तब तक इनके साथ शान्ति, प्रेम और सदुपयोग के साथ जीना है। इनके प्रति ममता करने पर इनका दुरुपयोग होने लगता है तथा चित्त की शान्ति अशान्ति में बदल जाती है।

अधिकतर लोग इस मानस के होते हैं कि हमें जो

भोग सामग्री प्राप्त हुई है वह सदैव रहने वाली है। उत्तराध्ययनसूत्र के 5वें अध्ययन में इस मानसिकता वाले लोगों के चिन्तन को इस प्रकार प्रकट किया गया है-

हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा, नत्थि वा पुणो॥

ये कामभोग अभी हाथ में आये हुए हैं और भविष्य में मिलने वाले जो सुख हैं उनका पता नहीं है। अतः इन्हें छोड़ना बुद्धिमत्ता नहीं है। कौन जानता है कि परलोक है या नहीं? इस मानसिकता वाले लोगों की कोई कमी नहीं है और इस मानसिकता के कारण वे अनेक प्रकार के पाप कार्य इस जीवन में करते रहते हैं। वे हिंसा करते हैं, झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, स्वच्छन्द रूप से कामभोग भोगते हैं, अथाह सम्पत्ति का संग्रह करते हैं, दूसरों का शोषण करते हैं, छल-कपट का प्रयोग करते हैं, दूसरों का अपमान-तिरस्कार करते हैं, मदिरा-मांस का सेवन करते हैं, निंदा-विकथा करते हैं। इस प्रकार सुख भोग की लालसा में वे सहस्रों पाप कार्य करते हैं। परिणामस्वरूप दुःख को प्राप्त करते हैं। पाप का परिणाम दुःख है, इस बात से वे अनभिज्ञ रहते हैं। जब दुःख आ घेरता है तो फिर दुःखी होते हैं और पश्चात्ताप करते हैं या फिर उनके चित्त की दयनीय स्थिति बन जाती है।

इसलिये सावधान किया गया है कि जो भी हमें यहाँ मिला है उसे एक दिन अवश्य ही छोड़कर जाना है। यह ध्रुवसत्य है। यह सत्य जब मस्तिष्क में रहता है, सोच में रहता है, तो जीवन के प्रति वैसी ही दृष्टि बन जाती है। फिर जो मिला है उसका उपयोग होगा, किन्तु उससे सुख भोग की लालसा नहीं रहेगी। पुत्र, पत्नी, माता-पिता आदि सभी के प्रति मैत्री और आदर का भाव होगा तथा जड़ सम्पत्ति के प्रति मात्र उसके सदुपयोग का भाव रहेगा। इसी से जीवन में शान्ति और सुख का अनुभव होगा।



जीवन-सुधार के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ॐ जीवन-रथ को कुमार्ग से बचाकर सन्मार्ग पर चलाने के लिए और अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए योग्य गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है।
- ॐ अनुकूल निमित्त मिलने पर जीवन बड़ी तेजी के साथ आध्यात्मिकता में बदल जाता है।
- ॐ जिस प्रकार खाने से ही भूख मिटती है, भोजन देखने या भोज्य-पदार्थों का नाम सुनने से नहीं; इसी प्रकार धर्म को जीवन में उतारने से, जीवन के समग्र व्यवहारों को धर्ममय बनाने से ही वास्तविक शान्ति प्राप्त हो सकती है।
- ॐ ज्ञानी पुरुष का पौद्गलिक पदार्थों के प्रति मोह नहीं होता।
- ॐ जो लोग आहार के सम्बन्ध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है। वास्तव में आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- ॐ मनुष्य के मन की निर्बलता जब उसे नीचे गिराने लगती है तब व्रत की शक्ति ही उसे बचाने में समर्थ होती है।
- ॐ व्रत अङ्गीकार नहीं करने वाला किसी भी समय गिर सकता है। उसका जीवन बिना पाल की तलाई जैसा है, किन्तु व्रती का जीवन उज्ज्वल होता है।
- ॐ एक मनुष्य अगर अपने जीवन को सुधार लेता है तो दूसरों पर उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।
- ॐ पुद्गल एवं पौद्गलिक पदार्थों की ओर जितनी अधिक आसक्ति एवं रति होगी, उतना ही आन्तरिक शक्ति का भान कम होगा।
- ॐ सम्यग्दृष्टि जीव में दर्शनमोहनीय का उदय न होने से तथा चारित्रमोहनीय की भी तीव्रतम शक्ति (अनन्तानुबन्धी कषाय) का उदय न रहने से मूर्च्छा-ममता में उतनी सघनता नहीं होती जितनी मिथ्यादृष्टि में होती है।
- ॐ जब तक परिग्रह पर नियन्त्रण नहीं किया जाता और उसकी कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाती तब तक हिंसा आदि पापों का घटना प्रायः असम्भव है।
- ॐ जब तक मनुष्य इच्छाओं को सीमित नहीं कर लेता तब तक वह शान्ति नहीं पा सकता और जब तक चित्त में शान्ति नहीं, तब तक सुख की सम्भावना ही कैसे की जा सकती है ?
- ॐ परिमाण कर लेने से तृष्णा कम हो जाती है और व्याकुलता मिट जाती है। जीवन में हल्कापन आ जाता है और एक प्रकार की तृप्ति का अनुभव होने लगता है।
- ॐ मन में सन्तोष नहीं आया तो सारे विश्व की भूमि, सम्पत्ति और अन्य सुख-सामग्री के मिल जाने पर भी मनुष्य शान्ति प्राप्त कर नहीं सकता।
- ॐ एक अकिञ्चन निस्पृह योगी को जो अद्भुत आनन्द प्राप्त होता है वह कुबेर की सम्पदा पा लेने वाले धनाढ्य को नसीब नहीं हो सकता।
- ॐ पेट की भूख तो पाव दो पाव आटे से मिट सकती है, मगर मन की भूख तीन लोक के राज्य से भी नहीं मिटती।
- ॐ अमर्यादित धन-सञ्चय की वृत्ति के पीछे गृहस्थी की आवश्यकता नहीं, किन्तु लोलुपता और धनवान् कहलाने की अहंकार-वृत्ति ही प्रधान होती है।

- 'नमो पुरिसवरगन्धहृत्थीणं' पुस्तक से साभार

समाधिमरण के लिए जीवन सुधार जरूरी

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने जन्म और मरण का हार्द समझाते हुए प्रेरणा की, कि आप अपने जीवन को सुधार लें, मरण स्वतः सुधर जाएगा। आचार्यश्री द्वारा कांदिवली-मुम्बई में 30 जुलाई, 2008 को प्रवचन-सभा में फरमाए प्रवचन का आशुलेखन एवं सम्पादन नौरतनमल मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

समाधि से अविचल पद पाने वाले सिद्ध भगवन्त, आत्म-साक्षात्कार करने वाले अरिहन्त भगवन्त और समाधि की साधना में अग्रसर सन्त भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

जीवन के दो पृष्ठ हैं। पहला पृष्ठ है जन्म तो अन्तिम पृष्ठ है-मरण। जन्म और मरण के बीच जीवन चलता है। उसका जीवन सार्थक है जो कर्तव्य, धर्म, समाधि और शान्ति के साथ जीता है। जीना भी है तो कर्तव्य के लिए और मरना भी है तो कर्तव्य के लिए। मतलब क्या? जीवन है तो धर्म के लिए और मरण भी है तो धर्म के लिए।

जीवन और मरण का जोड़ा है। जैसे कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष से महीना बनता है उसी तरह प्रवृत्ति और निवृत्ति से साधना चलती है। श्वास और उच्छ्वास एक-दूसरे से पूरक हैं तो पढ़ाई और परीक्षा भी एक तरह से पूरक ही हैं। एक बच्चा मात्र पढ़ाई करे, लेकिन परीक्षा न दे या परीक्षा दे और अनुत्तीर्ण हो जाय तो पढ़ाई पर पानी फिर जाता है। मरण-सुधार के लिए पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज की भाषा में कहूँ-“जिसका जीवन सुन्दर नहीं, उसका मरण सुधरना भी कठिन है।”

आज हर व्यक्ति जीना चाहता है, पर वह मरने से डरता है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व्यक्ति अपनी दिनचर्या व्यवस्थित बनाए रखना चाहता है। जल्दी उठना, व्यायाम और प्राणायाम करना, भोजन कब-कैसे और कितना करना, मेरी शक्ति क्षीण न हो अतः कौनसे पदार्थ खाना, कौन से नहीं खाना का ध्यान रखता है। वह जो भी क्रिया करता है, वह स्वस्थ जीवन के जीने के

लिए करता है। वह पढ़ेगा भी तो ज्ञान की बातें पढ़ेगा। क्योंकि वह सोचता है-जीवेम शरदः शतम्। हम सैकड़ों वर्षों तक जीएँ।

आदमी सौ साल तक सुखपूर्वक जीने की बात सोचता है। वह सोचता है मेरा शरीर तन्दुरुस्त रहे, तन-मन में कोई कमजोरी नहीं आए, मेरे ये भोग के साधन जो हैं वे छूटे नहीं। हर व्यक्ति की चाहना रहती है कि मेरी अवस्था भले ही हो जाय, पर व्यवस्था नहीं बिगड़े।

आदमी जो सोचता है क्या वैसा बनना सम्भव है? आदमी शतायु होना चाहता है, सुखपूर्वक जीवन जीना चाहता है। वह चाहता है कि मेरा सुनना-देखना, चलना-फिरना सब बराबर बना रहे, मेरी शक्ति क्षीण न हो, मैं बीमार न पड़ूँ। उसे सुखपूर्वक जीना है, मरना नहीं।

आदमी मरने से डरता है। आप मानकर चलिए जो भी मरने से डरता है तो कहना होगा कि उसका जीवन अच्छा नहीं हो सकता। जिसके जीवन में धर्म के प्रति श्रद्धा है, कर्तव्य के प्रति निष्ठा है उसे न जीने की खुशी होती है, न मरने का गम। मारवाड़ में एक कहावत है-हाथी जिन्दा है तो लाख का, मर गया तो सवा लाख का।

माता-पिता अपनी बच्ची का लाड़-दुलार करते हैं। उसका भरण-पोषण कर, उसे योग्य बनाते हैं। ऐसा कब तक? वह जब तक घर में है उसका हर तरह से ध्यान रखा जाता है, पर माता-पिता जानते हैं कि यह बच्ची सदा घर में रहने वाली नहीं है। ज्यों ही बच्ची की शादी होती है, वह परायी हो जाती है। आप इस तथ्य से भली-भाँति परिचित हैं।

और कहूँ! एक आदमी जोड़-जोड़कर धन का

संग्रह करता है। उसका पुत्र मन-ही-मन समझता है कि चाहे जितना जोड़ लो, धन आपके पास रहेगा नहीं। एक-न-एक दिन धन-सम्पदा मुझे ही मिलनी है।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो आदमी को शिक्षा देते हैं। शिक्षा के लिए और-और क्या कहूँ, यह धरती हँसती है। आदमी खेत जोतता है, भरी सदी में रात को खड़ा रहकर पानी देता है, फसल की रक्षा-सुरक्षा करता है, पर उसे अन्न उतना ही मिलता है जितना तक्रदीर में लिखा है।

आदमी नहाता है, वस्त्राभूषण धारण करता है, शृङ्गार से सजाता है, शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाए रखने के लिए न जाने कितने-कितने करतब करता है, किन्तु मौत उस व्यक्ति पर हँसती है। मौत जब आती है तो क्षण-पल में शरीर निश्चेष्ट हो जाता है।

लोगों को आप मरते हुए देखते हैं। हर रोज अनेक मरते हैं, क्या आपका मरण की तरफ कभी चिन्तन चला है? आप मरने पर क्या करते हैं? बाँस की सीढ़ी बनाकर मृत देह को उस सीढ़ी पर बाँधते हैं, राम-नाम सत्य है या अरिहन्त नाम सत्य है कहते-कहते श्मशान तक ले जाते हैं, श्मशान में लकड़ियों से चिता बनाते हैं और दाह संस्कार होने तक वहाँ बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें करते हैं, लेकिन कितनों का यह चिन्तन चलता है कि एक दिन मुझे भी मरना है। हाँ, श्मशान में बैठे-बैठे तो कहने वाले कहते भी हैं कि आया है सो जाएगा। कोई विद्वान् होगा तो उसके मुँह से निकलेगा-जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः। वह चाहे गरीब हो या अमीर, राजा-महाराजा हो या चक्रवर्ती, जो जन्मा है वह मरेगा ही। आया है सो जाएगा, अमर कोई नहीं रहता।

शास्त्र कहता है-मृत्यु तो कल्प वृक्ष है। क्यों? जीवन भर अच्छा किया-कराया पानी हो जाएगा, अगर मरण बिगड़ गया तो। मरण के समय विकार आ जाय, वासना आ जाय, हाय-हाय याद रह जाय तो मानकर चलिए उसका जन्म बिगड़ जाएगा। मृत्यु परीक्षा है। मृत्यु कसौटी है। परीक्षा देने वाला लड़का पास होने पर अगली कक्षा में जाएगा। एक उक्ति में ठीक ही कहा है-

मृत्युकल्पद्रुमे प्राप्ते, येनाऽऽत्मारथो न साधितः।
निमग्नो जन्मजे बालो, स पश्चात् किं करिष्यति।।

अर्थात् कल्पवृक्ष रूप मृत्यु को पाकर जिसने अपनी आत्मा का हित साधन नहीं किया, वह व्यक्ति अगले जन्म में पछताता है।

आगे कहा-‘तप्तस्य तपसश्चापि, पालितस्य व्रतस्य च पठितस्य श्रुतस्यापि, फलं मृत्यु समाधिना।’ यानी जिसने जितनी तपश्चर्या की, उसका फल देखना चाहो तो मरण को देखो-मरण समाधिपूर्वक है या नहीं।

हर व्यक्ति शान्ति और समाधि से जीना चाहता है भले ही वह कम पढ़ा-लिखा क्यों न हो। जिन्हें शान्ति और समाधि के बजाय कष्ट-परेशानी है, क्लेश-कलह है, लड़ाई-झगड़े हैं तो उनके मुँह से निकलता है-भगवान उठा ले तो अच्छा है। साधना चाहे सत्य की हो या शील की अथवा सन्तोष की ही क्यों न हो, उसका मरण शान्ति और समाधि से होगा।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) ने दस वर्ष से लेकर 81 वर्ष तक संयम-साधना की, श्रुत-स्वाध्याय किया, जीवनपर्यन्त तप करने वाले उस महापुरुष ने चतुर्विध संघ की दीप्ति बढ़ाई, पूज्य गुरुदेव के वे शब्द-मुझे खाली हाथ नहीं जाना है, आज भी प्रेरणा देते हैं। उस महापुरुष ने तेरह दिवसीय तप-संथारे के साथ समाधि-मरण का वरण कर मृत्यु को महोत्सव बना दिया, आपने देखा है, सुना है, आपके ध्यान में है।

मैंने 2002 के बालकेश्वर चातुर्मास में दो-तीन दिन तक लगातार उस महापुरुष के समाधि-मरण पर अपनी बात रखी, आज मात्र समाधि कैसे बनी रहती है, थोड़ी-सी भूमिका रखी है। जिनका जीवन सरल है, निष्कपट है, जो धर्म में स्थिर है, ऐसे समता के सागर पूज्य श्री सागरमल जी महाराज के संथारे को लेकर कुछ कहने की भावना है।

संथारे के विषय में कई लोगों की सोच सही नहीं

है। कभी कोई अस्वस्थता में संधारा कर ले तो लोग प्रश्न करते हैं कि घर वाले उसे मारना चाहते हैं। संधारे को आत्म-हत्या के रूप में कहने वाले भी बहुत हैं। वे संधारे में और मरण में अन्तर तक नहीं जानते। आत्म-हत्या विवश होकर की जाती है, जबकि संधारा स्वेच्छा से किया जाता है।

मरना सबको है। सब मरते भी हैं। एक हाय-हाय करते, रोते-रोते मरता है तो एक स्वेच्छा से संधारे के साथ मरण प्राप्त करता है। जो हाय-हाय और रोते-रोते मरता है उसके घर-परिवार वाले आर्त्त करते हैं और जो संधारे के साथ मरण प्राप्त करता है उसकी जय-जयकार होती है।

पूज्य श्री सागरमल जी महाराज का मरण समाधि-मरण था। उन्होंने हँसते-हँसते जीवन छोड़ा। वह समय था राजा-महाराजाओं का। विक्रम सम्वत् 1985 की घटना है। तब भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था। रियासत था किशनगढ़ का। पूज्य श्री सागरमल जी महाराज ने संधारा कर लिया, कइयों को संधारा पसन्द नहीं आया तो कई विरोध में बोलने लगे। विरोधी लोगों ने महाराजा के कान भरने शुरू किए कि इस भीषण गर्मी में एक सन्त को मारा जा रहा है।

किशनगढ़ महाराजा ने लोगों से सुना तो अपने दीवानजी को आदेश दिया कि जाकर देखो क्या बात है?

दीवान साहब स्थानक पहुँचे। वहाँ उपस्थित सन्तों से कहा-महाराज को क्यों मार रहे हो? सन्त जवाब दे उसके पहले संधारालीन मुनि ने कहा दीवान साहब ! यह शरीर अब छूटने वाला है। शरीर छूटे उसके पहले मैं छोड़ दूँ तो क्या वह गलत है? मुनिश्री ने कहा- एक आदमी किराए के मकान में रहता हो, मकान मालिक उससे मकान खाली करने को कहे तो उसे क्या करना चाहिए? मकान मालिक धक्के देकर निकाले,

उसके बजाय तो स्वयं होकर मकान खाली करने में इज्जत बनी रहती है ऐसे ही यह शरीर अब रहने वाला नहीं है। शरीर मुझे छोड़े उसके पहले मैं स्वयं होकर उसे क्यों न छोड़ दूँ।

महाराज ने कहा-छूटने में दुःख है, छोड़ने में दुःख नहीं होता। छूटने में दुःख है, छोड़ने में सुख। एक व्यक्ति की जेब से पैसे गिर गए तो वह दुःखी होगा। बार-बार बोलेगा-मेरे पैसे गिर गए। वह ढूँढता है कहाँ गिरे, कैसे गिरे। जिसने स्वयं होकर किसी को अपनी इच्छा से दे दिए तो उसे कोई दुःख नहीं होता। छूटने में दुःख है, छोड़ने में नहीं। छोड़ने में प्रसन्नता है जबकि छूटने में दुःख है।

पूज्य श्री सागरमल जी महाराज की दृढ़ता और संधारे के प्रति प्रबल भावना सुन-समझकर दीवान साहब तो नतमस्तक हुए ही, किशनगढ़ नरेश ने भी सरासर झूठी बात पर नाराजगी प्रकट की।

पूज्य श्री सागरमल जी महाराज का 59 दिन का संधारा निर्विघ्न चला। जिन्हें एक उपवास कभी भारी लगता था, आज संधारा करके इतिहास रच दिया। संधारे में उस महापुरुष ने आत्मरमण-आत्मचिन्तन करके मृत्यु को महोत्सव बनाया, हम-सब जीवन तो जीते हैं, मरने की कला भी सीखें। क्यों तो यह शरीर एक दिन जाएगा, शरीर स्थायी रहने वाला नहीं है। शरीर छूटे उसके पहले छोड़ने की कला आती है तो तन से, मन से, धन से ममता उतार कर आरम्भ-परिग्रह छोड़कर, आसक्ति त्याग कर संयम के रास्ते पर चलना होगा, तभी महापुरुषों के जीवन-वृत्त सुनना सार्थक होगा। आप छूटने से पहले छोड़ने का प्रयास करेंगे तो सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।



❖ यदि जीवन बनाना है, जीवन का निर्माण करना है तो प्रत्येक को स्वाध्याय करना पड़ेगा। स्वाध्याय के बिना ज्ञान की ज्योति नहीं जगेगी।

❖ स्वाध्याय शुद्धि का मार्ग भी बताता है, और स्वयं शोधक तत्त्व (निर्जरा) भी है। —आचार्यश्री हस्ती

भाई का भाई के प्रति प्रेम कैसा ?

महान् अध्यक्षसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यक्षसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 6 नवम्बर, 2021 को राता उपासरा, पीपाइशहर में प्रवचन करते हुए भय्या-दूज का माहात्म्य समझाया गया है तथा परस्पर प्रेम और आत्मीयता के साथ भाई-दूज के त्योहार को मनाने की प्रेरणा की गई है। इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

निज को निज से निहारकर निरञ्जन-निराकार पद को प्राप्त करके जगत्-जीवों के प्रति भ्रातृत्वभाव का विकास करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् प्रतिकूलता में समता का सर्जन करने वाले और अनुकूलता में आत्म-रमण का अमृत-पान करने वाले आगमवेत्ता-प्रसन्नचेता आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन...नमन...।

बन्धुओं!

पातक-प्रक्षालिनी, भवभञ्जनहारिणी, श्रेयस्कारिणी श्रुतवाणी का आधार बनाकर सुभाषित वचनों के माध्यम से धनतेरस के दिन चञ्चल लक्ष्मी के बजाय दूसरे दिन रूप-चतुर्दशी को रूपातीत बनने के लक्ष्य से विचार चला। तदनन्तर श्रमण भगवान महावीर प्रभु के निर्वाण-कल्याणक के अलौकिक जीवन का दिग्दर्शन करवाया गया। कल गौतम प्रतिपदा के कारण हमने उनके गुणगान किये। आज भय्या-दूज है। इसकी ऐतिहासिकता, बहिन का भाई के प्रति प्रेम और भाई का भाई के साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार के नाते हम आज कुछ घटनाओं-दृष्टान्तों का विवेचन करने का प्रयास करेंगे।

आज भाई-दूज है। इसे हम भय्या-दूज भी कहते हैं। आप इस बात को जानते हैं कि भय्या-दूज त्योहार कैसा होता है? बहिन का भाई के प्रति प्रेम और भाई का भाई के साथ आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध कैसे बनता है? आज इस विषय पर कुछ चिन्तन करने का प्रयास करेंगे।

भाई कौन? एक माता के गर्भ से पैदा होने वालों का सम्बन्ध क्या भाई-बहिन का सम्बन्ध है और भाई का भाई के साथ कैसा व्यवहार है? मैं बात को आगे

बढ़ाऊँ इसके पूर्व हमारी एक प्राचीन कहावत जो आपने कई बार सुनी है, कइयों ने बोली भी है वह कहावत है-

रहना तो भाइयों में, हो भले ही वैर ही।

खाना तो माँ के हाथ का, हो भले ज़हर ही॥

आप-सब इस कहावत को जानते हैं और इसीलिए मेरे आगे-आगे बोल रहे हैं। देखिये, बोलना एक बात है और भाई का भाई के साथ तथा बहिन का भाई के साथ प्रेम दूसरी बात है। इसे हम गहराई से जानें, समझें और अनुभव भी करें।

भाई कौन? भाई तो वह होता है जो छह स्थानों पर भाई के साथ रहता है, साथ निभाता है। किसी को रोग हो, व्याधि हो, कष्ट या वेदना ही क्यों न हो, उसकी सेवा में तत्पर रहे वह भाई होता है और जो सेवा से आँखें चुराये, वह भले ही माँ जाया है तो भी वह भाई की श्रेणी में नहीं हो सकता।

उत्तराध्ययनसूत्र के अध्ययन में अनाथीमुनि का अधिकार आता है। आपने कई बार उसे सुना होगा। अनाथीमुनि जब संयम-साधना में नहीं आए थे, उन्हें रोग हो गया। रोग भी ऐसा कि दवा लेने पर, उपचार करवाने पर और पथ्य-परहेज का ध्यान रखने पर भी उनसे नींद कोसों दूर थी। जिसके भी शरीर में रोग हो, उसे अच्छी और गाढ़ी नींद नहीं आ सकती। वेदना के समय भाई की वेदना दूर हो, एतदर्थ प्रयास करने वाला सच्चे अर्थों में भाई होता है। कष्ट-पीड़ा-रोग-वेदना दूर करने में सर्वस्व अर्पण करने को जो तैयार होता है वह सच्चे अर्थों में भाई होता है।

एक माँ के उदर से जायें हैं, एक साथ रहने वाले हैं वे यदि एक-दूसरे की बीमारी के समय सहयोग नहीं करें तो वे कैसे भाई? यहाँ मुझे एक दृष्टान्त याद आ रहा है। आप कहें तो कह दूँ? (सभा में से-हाँ, बाबजी! फरमाओ।)

दो भाई थे। भाई का भाई के साथ प्रेम कैसा होता है, इसे समझने की जरूरत है। भाइयों का प्रेम तो ऐसा होता है मानो तन भले ही दो हों, लेकिन उनका मन एक होता है। वे आपदा में, कष्ट, पीड़ा में एक-दूसरे की मदद करते हैं और हर समय सहयोग करने को तत्पर रहते हैं।

भाई-भाई में प्रेम था। समय के साथ दोनों भाइयों का विवाह होता है। दोनों भाइयों की पत्नियाँ पाणिग्रहण के साथ आ तो गईं, लेकिन एक भाई की पत्नी ने कहा- “मैं इस घर में तभी रहूँगी जब कि आप अपने भाई को अलग कर दें। मैं एक साथ नहीं रह सकती।” उस पत्नी ने पतिदेव को मात्र कहा ही नहीं, अपना बैग तैयार करके रखा कि आप अपने भाई को अलग कर दें, नहीं तो मैं पीहर जाती हूँ।

पत्नी झमकुबाई थी। वह अपने देवर के साथ नहीं रहना चाहती। आखिर में भाई को भाई से अलग होना पड़ा। आप-सब अनुभवी हैं, जानते हैं कि पत्नी की जिद्द के आगे किसी की भी नहीं चलती। दोनों भाई जो वर्षों से साथ रहते थे, पत्नी की जिद्द के कारण मज़बूरी में अलग रहने को बाध्य हुए।

यहाँ मुझे एक ऐसा ही दृष्टान्त याद आ रहा है। एक भाई के यहाँ कोई सामाजिक महोत्सव था। उसने गाँव के अधिकतर लोगों को आमन्त्रित किया, लेकिन पत्नी के कहने पर सगे भाई को निमन्त्रण नहीं भेजा। दूसरे भाई ने सोचा-हम सगे भाई हैं, एक माँ के जाये हैं। फिर, भाई को भाई निमन्त्रित करे यह बात ठीक नहीं लगती। घर के सदस्य को कोई क्यूँ निमन्त्रित करेगा? वह मेरा भाई है। उसने नहीं बुलाया तो कोई बात नहीं, मुझे जीमण में जरूर जाना है। वह गया तो भाई की पत्नी ने

देवरजी को देखते ही कहा-यह बिना बुलाये यहाँ कैसे आया? उसे सब लोगों के बीच धक्के मारकर तो निकालना ठीक नहीं है, ऐसा सोचकर पत्नी भी शान्त हो गई।

गाँव के निमन्त्रितों के लिए भोजन तो तैयार था ही, सभी को जीमने के लिए बैठाया गया। उधर, पत्नी ने अपनी पतिदेव को साफ-साफ कह दिया-यहाँ बिन-बुलाये आ तो गया, पर उसे जिमाया नहीं जाय। पत्नी की बात पति को माननी होती है अतः सबकी थाली में तो मनुहार के साथ परोसगारी होने लगी, लेकिन सगा भाई टुकर-टुकर देखता रहा।

आखिर, भाई ने यह सोचकर कि घर वालों को न तो आमन्त्रित किया जाता है और न ही परोसगारी करके मनुहार से खिलाया ही जाता है। मैं तो भाई हूँ मेरे दिमाग में ऐसे विचार नहीं आने चाहिये थे। फिर उसे कड़ाके की भूख भी लगी थी, इसलिए वह थाली लेकर बैठ गया। आपने शायद ऐसा नज़ारा कभी-न-कभी देखा होगा। नज़ारे की बात तो जाने दें किसी परिवार की शादी का प्रसङ्ग हो और कार्ड में भूल से ही सही, किसी भाई का नाम लिखने से छूट जाय तो.....?

भाई लाख कहे, यह भूल से नाम नहीं छपा। वह गलती मानता है, माफी चाहता है, लेकिन उसका सगा भाई जात-न्यात तक की कार्यवाही करने पर उतारू हो जाता है।

आपने भाई-भाई को थाने चढ़ते देखा होगा? कोर्ट-कचहरी तक भी वे पहुँच जाते हैं। हो सकता है कड़ियों को शायद प्रत्यक्ष में ऐसा अनुभव न भी रहा हो तो भी उन्होंने सुना तो जरूर होगा।

हाँ, तो भाई के जीमण में बिन-बुलाये भाई आ तो गया, वह थाली लेकर पंगत में बैठ भी गया। किसी ने खाली थाली देखी तो उसमें खीचड़ी परोस दी।

पत्नी दूर से देख रही थी कि यह भाई भी कैसा निक्कट्टु है? उसने खीचड़ी भले ही ले ली, परन्तु घी तो किसी भी हालत में नहीं परोसना है। कुछ देर तक घी की

बाट जोहने पर यह सोचकर कि झूठ नहीं जाय, वह लूखी खीचड़ी खाने लगा। यह भाई की भाई के साथ कैसी मजबूरी?

आज भय्या-दूज है। एक भाई दूसरे भाई की बीमारी के समय सहयोग करे। दूसरा यदि भाई में व्यसन का कोई दुर्गुण है तो भाई को व्यसन-मुक्त करके उसके मन में सदगुणों का भाव भरे। मैं सब बातों का विवेचन कर सकूँ इतना तो समय नहीं है, मैं अभी नामोल्लेख करके मात्र परिचय कराना चाहूँगा कि रोग-निवारण में भाई समर्पण-भाव के साथ सेवा करे तो व्यसन से ग्रसित भाई को व्यसन-मुक्त करने का प्रयास भी करे।

भाई कभी आर्थिक संकट से गुज़रता हो तो उसकी सहायता करके प्रतिष्ठा बचाये। आज भी हैं जो भाई की दिलखोल कर मदद करने को तैयार रहते हैं। कभी किसी भाई से राजकीय अपराध हो जाय तो भाई का भाई उस अवस्था में ढाल बनकर खड़ा रहे। भाई को अपराध-मुक्त करवाने में वह सहायता करे।

भाई की मृत्यु हो जाने पर भाई कन्धा देकर उसका अन्तिम संस्कार करवाये।

देखिये, एक होता है माँ जाया भाई और एक होता है-स्वधर्मी भाई। स्वधर्मी भाई के लिए कहा जाता है कि-वह चाहे जहाँ जन्मा हो, चाहे जहाँ पला-बढ़ा हो, लेकिन उसकी भावना जिनवचनों के अनुरूप है तथा

दोनों एक गुरु के मानने वाले हैं वे स्वधर्मी बन्धु हैं, गुरुभ्राता हैं।

आज मुझे कहना तो बहिन-भाई के प्रेम के सन्दर्भ को लेकर था, पर समय की सीमा है अतः बहिन-भाई के प्रेम को संक्षिप्त में रख रहा हूँ।

श्रमण भगवान महावीर का निर्वाण कल्याण हो जाने पर भाई नन्दीवर्धन ने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया। बहिन सुदर्शना को रह-रहकर भाई को पारणक करवाने की बात खयाल में आ रही थी। वह बार-बार निवेदन करती और भाई के प्रेम के प्रति सजग उस बहिन ने नन्दीवर्धन को पारणक करवाया।

भय्या-दूज के दिन जन-जन के मन में यह त्योहार बस गया। आज के दिन हर बहिन अपने भाई को भोजन के लिए आमन्त्रित करती है, जिमाती है और भाई-दूज का पर्व उमङ्ग उल्लास से मनाया जाता है।

आप ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में इस पर्व का अर्थ समझें। अभी लम्बा कहने के बजाय आपके निर्धारित समयावधि पर मैं केवल इतना ही संकेत करके अपनी बात समाप्त करूँ कि यह भाई-दूज का पवित्र पर्व आपको आत्मीयता-अपनत्व के साथ मनाना चाहिए। बहिन का भाई के प्रति प्रेम उत्तरोत्तर पुष्ट हो, इस शुभ भावना के साथ अभी तो इतना ही.....।

नव-वर्ष का उपहार

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

नव-वर्ष उपहार लाया

नई जागृति लेकर आया

झोली भर सद्विचार लाया

‘औ’ कषायों को घटाने आया.....॥1॥

क्रोध को कोसों दूर रखें

मान की बलवती इच्छा को छोड़ें

छल-कपट न आने दें

लोभ के द्वार बन्द कर लें....॥2॥

कषायों को वश में करना है

आत्म गुणों में आगे बढ़ना है

राग-द्वेष को क्षमा से पाटना है

संयम-जीवन का अचूक सार है....॥3॥

प्रेम का बीजारोपण करना है

प्रभु से नाता जोड़ना है

जिनवाणी का श्रवण करना है

मोक्ष-मार्ग में अग्रसर होना है...॥4॥

-ई-123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राजस्थान)

क्या भगवान ने पुण्य को हेय बताया है?

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

पुण्य के विविध आयामों को प्रस्तुत कर पुण्य की उत्कृष्ट प्रकृति तीर्थंकर नामकर्म का वेदन कर कृतकृत्य होने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और पुण्य से प्राप्त पद को सार्थक करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्-

1. आप मार्ग में नहीं रुकने वाली बस से यात्रा कर रहे हैं। आप के पास गर्म कर ठण्डे किए हुए गर्म पानी की केतली (वाटर बैग) है। एक दम्पती आपके पास उसी सीट पर बैठा हुआ था। कुछ गर्मी और ऊष्मा की अधिकता से, उन्हें पानी की प्यास लग रही थी। काफी देर तक सहन करने पर जब सहन शक्ति जबाव देने लगी तो अत्यन्त संकोच के साथ कातर शब्दों में उन्होंने पानी माँगा। आपने स्वाध्याय में सुना था पुण्य हेय है, पर अन्दर के भाव आपको क्या प्रेरणा दे रहे थे? पानी देकर आप संसार तो नहीं बढ़ाओगे न? क्या प्यासे को अचित्त जल पिलाने की भगवान की ना है?
2. आपके कानों में शब्द पड़े-एक बच्ची माँ से पूछ रही थी। उसका भाई बीमार था। घर की हालत बहुत खराब थी। आप टिफिन लेकर पैदल जा ही रहे थे। उस बीमार भाई के पास और भी बच्चे थे। घर टूटा फूटा था। आप उसके सामने निकल रहे थे। कानों में शब्द पड़ने से ठिठक गए। करुण क्रन्दन रुन्धा हुआ स्वर सुना। बच्ची माँ से पूछ रही थी-माँ! ये भाई कब मरेगा? माँ बोली-बेटी ऐसा मत बोलो। फिर भी बच्ची ने पूछा। माँ बोली-बेटा! ऐसा क्यों बोल रही है? माँ! पिताजी मरे तो पड़ोसियों ने तीन दिन भरपेट रोटी खिलाई थी ना।

अब ये मरेगा तो तीन दिन पेट भर के रोटी खाने को तो मिलेगी। आपका मन रोटी देने का तो नहीं होगा ना? अन्न पुण्य हेय जो ठहरा। क्या भूख से पीड़ित को रोटी देने हेतु भगवान की ना है?

3. ट्रेन में चढ़े थे। गाड़ी में भीड़ बहुत ज्यादा थी। पैर रखने की भी जगह नहीं थी। कुली ने रुपये लेकर जैसे-तैसे चढ़ा तो दिया। धीरे-धीरे सीट के आस-पास पहुँचने में 2-3 स्टेशन निकल गए। 40-45 पश्चात् पैर जबाव देने लग गए, खड़ा रहना मुश्किल हो गया। कुछ यात्रियों के उतरने पर सीट वाले कुछ खुले-खुले बैठे थे। आपने कहा भैया! थोड़ा सरक जाओ, थोड़ा-सा किनारा मिल जाए, बैठना जरूरी है। वे बोले नहीं, नहीं, बैठने की जगह देने पर पुण्य होता है, हमें लयन पुण्य नहीं करना। हमें तो मात्र सम्यग्दृष्टि बने रहना है। पुण्य को हेय मानने से ही समकित होती है। आप भीतर में कैसा महसूस कर रहे होंगे? क्या श्रान्त परिव्रजान्त को बैठने का स्थान देने की भगवान की ना है?
4. महामारी फैली हुई थी, अस्पताल पूरे भरे हुए थे, विश्राम आवश्यक था, अस्पताल दानार्थ था। पलंग खाली हुआ, आपको आवश्यकता थी। व्यवस्थापक का परिचय भी था। आपके पास यदा-कदा चर्चा से उसे पता था कि आपने मान रखा है कि दान-पुण्य से शुभ संसार बढ़ता है। पुण्य सोने की बेड़ी है। बेड़ी तो बेड़ी है लोहे की हो या सोने की। आपने उसे कहा भी था। व्यर्थ में लोगों को मुफ्त में क्यों रखते हो? दान करने से भोग ही तो

मिलेंगे। व्यवस्थापक ने आपको शयन देने से मना करते हुए कहा-भैया! तुम्हारा सिद्धान्त मुझे शयन पुण्य से रोक रहा है। उस समय आपको बुरा तो नहीं लगेगा? क्या सोने का स्थान शय्या देने की भगवान की ना है?

5. बच्चा स्कूल नहीं जा सकता। मुश्किल से जोड़ तोड़ कर फीस भरी, पुस्तकें लाये, ड्रेस की व्यवस्था हो ही नहीं पा रही थी। आपके पास विनति लेकर उस बच्चे के पिताजी आए। साहब! ड्रेस की व्यवस्था कीजिए। आपको ब्याज सहित पैसे चुका दूँगा। आपने अनुकम्पा से पैसा दिया। वस्त्र की व्यवस्था करवाई। यह वस्त्र पुण्य आपको लाभ देगा क्या? क्या वस्त्र देने की भगवान की ना है?

आदि-आदि प्रसङ्ग, प्रश्न, परिस्थिति क्या कह रहे हैं? आपके घर की पहली रोटी किसके लिए बनती है?

हमारे वहाँ समयसार पढ़ाया जा रहा है, उसको सुनकर हमारी समझ में आया कि पुण्य हेय है। अब हम सामायिक नहीं करते, नियम पचकखाण नहीं लेते। चौमासे में पहले गुरुओं के दर्शन करने जाते थे, व्याख्यान सुनते थे। इस चौमासे में दर्शन करने नहीं गए। एक भी व्याख्यान नहीं सुना। गोचरी बहराने में पहले उत्साह था, अब कोई उत्साह नहीं रहा। प्रतिक्रमण संवत्सरी को करते थे, पर अब उसमें भी रस नहीं रहा, क्योंकि ये सब देवलोक में ले जाएँगे, हमारा संसार बढ़ायेंगे ही। यह तो आपसे कुछ लगाव था, सो यहाँ आ गये। महाराज! समयसार पढ़ने के बाद हमारी आँख खुल गई। सन्त हैं कहाँ? महाराज आपने कभी पढ़ा है? प्रश्न उपस्थित किया गया हमारे समक्ष, हमने कहा-पुस्तक देखी जरूर, कुछ पन्ने पढ़े, पर हमें सिद्धान्त के अनुरूप नहीं लगी, इसलिए उत्साह नहीं रहा। फिर बहुश्रुत गीतार्थ भगवन्तों ने भी फरमाया श्वेताम्बर, दिगम्बर मान्य कर्म सिद्धान्त, न्याय के ग्रन्थ, तत्त्वार्थ आदि में नयों का जैसा विवेचन हुआ, समयसार में नहीं है। उसमें

जैनमत से भिन्न प्ररूपण हुआ है, शायद पड़ौसी सम्प्रदाय की छाप है उसमें। दर्शनार्थी भाई बोला-नहीं, नहीं महाराज साहब वह तो सीमन्धर स्वामीजी के पास महाविदेह क्षेत्र से प्राप्त हुई वाणी से रचा गया है। वह सीधी अरिहन्त की वाणी है, आपके शास्त्रों में है ही कहाँ सम्यक्त्व की इतनी सुन्दर चर्चा? पुण्य से ही तो हम संसार में अटके हैं। पुण्य हेय लगेगा तभी तो समकित आएगी।

यह तो एक श्रद्धालु की चर्चा है, पर आजकल तो बहुतों की इस प्रकार की बातें सुनने को मिल रही हैं। बताया गया कानजी स्वामी स्थानकवासी सन्त थे। उन्होंने आगम पढ़े थे, पर सन्तुष्टि नहीं हुई। समयसार पढ़कर भावविभोर हो गये। मुँहपति छोड़कर त्यागी के वेश में रहे। आप भी कब तक ये भेष का बोझ ढोते रहोगे? ओघे पातरों का मेरु जितना ढेर आपको नहीं तिरा पाएगा।

हमने निवेदन किया-हमने दिगम्बर समाज का प्राचीनतम ग्रन्थ कषाय पाहुड, चूर्णिसूत्रों के साथ पूरा पढ़ा और और भी वाणी पढ़ी। हमें तो आचार्य विद्यासागरजी के प्रवचन, मूकमाटी में पुण्य की उपादेयता स्पष्ट दिखती है।

अच्छा, एक बात तो बताओ सीमन्धर स्वामी जी ने दीक्षा के पहले एक वर्ष तक क्या किया? वह बोले वर्षीदान दिया। हमने पूछा-कितना दिया? वह बोले-प्रतिदिन 1 करोड़ 8 लाख सौनैया। हमने कहा-360 दिन के वर्ष में कुल कितना हुआ? 388 करोड़ 80 लाख सौनैया।

क्या तीर्थंकर जैसा प्रतिदिन इतना दान देने वाला कोई और दिखता है? बोले-ध्यान में नहीं। उन्हें दीक्षा से पहले दान देने की आवश्यकता क्या थी?

अनेक तीर्थंकर जन्म से क्षायिक सम्यग्दृष्टि होते हैं, शेष क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि वाले तो होते ही हैं। आपका हमारा हमें पता हो या नहीं उनका तो पक्का पता है। दान को, पुण्य को हेय मानते तो वह देते ही क्यों? केवल सीमन्धर स्वामी ने दिया हो, ऐसी बात नहीं,

किन्तु प्रत्येक तीर्थंकर को दीक्षा पहले देना ही होता है, वे स्वेच्छा से देते ही हैं। जो स्वयं उसका आचरण करते हों, वे दूसरों को मना करेंगे, ऐसा नहीं हो सकता। स्याद्वाद मञ्जरी के 31वें श्लोक की व्याख्या में पढ़ा-कषच्छेदतापलक्षणपरीक्षात्रयविशुद्धत्वेन फलप्राप्तौ न विसंवदतीत्येवंशीलमविसंवादि। तथाभूतं वचन-मुपदेशो यस्यासावविसंवादिवचनः। अव्यभिचारि-वागित्यर्थः।

अर्थ-भगवान के वचन कष, छेद और ताप रूप परीक्षाओं से विशुद्ध हैं, अतएव फल की प्राप्ति में उनके वचनों में कोई विरोध नहीं होने से उनके वचन निर्दोष हैं।

शिविर व्याख्यान पुस्तक में बहुश्रुत समर्थमलजी म.सा. के व्याख्यान में पढ़ा-सोने की परीक्षा तीन प्रकार से होती है-कष, छेद और ताप। उसी प्रकार सच्चे धर्म, सच्चे धर्म प्रवर्तक की पहचान भी तीन रूप से होती है-

1. ज्ञानवाद रूपी धर्मकष-स्याद्वाद मञ्जरी में आया-

पाणवहाईआणं पावट्टाणाण जो उ पडिसेहो।

झाणज्झयणाईणं जो य विही एस धम्मकसो॥1॥

अर्थात् प्राणवध आदि पाप स्थानों के त्याग और ध्यान, अध्ययन आदि की जानकारी को धर्मकष कहते हैं।

2. क्रियावाद रूपी छेद-स्याद्वाद मञ्जरी में आया-

वज्झाणट्टाणेणं जेण ण बाहिज्जए तयं गियमा।

संभवइ य परिसुद्धं सो पुण धम्मम्मि छेउत्ति॥2॥

अर्थात् जिन बाह्य क्रियाओं से धर्म में बाधा न आती हो और जिससे निर्मलता की वृद्धि हो, उसे छेद कहते हैं। उस आसेवना शिक्षा का यथार्थ आसेवन आचरण छेद है।

3. तत्त्ववाद रूपी ताप-स्याद्वाद मञ्जरी जीवाइभाववाओ बंधाइपसाहगो इहं तावो। एएहिं परिसुद्धो धम्मो धम्मत्तणमुवेइ॥3॥

अर्थात् यह ताप जीवादि भाव, जीव-अजीव आदि भाव (नवतत्त्व का परिचय) एवं बन्ध आदि के प्रसाधक हैं। इन तीन के द्वारा परिशुद्ध धर्म धर्मत्व को प्राप्त होता है। ताप में लोक, अलोक का स्वरूप, षड्रव्य, नवतत्त्व आदि का कथन होता है एवं सत्य तत्त्व का अनुभव होता है।

हमें बात याद आ गई। गुरुजी ने कक्षा में बच्चों को पढ़ाया बैंगन बहुत खराब सब्जी है। बैंगन गन्दे पानी में पैदा होता है, उसमें कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, वायु विकार बढ़ाता है, उससे निकलने वाली वायु बहुत बदबूदार होती है, इसलिए बैंगन कभी नहीं खाना चाहिए। स्कूल की छुट्टी हुई, गुरुजी बाजार से निकले। सब्जी मण्डी आई बच्चे देखकर हैरान गुरुजी बैंगन खरीद रहे थे। बच्चों ने हिम्मत जुटा कर पूछ लिया। गुरुजी आपने कक्षा में अभी पढ़ाया था कि बैंगन बहुत खराब है। गुरुजी बोले वो तो पोथी के बैंगन थे, ये सब्जी मण्डी के बैंगन हैं। इसलिए ये कहावत चल पड़ी-गुरुजी बैंगन खाए, दूजे को अक्कल सिखावे।

ज्ञान तो सही था, पर आचरण नहीं हो पाया। भैया, दान का निषेध करे, पुण्य को हेय बताए भगवान और स्वयं एक दो दिन नहीं एक वर्ष लगातार एक-एक प्रहर तक प्रतिदिन 1 करोड़ 8 लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करे क्या हमारे वीतराग देव ऐसे हो सकते हैं? यदि वे क्षायिक सम्यग्दृष्टि भी दान को उपादेय मानते हैं, दान देते हैं, पुण्य अर्जित करते हैं, तो हमारा भी पक्का विश्वास हो जाता है कि पुण्य उपादेय ही है, पुण्य अच्छा ही है। पृच्छा की उस भाई से-आप जब किसी का प्रवचन या स्वाध्याय सुनने जाते हो तो सुनाने वालों को पहुँचते ही क्या करते हो? वो बोले-हाथ जोड़ते हैं, अभिवादन करते हैं, जय जिनेन्द्र सा बोलते हैं (श्रावक हो तो), साधु हो तो वन्दना करते हैं, हमारे भीतर उनके प्रति अहोभाव उभरता है, कृतज्ञता आती है। हमने उस भाई को टोका तुमने फिर गलती कर दी। नमस्कार पुण्य है, तुम्हें पुण्य हेय लग रहा है, कष और छेद में ही

अनुत्तीर्ण हो गये न भैया। चलो थोड़ा और आगे बढ़ें—वह जब उसे बाँचते हैं तब उनके वचन शुभ होते हैं या अशुभ? महाराज! आप तो आज गजब की परीक्षा ले रहे हो। वह वचन तो शुभ ही रहेंगे। फिर पूछा—शुभ योग क्या है? बोले पुण्य है। बाँचने वाले पुण्य को हेय कह रहे हैं और स्वयं पुण्य कर रहे हैं।

कष और छेद में भी भेद हो गया, मालूम पड़ गया सोना नकली है तब फिर ताप की आवश्यकता ही क्या? ज्ञान और क्रिया से ही पोल खुल गई तब तत्त्व तक वे पहुँचेंगे ही कैसे? और तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् कहा है, पर यहाँ तो तत्त्व की श्रद्धा हो ही नहीं पाएगी। थोड़ी बहुत दिमागी कसरत से शान्ति का अहसास भले ही हो जाय, सम्यग्दर्शन सम्भव नहीं है।

स्याद्वाद मञ्जरी आदि न्याय के ग्रन्थ स्पष्ट करते हैं—प्रभु यथार्थवादी होते हैं। हमें तो भगवान से बढ़िया, तीर्थंकर भगवान से बढ़िया इस पृथ्वी तल पर श्रेष्ठ आचरण वाला प्रतीत नहीं होता। उन्होंने ही फरमाया—पुण्य की 42 प्रकृतियों में उत्कृष्ट प्रकृति तीर्थंकर नाम कर्म की है। और उसका बन्ध सम्यग्दृष्टि को ही हो सकता है। उसके उदय में वे देशना फरमाते हैं, उस देशना में उस पुण्य को कैसे हेय कह सकते हैं?

सम्यग्दृष्टि मनुष्य और तिर्यञ्च वैमानिक देव की कम से कम 1 पत्योपम की आयु बाँधते हैं। पुण्य से इसलिए घबराते हो कि देवलोक में जाओगे और जो पुण्य को पाकर घबराते हैं तो बताओ क्या कुन्दकुन्दाचार्य वे (समयसार के रचयिता) मोक्ष में गए? नहीं महाराज सा मोक्ष का दरवाजा उनके समय बन्द हो चुका था। तो आपके हिसाब से वे कहाँ गए होंगे? वे बोले—देवलोक में। फिर घोटाला कर दिया, देवलोक में ले जाने को संसार बढ़ाने वाला मानकर आप पुण्य को हेय कह रहे हो, सम्यग्दर्शन से भी देव बने तब वह भी हेय ठहरेगा, उनका आचरण भी हेय ठहरेगा आपके सिद्धान्त में।

देवलोक में जाते हैं और पुण्य को हेय कहते हैं?

पढ़ो, जरा, जिनेन्द्र वर्णी जी का कर्म रहस्य पढ़ो। विद्यासागरजी की विद्यावाणी पढ़ो। आगम छोड़

दिगम्बर ग्रन्थ पढ़ने हैं तो षट्खंडागम पढ़ो, कषाय पाहुड़ पढ़ो। कहाँ बताया है पुण्य को हेय, कब छूटता है पुण्य? पुण्य बढ़े बिना मिथ्यात्व छूट ही नहीं सकता। अच्छी भावना, अच्छे वचन, अच्छा कार्य ही मुक्ति का मार्ग है, स्वभाव है। अन्न देने, पानी पिलाने, बैठने, सोने का स्थान देने, वस्त्र देने की मर्यादा में श्रावक व साधु में भेद हो सकता है। साधु, साध्वी अपनी मर्यादा में ही दे सकते हैं। पर अच्छे वचन, अच्छे कर्म, अच्छे भाव और नमस्कार ये चारों पुण्य श्रावक एवं साधु दोनों के स्तर पर पूर्ण उपादेय है। दोनों प्रतिदिन करते हैं।

अस्तु, भैया! पुण्य को उपादेय माने बिना, पुण्य को बढ़ाये बिना सम्यग्दर्शन नहीं, संयम नहीं, क्षपक श्रेणी नहीं, मुक्ति नहीं।

कष, छेद और ताप से सोने की वास्तविकता परखी जाती है। कसौटी पर कसने से सोने की पहचान होती है, उसी प्रकार बन्धन से छुटकारे के मार्ग का सामान्य कथन, श्रुत चारित्र धर्म का निरूपण, ग्रहणा, आसेवना शिक्षा का विवेचन बताता है कि सिद्धान्त सही है अथवा नहीं। यम-नियम आदि का स्वरूप सबसे पहली परीक्षा है। कसौटी के पश्चात् दूसरा उपाय छेद करके फिर परीक्षा की जाती है। जिस मार्ग का प्ररूपण किया वह केवल कहने मात्र को ही है, उसका आचरण यथावत् किया जाता है अथवा नहीं। केवल जानकारी मात्र से ही मुक्ति मानी जाती है क्या? जानकारी जीवन बनती है या नहीं, यह क्रियावाद दूसरा परीक्षण है। ज्ञानवाद और क्रियावाद के पश्चात् ताप से सोने को गलाकर देखने के समान, तीसरा सबसे महत्वपूर्ण परीक्षण तत्त्ववाद है। यद्यपि दोनों परीक्षाओं से तीसरा ताप द्वारा परीक्षण श्रम साध्य है, समय भी अधिक लगता है, पर सर्वाधिक प्रामाणिक है। आचरण के नियम व्यवस्थित हैं, आचरण की व्यवस्था अच्छी है, इतने से ही सत्य धर्म, सत्य सिद्धान्तों का पूरा परीक्षण, पूरा निर्णय सम्भव नहीं है। निरूपित तत्त्वों का निरूपण यथार्थ है अथवा नहीं, इसी से सिद्धान्तों की परिपूर्णता निर्णीत होती है। उसी निर्णय से परीक्षण पूर्ण होता है।

हम थोड़ा देखने का प्रयास करें। जो पुण्य को हेय कहकर त्यागने की चर्चा करते हैं, वे प्रायः भक्ति के किसी-न-किसी रूप को स्वीकार करते ही हैं। सम्यग्दर्शन की चर्चा करने वाले अनेक तीर्थों की यात्रा करते हैं, जिन पूजा के साथ कानजी स्वामी या श्रीमद् राजचन्द्रजी की प्रतिमा पूजते हैं, भजन कीर्तन करते हैं। इन सबमें वे कौनसा योग मानते हैं? अशुभ योग मानकर, पाप मानकर ये कार्य करते हैं या शुभ योग मानकर कार्य करते हैं? यदि उनकी मान्यता में इन प्रवृत्तियों में शुभ योग है और वे स्वयं इन प्रवृत्तियों को करते हैं, अनेकों को करवाते भी हैं तो फिर कैसे कह सकते हैं कि शुभ योग, पुण्य तत्त्व हेय हैं, क्योंकि स्वयं शुभ योग में रत रहते हैं।

दूसरी क्रिया की कसौटी पर (कष और छेद) वे उत्तीर्ण नहीं हो पाते। इस मत के अनेकानेक अनुयायी प्रतिदिन भक्तामर का पाठ बड़ी श्रद्धा से करते हैं, नियमित समय पर नियमित समय में पूरा करते हैं। मधुर राग समवेत स्वर में भावविभोर होकर करते हैं। काया की प्रवृत्ति अच्छी, वचन का उच्चारण अच्छा, मन के भाव अच्छे उस समय कौनसा योग होगा? शुभ काया, शुभ वचन, शुभ मन तीनों प्रशस्त हैं। पाप का नाश, पुण्य के विकास का क्षण है। भक्तामर स्तोत्र के 7वें श्लोक में बोलते हैं—

त्वत् संस्तवेन भवसन्तति सन्निबद्धं।

पापं क्षणात् क्षय मुपैति शरीरभाजाम्॥

अर्थात् हे भगवन्! आपके सम्यक् स्तवन से भवसन्तति में सञ्चित शरीरधारियों के पाप कर्म क्षण भर में क्षय को प्राप्त कर लेते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

भगवान की भक्ति रूपी पुण्य से पापों का क्षय होता है। भक्तामर स्तोत्र के नवमें श्लोक में संकथा से दुःखों के दूर होने का उल्लेख है। यहाँ भी संकथा-वचन का शुभ योग उपादेय बताया है। 12वें श्लोक में कहा—

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं।

अर्थात् शान्तराग, अतिशय सुन्दर परमाणुओं

द्वारा भगवान का शरीर निर्मित करने का उल्लेख है, जो स्पष्ट कर रहा है—

(क) तेरहवें गुणस्थान वाले भगवान शरीरधारी हैं।

(ख) पूर्वबद्ध तीर्थंकर नामकर्म के साथ बँधने वाली शरीर आदि प्रकृतियाँ इतनी शुभ बँधी कि गर्भ में प्रथम आहार में ही श्रेष्ठ परमाणु प्राप्त हुए जिनसे सुन्दरतम शरीर बना।

(ग) सम्यक्त्व के साथ उत्कृष्ट रसायन से धार्मिक कृत्य करने के समय भोग की प्रवृत्ति से जो आस्रव हो रहा था, वह इतना शुभ था कि पुण्य का अच्छे अनुभाग के साथ सञ्चय हुआ परिणाम स्वरूप उसका उदय होने से आज सुन्दर शरीर एवं बाहरी सामग्री मिली।

(घ) पहले भव में जीव के अच्छे परिणामों से संवर-निर्जरा के साथ पुण्य भी अच्छा था। जिसका आने वाले पुद्गलों पर प्रभाव पड़ा। शुभ प्रकृतियों का अच्छे अनुभाग से बन्ध हुआ अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को प्रभावित करता है।

(ङ) कर्म बन्ध प्रत्येक जीव का पृथक्-पृथक् है। इतने अच्छे परिणाम के फलस्वरूप तीर्थंकर के जीव को शरीर रूप से श्रेष्ठ परमाणुओं का संयोग मिलता है। उत्तम संहनन, संस्थान मिलता है। इन्हीं उत्तम के सहकार से और परिपूर्ण वीर्य द्वारा घाति कर्मों का क्षय कर अरिहन्त-भाव को प्रकट कर तत्त्वों का प्ररूपण करते हैं।

अपायापागम अतिशय, ज्ञानातिशय, पूजातिशय और वचनातिशय रूप चार विशिष्ट अतिशय धारी की वाणी ही सत्य है, तथ्य है, यथार्थ है। इनमें पिछले दोनों अतिशय पूर्व पुण्य का फल है, प्रभाव है। उस पुण्यशाली को किया गया नमस्कार, नमस्कार पुण्य है उनका कीर्तन करना पुण्य है, उनका संस्तवन करना पुण्य है तो उनकी संकथा करना भी पुण्य है। भाव बढ़ेंगे तो संवर निर्जरा भी होगी तब पुण्य भी विशेष-विशेष होगा।

पुण्य बढ़ेगा पाप घटेगा तो भय मिटेंगे, संकट दूर

होंगे। 1. मत्त हाथी 2. सिंह 3. दावानल 4. सर्प 5. युद्ध 6. समुद्र 7. जलोदर 8. कारावास आदि आठ आपदाओं से रक्षण की चर्चा जहाँ आई, वहीं भाग्योदय से लक्ष्मी प्राप्त का उल्लेख भी, परमार्थ में मोक्ष लक्ष्मी तक की प्राप्ति का जिक्र किया गया।

भक्तामर भक्तिपूर्वक प्रतिदिन भावपूर्वक पढ़ते हैं, अपने अपने आराध्य उन उपदेशकों की भक्ति भी करते हैं, कतिपय पूजा भी करते हैं। क्रिया से पुण्य उपादेय सिद्ध करते हुए अपने जीवन से शुभ योग का पर्चा जाहिर करते हैं, पर जब तत्त्व की बात आती है तो उसे हेय कहते हैं। आचार्य हेमचन्द्रजी रचित

अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका के 32वें श्लोक की व्याख्या में बहुश्रुत पूज्य श्री समर्थमलजी म.सा. ने भी फरमाया-कष, छेद, ताप अर्थात् अध्यात्म की भाषा में ज्ञानवाद, क्रियावाद और तत्त्ववाद। इन तीनों से पुण्य की उपादेयता सिद्ध होती है।

भक्ति, विनय, बहुमान सङ्ग,
प्रभु वीर रमता चलूँ
श्रुत का पठन, चिन्तन गहन,
उपसर्ग परीषह सहता चलूँ
वृत्तियाँ हों कम, मिट जाए गम,
मुक्ति का साधन और कहाँ।

ऐसा नया साल हो

श्री त्रिलोकचन्द जैन

गहरी अन्धेरी रात के बाद, सुहानी भोर आती है
ज्येष्ठ की तपिश के बाद, घटाएँ घनघोर छाती हैं
'यह भी नहीं रहेगा' का भाव,
दुःख का दुःख भुलाता है
तूफानी हवाओं में भी, विश्वास का दीप जलाता है
प्रारब्ध का अन्त भी है
पतझड़ के बाद बसन्त भी है
निराशा की इति है और आशा का आगाज है
आज अगर हो जाता कल तो,
आगामी कल भी तो बनता आज है
जब हर गमी के बाद हर्ष है
निम्नता के बाद उत्कर्ष है
बीती यादों का बीता साल,
तो नई उम्मीदों से भरा ये नव वर्ष है
नव वर्ष के हर मास में
श्रेष्ठ जीने के प्रयास में प्रयत्न चलता रहे
हर दिन खुशी का पुष्प खिलता रहे
जनवरी से शिक्षा जागृति की,
वर्ष भर सजग रहूँगा।

फरवरी से पाकर शिक्षा, फना दोषों को करूँगा
शिक्षा रहे मार्च की, क्षमा से वैर-विरोध समाप्ति की
अप्रैल से शिक्षा आर्जव की, कुटिलता के त्याग की
सकारात्मकता की रहे दृष्टि सही,
मई से शिक्षा पाऊँ यही
जून का अर्थ होता समय,
हर काम समय पर करूँ सही
शिक्षा लब्ध जुलाई से, न्याय-नीति की कमाई से
उदीयमान वर्धमान अगस्त, भोग लालसा होवे अस्त
सत्य-अहिंसा बस जाये अन्तर,
ऐसी शिक्षा मिले सितम्बर
विजयी बनूँ संघर्ष में, ऐसा अक्टूबर इस वर्ष में
नवम्बर शिक्षा सादगी अपनाऊँ,
प्रभु बन्दगी में खो जाऊँ
दिसम्बर से सुकून और तसल्ली मिले,
अन्त में भी उत्साह-उमङ्ग खिले
ऐसे श्रेष्ठ आचरण से सम्पन्न, मेरा नया साल हो
मैं हूँ सबका, सब हैं मेरे, भावना बेमिसाल हो
जीवन के सभी वर्षों में, यह वर्ष मेरा कमाल हो
दोष विरमण, गुण आकर्षण, ऐसा नया साल हो
-37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

श्रेष्ठ संघ में श्रेष्ठ जीवन जीने का सुअवसर

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने 13 नवदीक्षित सन्त-सतियों की बड़ी दीक्षा के अवसर पर 15 दिसम्बर, 2021 को श्री ओसवाल लोडे साजन संघ विकास केन्द्र (कोट), पीपाड़ शहर में जो प्रवचन फरमाया, उसका आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। -सम्पादक

जिनके विमल प्रताप से, हुआ हिताहित ज्ञान।

भक्ति युक्त गुरुदेव का, धरूँ हृदय में ध्यान।।

अजीव पर अन्तिम विजय मिलाकर जीव के शाश्वत सुखों में लवलीन, अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों को तथा वीतराग भगवन्तों के शासन को दीप्तिमान करने वाले आचार्य भगवन्तों को बन्दन-नमन!

दुनिया के देशों में प्रायः दो ही पार्टियों की प्रधानता है। आज भी बड़े-बड़े देशों में प्रमुख रूप से दो ही पार्टियों का शासन चलता है। हमारे यहाँ भी या तो मोहराज है या फिर जिनराज। इन दो नामों से संसार चलता है। कहीं पर जीव का राज है तो कहीं पर अजीव का। जिनराज अर्थात् मोह पर, अजीव पर जीव की विजय। संक्षेप रूप से विवेचना-व्याख्या सुन्दर-से-सुन्दर शब्दों में की जा सकती है।

आज हमें शरीर और आत्मा के स्वरूप को समझना है। एक है प्रवृत्ति तो दूसरी है निवृत्ति। प्रवृत्ति शरीर की विवशता है, तो निवृत्ति आत्मा की आस्था है। इस गाथा में छह आवश्यक चर्चाओं का उल्लेख है-

जयं चरे जयं चिद्रे , जयमासे जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

अभी आपने सुना है कि संयम-साधकों को समिति-गुप्ति के माध्यम से निर्दोष प्रवृत्ति की ओर गति करनी है। यह छेदोपस्थापनीय चारित्र भवरोग के निराकरण का पथ प्रशस्त कर रहा है। महाव्रत रूपी औषधि, समिति रूपी पथ्य और गुप्ति रूपी परहेज का पालन कर भवरोग को समाप्त किया जा सकता है। आपकी हर प्रवृत्ति जागृतिपूर्वक हो।

अभी इन नवदीक्षित संयम-साधकों को पाँच महाव्रत और छठ्ठा रात्रि-भोजन त्याग तथा छह जीवनिकाय का मूल-अर्थ-भावार्थ सुनाया गया। अयतना से जो भी प्रवृत्ति होती है, उसका कोई लाभ मिलने वाला नहीं है, अपितु हानि ही होती है। पाप का आस्रव एवं बन्ध होता है, जिसका दारुण विपाक जीव को भोगना पड़ता है। हमें गाथाओं के विवेचन के लिए निर्देश मिला है। पहले यतना, फिर सभी जीवों में अपनत्व और तब कल्याण की चर्चा होती है। इस प्रकार उपादेय, हेय, श्रेय एवं प्रेय की भी चर्चा की जाती है। आप जानते हैं कि संवर और उसके परिणाम में बढ़ते-बढ़ते मोक्ष की उपलब्धि होती है। आपने सुना है कि इस जीव ने अनन्त-अनन्त बार ओघे-पातरे लिए हैं, सुनने में तो और भी कई बातें आई हैं।

संयम-साधकों को छह जीवनिकाय का स्वरूप तो समझना है ही, उसे आत्मसात् भी करना है। इसमें उत्कृष्टता आ जाय तो संघ की जाहोजलाली होने में विलम्ब नहीं हो सकता। इसके लिए जरूरी है कि हमारे जो भी बड़े हैं, वे छोटों पर वात्सल्यभाव रखें और जो छोटे हैं, वे बड़ों के प्रति श्रद्धा-भक्ति के साथ विनयभाव रखें।

आचार्यश्री हस्ती के शासन की बात मैं क्या कहूँ, आचार्य श्री हस्ती पट्टधर आचार्य श्री हीरा जब दीक्षित हुए थे, उस समय तक मोबाइल नहीं आया था। आज घर-घर में ही नहीं, हर हाथ में मोबाइल है। आप अपने-आप में टटोलकर तो देखें कि आप कितने अंशों में जैन हैं?

भावी आचार्यश्री सोलह साल गुरु हस्ती के श्री चरणों में रहे, लगभग बत्तीस साल से आप गुरु हीरा की सेवा में समर्पित हैं। 30 जनवरी, 1999 को जोधपुर में आपने पहली बार महासती श्री लीलाकँवरजी महाराज को, जो विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी महाराज की निश्रा में है, उन्हें दीक्षित किया था। आज आपश्री ने इन तेरह मुमुक्षुजनों को छेदोपस्थापनीय-चारित्र में आरूढ़ करवाया है, यह अच्छी शुरुआत है। आप बोलते भी हैं- 'चारित्र तेरह कहिया ओ जिनवर।'

छेदोपस्थापनीय-चारित्र में संयम-साधक को संस्कारित करके विभाव से स्वभाव में आने की बात कही जाती है। अभी इन संयम-साधकों को भावी आचार्यश्री ने यही समझाया है कि आप सब जीवों के प्रति आत्मीयभाव रखें और उनकी रक्षा-सुरक्षा करें। आपको द्रव्य-शुद्धि के साथ मन की विशुद्धि में भी आगे बढ़ना है। इसके लिए आप बुराई किसी की करें नहीं, भलाई का फल चाहें नहीं और भलाई करके अभिमान भी नहीं करें। सुधार की यही प्रक्रिया है। व्यक्ति-व्यक्ति सम्भल जाय तो यहीं से मुक्ति का रास्ता शुरू होता है।

आपने सुना है कि नयसार के जीव का महावीर बनने तक अधिकतर समय एकेन्द्रिय में बीता। आपको सब जीवों के प्रति आत्मीयता बनाए रखनी है। आपको याद रखना है कि बाहर का सुख भीतर के सुख के सामने नगण्य है। गुरु हस्ती ने अपने भजन में ठीक ही कहा है- श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप। निराबाध सुख में झूलूँ मैं, सद्-चिद् आनन्द रूप। मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया-धूप।

आत्महित के लिए सदैव जागरूक रहें, आत्मार्थी बनें, आराधक बनें। भगवतीसूत्र का 25वाँ अध्ययन कहता है-जिस उत्साह से आपने घर-बार छोड़ा है, आप गुरु हस्ती-गुरु हीरा की तरह साधना में जागरूकता रखें। जागरूकता की पहली शर्त है-दोष लगे ही नहीं, और यदि दोष लग भी जाय, तो तुरन्त शुद्धि करनी है। भावी आचार्य श्री के श्रीमुख से

दशवैकालिक सूत्र के चारों अध्ययनों को सुना है-समझा है, उसे आपको जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करना है। साधना की उत्कृष्टता से आपको पालना करनी है। याद रखें- सुनना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सुनकर अन्तर की अनुभूति से उसकी पालना हो।

आपको यह भी ध्यान में लेना है कि सातावेदनीय तो गुरु के प्रभाव से हो सकती है, पर साता केवल त्याग के लिए हो। आप में क्रोध, मान, माया, लोभ जब तक रहेंगे तब तक पाप छूटेंगे नहीं। पाप छोड़ने के लिए दोषों को हटाना ही होगा।

गुरु हस्ती ने अपने जीवन में कभी कुछ भी नहीं छिपाया। आपके जीवन में भी यही भाव रहना चाहिए। आपकी हर प्रवृत्ति में आत्म-रक्षण का भाव रहे। आपको छह काय के जीवों की विराधना से बचना है।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आप पर अनुपम कृपा बरसी है। आपको श्रेष्ठ संघ में श्रेष्ठ जीवन जीने का सुअवसर मिला है, इसलिए आप-सबकी जागृति निरन्तर बनी रहे और बढ़े भी। भावी आचार्य श्री द्वारा आपको छेदोपस्थापनीय-चारित्र में आरूढ़ करवाना, एक अच्छी शुरुआत है। आप सब श्रद्धा-विनय-भक्ति के साथ आत्म-साधना करेंगे, तो आपकी भावना उत्तरोत्तर आगे बढ़ती जायेगी।

आपके-हमारे कान दो हैं और मुँह एक है, अतः हमें कम-से-कम बोलकर ज्यादा-से-ज्यादा सुनना है। आप पाँच साल पूरी तरह अध्ययन में लग जायें। आपको आन्तरिक योग्यता विकसित करने के लिए एक बार आराधक बनना है। आप-सब भावनापूर्वक सुन तो रहे हैं, सुनने के साथ श्रद्धा-भक्ति बढ़ायें और एक बार आराधक बन जायें, तो आपका सुनना सार्थक होगा।

आचार्य भगवन्त गुरु हीरा दीर्घायु हों और भावी आचार्यश्री के प्रति आप-सब श्रद्धा-भक्ति का परिचय दें, जिससे कि भावी आचार्यश्री कुशलतापूर्वक शासन-सञ्चालन करते रहें, यही मंगल मनीषा है।



आचार्यश्री हस्ती की तीन विशेषताएँ

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. द्वारा 27 जनवरी, 2021 को राता उपासरा, पीपाड़ शहर में फरमाये गए प्रवचन में आचार्यश्री हस्ती की क्षमता-समता-ममता जैसी प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित किया गया है। प्रवचन का संकलन श्री सुमतिचन्दजी मेहता, पीपाड़ ने किया और उसे व्यवस्थित जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

जिज्ञासु उपासकों!

गुणगान गाता हुआ जीव गुणी बनता है। हमारा लक्ष्य भी गुणवान बनने का होना चाहिए। हम प्रभु से प्रार्थना करें-हे प्रभो! मैं भी आप जैसा गुणी बन जाऊँ। गुणों को आचरण में ढालने वाला गुणी बनने का पुरुषार्थ करता है।

आज हम एक ऐसे ही गुणवान् और पुरुषार्थी युगद्रष्टा, युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के अनेकानेक गुणों में से तीन प्रमुख विशेषताओं पर समय के साथ चर्चा करने का भाव रखते हैं।

महापुरुषों के लिए हम गुणगान करें। जीव जहाँ जन्म धारण करता है उस स्थान या उस क्षेत्र को पावन बना देता है। जहाँ वह मरण प्राप्त करता है तो उस स्थान को पावन-पवित्र बना देता है। जन्म और मरण दोनों क्षेत्रों को पावन-प्रशस्त करने वाले महापुरुष की क्षमता का हम अंकन करें तो पायेंगे कि उस दिव्य-दिवाकर ने छोटी-सी आयु में जहाँ नादानी रहती है, उस आयु में पाँच महाव्रतों को स्वीकार किया। आप उस महापुरुष की क्षमता का मूल्यांकन तो करें कि जिस आयु में वस्त्र नहीं सम्भलते, उस योगिराज ने चारित्र-धर्म को बखूबी सम्भाला।

आप संसार में देखते हैं कि छोटी आयु में जब पिता का साया उठ जाय तो एक दुकान का भार ठीक तरह से नहीं सम्भलता तो गुरु हस्ती ने छोटी आयु में चतुर्विध संघ का भार कैसे उठा लिया? उस महामनीषी

ने मात्र साढ़े उन्नीस वर्ष में चतुर्विध संघ का भार उठाया ही नहीं, अपितु संघ के उत्तरदायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन भी किया। गुरु हस्ती चतुर्विध संघ के बोझ से दबे नहीं, अपितु अपने पुरुषार्थ से और अपनी सूझबूझ से संघ को ऊँचाइयों पर पहुँचाया। छोटी-सी आयु में अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहकर कठिनाइयों में अपनी क्षमता-योग्यता-पात्रता को बढ़ाया।

उस युगपुरुष की क्षमता की बात के लिए आप सबने देखा और अनुभव किया है कि उस दिव्य द्रष्टा ने हर स्थिति और परिस्थिति में मजबूती बनाकर रखी। गुरु हस्ती को अपनी साधना पर अटूट विश्वास था। आप यह तो भली-भाँति जानते ही हैं कि क्षमता और साधना के बल पर ही साधक आगे बढ़ता है।

एक उदाहरण से उस महापुरुष की क्षमता को आप जरा समझें। उस महापुरुष ने अपना चातुर्मास सवाईमाधोपुर में किया। चातुर्मासार्थ पहुँचने पर गुरु हस्ती ने देखा कि जैन समाज पर्युषण-पर्व के दिनों में रोठ की रूढ़-परम्परा वर्षों से उस क्षेत्र में मना रहा है। परिवार के हर सदस्य के नाम से एक बड़ा-सा रोठ बनाया जाता और उस रोठ को सब मिलकर पूजते और फिर खाते थे। वह दिन पर्युषण के बीच में आता। मान्यतानुसार लोग रोठ-पूजने को प्राथमिकता देते और जैन समाज भी धर्मस्थान में धर्म-साधना को गौण करता। रोठ बनाना, रोठ पूजना, रोठ खाना मानो एक त्योहार हो गया। फिर, उस दिन बहन-बेटियों को और रिश्तदारों के साथ घर-परिवार के सभी सदस्य रोठ को

त्योहार के रूप में मनाते।

गुरु हस्ती ने अनुभव किया कि कल तक व्याख्यान में असाधारण जन-समुदाय जिनवाणी सुन रहा था। रोठ के दिन गिने-चुने भाई-बहिन ही प्रवचन-सभा में आए और जिनवाणी सुन रहे हैं।

दीर्घद्रष्टा गुरु हस्ती ने जन-समुदाय से अनुरोध किया कि आप इस रूढ़-परम्परा को छोड़ दें। कदाचित् आप इस परम्परा को नहीं छोड़ सकते, तो कम-से-कम पर्युषण-पर्व के दिनों में तो रोठ-प्रथा नहीं हो। आप पहले या बाद में रोठ-प्रथा रख सकते हैं।

गुरु हस्ती के आग्रह-अनुरोध पर कुछ लोगों ने यहाँ तक कह दिया कि हम रोठ नहीं करें तो हमारा अनिष्ट हो जाएगा।

गुरु हस्ती ने उस स्थिति में भी अपनी क्षमता का परिचय दिया और पूरे विश्वास के साथ कहा कि आप चिन्ता नहीं करें। आपके बच्चों का बाल भी बाँका नहीं होगा, हस्ती यहाँ बैठा है।

गुरुदेव की वाणी में ओज था तो जबरदस्त विश्वास भी था। ऐसी अटूट क्षमता का परिचय देने वाले गुरु हस्ती के प्रति आज पोरवाल-पल्लीवाल क्षेत्र में आबाल-वृद्ध जैन-जैनेतर जन-समुदाय में बड़ी भारी श्रद्धा-भक्ति है।

गुरु हस्ती की क्षमता की तरह ही गुरु हस्ती की समता का भाव भी एक प्रमुख विशेषता रही। प्रत्येक परिस्थिति में समता का आदर्श बनाए रखना गुरु हस्ती की विशेषता कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सिंहपोल जब खोली गई तो उसका विरोध हुआ। लोगों ने विरोध तो किया ही, सिंहपोल में प्रवेश में बाधा डालने पर भी लोग तत्पर हो गये। गुरु हस्ती को विश्वास था कि आज जो विरोध कर रहे हैं, वे भी एक दिन झुकेंगे। उनकी सोच में बदलाव आयेगा। एक संघनायक जिनके सैकड़ों-हजारों भक्त गुरु के इशारे पर मरने-मारने को तैयार हो जाते, पर गुरुदेव ने समता-भाव से कहा-

यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत सम जान।

शीष दियां जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

भारतीय संस्कृति में संघ के आचार्य को तीर्थङ्कर-सम मानने वाले लोग कब रुकते? पर गुरुदेव की समता देखकर भक्तों की भावना में भी सम्यक् बदलाव आया। गुरु हस्ती ने कहा-संघ आपमति से नहीं, आगम-मति से चलता है। गुरुदेव उस समय समता नहीं रखते, तो उत्तेजना में विरोध वैमनस्य में बदल जाता।

गुरुदेव ने उस स्थिति में कहा कि रत्नसंघ का एक भी सदस्य उत्तेजना में नहीं आये। उत्तेजना में ईंट का जवाब पत्थर से दे सकते थे, परन्तु गुरुदेव के समता-भाव से विरोधियों को भी सदबुद्धि आ गई। गुरुदेव समता भाव से शत्रु तक को जीतने की कला में माहिर थे। समता के कारण ही तो गुरु हस्ती ने घायल और उत्तेजित नाग को झोली में लेकर वन में छोड़ा।

भारतीय संस्कृति में संयम-साधकों के मन में सहज प्रसन्नता रहती है। सन्त-जीवन में अप्रसन्नता नहीं होती। प्रसन्नता कभी बनावटी भी नहीं रहती। सन्त हर प्राणी के लिए दया और करुणा का भाव रखता है। दुःखी को देखते ही सन्त का रोम-रोम कम्पित हो जाता है। सन्त की वाणी अमृतमय होती है और सन्त के जीवन में परोपकारिता का भी भाव रहता है। गुरु हस्ती का हर स्थिति-परिस्थिति में समताभाव बना रहा।

आचार्यश्री हस्ती में समता का भाव था तो आत्मीयता के भावों में कोई कमी नहीं थी। गुरुदेव की नज़र किसी व्यसनी पर पड़ती तो वे मन-ही-मन सोचते कि यह बेचारा दुर्गति का मेहमान नहीं बन जाय, इसलिए समझा-बुझाकर व्यसन छुड़ाने का गुरु हस्ती पूरा-पूरा प्रयास करते। गुरुदेव व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन-निर्माता थे। वे हर आगत को जीवन-सुधार के लिए कुछ-न-कुछ व्रत-नियम में संकल्पबद्ध करवाते।

एक माँ अपनी सन्तान का कभी अहित नहीं सोचती, वैसे ही गुरु हस्ती सबका हित सोचते। उनमें माँ की तरह वात्सल्य था। सब के प्रति आत्मीयता का भाव-वात्सल्य का भाव उस महापुरुष में कूट-कूटकर भरा था। समता के साथ आत्मीयता होने से पूज्य गुरुदेव

सन्त-सतियाँजी महाराज को समाचारी का सम्यक् आराधन करने की बात कहते। ज्ञानारान-तपाराधन-धर्मारधन में भी उनका आत्मीयभाव स्पष्ट झलकता था। आहार-विहार-निहार सभी में आत्मीयभाव के कारण वे सबके आराध्य थे।

ममता और मोह दोनों अलग हैं। ममता में वात्सल्यभाव होता है तो मोह में अपना स्वार्थ प्रमुख होता है। गुरु हस्ती की क्षमता थी, तो समताभाव भी गज़ब का था और आत्मीयता का भाव भी एक प्रमुख विशेषता के रूप में परिलक्षित होता रहा।

आचार्यश्री हस्ती में अनेकानेक गुण थे, सबको कहने के लिए समय चाहिये। समय का तकाज़ा है अतः अभी पूज्यश्री की क्षमता, समता और आत्मीयता के कुछ अंश रखे गये हैं। आप गुणी बनकर गुणग्रहण का भाव रखें तो आपकी श्रद्धा-भक्ति और समर्पण से आप आचार्य भगवन्त के जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम सब अध्यात्म-योगी के गुणों को जीवन में चरितार्थ करें, इसी मंगल मनीषा के साथ.....।।



आलोकित पथ

डॉ. रमेश 'मयंक'

धरती की जगमगाहट को देखकर
देवलोक के देवता रखते हैं
मानव बनने की अभिलाषा
तो फिर-
मैं देवता बनकर क्या करूँगा ?
मुझे धरती का प्राणी
मानव ही बना रहने दो।
आज लोभी मानव के पास
जो कुछ है
छोड़ना नहीं चाहता
और अधिक बढ़ाना
आकांक्षा-तृष्णा का विस्तार
देख पाना,
क्रोध, मान, माया का जुड़ जाना नियति है
मानव जीवन की गति है, पग-पग पर विकृति है।
क्रोध आएगा
प्रीति का नाशक बन जाएगा
मान रहेगा तो
विनय के गुण को मिटाएगा
माया मित्रता का करेगी नाश

फिर-कितने हितैषी रहेंगे आपके पास ?
लोभ जड़ है, कामना-तृष्णा के विस्तार की
मिटाकर मानवता की हरितिमा
शुष्क रेतीले जीवन जैसे
मरुस्थल के प्रसार की
बोलो देवताओं! मानव बनने के लिए आ रहे हो
तो आओ लोभ लिप्टों को याद दिलाओ
लेकिन मुझे-
नीति से कमाने
रीति से खर्च करने
और-प्रीति से रहने के
अपने जीवन से मत डिगाओ
मैं नहीं चाहता विचलित होना
विपथ गामी कहलाना
मैंने तो गुरु से संयम ज्ञान पाया है
उसे मेरे पास ही रहने देना
शेष संसार तुम्हारा है
तुम देवता रहो या बनो मानव
मुझे मेरा आलोकित पथ ही
बहुत-बहुत प्यारा है।

-बी 8, मीर नगर, चित्तौड़गढ़-312001
(राजस्थान)

पानी, पुण्यवानी और जिनवाणी

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री अविनाशमुनि जी म.सा. द्वारा, श्रीमती मंजूजी कोठारी के फार्म हाउस, अजमेर रोड़ पर 19 दिसम्बर, 2021 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्रद्धालु श्रावक श्री अशोक कुमारजी जैन 'हरसाना वाले', जयपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

सत्य का साक्षात्कार कर, सत्य अवस्था में रहने वाले अरिहंत भगवन्त, सिद्ध भगवन्त, उसी सत्य के रास्ते में आगे बढ़ने वाले पूज्य आचार्य, उपाध्याय भगवन्त एवं समस्त चारित्र आत्माओं के चरणों में कोटिदाः नमन, वन्दन।

धर्म प्रेमी बन्धुओं!

ज्ञानी साधक बहुत सुन्दर-सी बात बताते हुए कहते हैं कि व्यक्ति के जीवन में तीन चीजों की बहुत महिमा रही हुई है। तीन चीजों में से एक चीज की भी कमी रह जाती है तो जीवन को सुचारु रूप से नहीं चला पाते हैं। वे तीन चीजें कौनसी हैं-1. जल (पानी), 2. पुण्यवानी और 3. जिनवाणी।

1. व्यक्ति के जीवन में पानी की आवश्यकता रही हुई है। व्यवहार जगत् में नारा भी लगाया जाता है जल है तो जीवन है। जल है, तो कल है। आपका जीवन भी जल पर ही आधारित रहा हुआ है। विज्ञान भी बता रहा है कि व्यक्ति के शरीर में 70 प्रतिशत जल की मात्रा होती है और 30 प्रतिशत में ठोस वस्तु की मात्रा होती है। जल का होना बहुत आवश्यक है, अनिवार्य है। जिनशासन में जल की महिमा बताई है। यदि आपके पास पानी ज्यादा आ जाता है, तो उसका अपव्यय नहीं करना चाहिये। पहली चीज है, वो जल अर्थात् पानी।

2. व्यक्ति के जीवन में पुण्यवानी की बहुत आवश्यकता रही हुई है। कारण कि व्यक्ति के जीवन में पुण्यवानी टिकी हुई रहती है, तो जहाँ कहीं जाता है वहाँ समाधान ही समाधान मिलता जाता है। पुण्यवानी चली जाती है, तो आगम कहता है-चक्रवर्ती जो 6 खण्ड का मालिक (स्वामी) होता है, जिस चक्रवर्ती की सेवा में 25 हजार देवता दिन-रात रहते हैं, चक्रवर्ती की विशाल

सेना का वर्णन किया जाए तो 84 लाख हाथी, 84 लाख घोड़े, 84 लाख रथ, 96 करोड़ पैदल सैनिक। चक्रवर्ती की इतनी बड़ी विशाल सेना होती है। नौ निधि के स्वामी चक्रवर्ती की यदि पुण्यवानी में कमी आ जाती है तो एक छोटा-सा असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय जीव (असालिया) जो बिना मन वाला होता है, अन्तर्मुहूर्त में इतना शरीर बढ़ा लेता है, जितनी चक्रवर्ती की सेना होती है। वह भूमि के अन्दर की जो मिट्टी रहती है उसको पानी के रूप में परिवर्तित कर देता है। इस प्रकार वह जीव चक्रवर्ती की सेना को 48 मिनट में खाकर समाप्त कर देता है, यदि पुण्यवानी में कमी आ जाती है तो।

व्यक्ति के कार्यों में विघ्न आ जाते हैं, जब पुण्यवानी कम हो जाती है तब पानी तो घर-घर मिल जाता है पुण्यवानी घर-घर में नहीं मिलती है। पानी तो संख्यात काल ही रहता है, लेकिन पुण्यवानी तो असंख्यातकाल तक जीव के साथ चलती है। पुण्यवानी रहे तो देवी-देवता भी सहयोग करते हैं। संगम का जीव शालिभद्र बना, उसके देवलोक से 33 पेटियाँ उतरती थीं।

3. तीसरा है जिनवाणी। जिनवाणी की बहुत आवश्यकता होती है। जो जिनवाणी के साथ जुड़ता है वह अधिक भवभ्रमण नहीं करता। जिनवाणी के द्वारा संसार सागर को पार किया जाता है। जिनवाणी तारने वाली है। यह पुण्यवानी से भी बढ़कर है, क्योंकि जिनवाणी से पुण्यवानी भी बढ़ती है। अतः हमें जिनवाणी से जुड़ना है। जिनवाणी ही हमारे जीवन को बदलने, कर्मों का क्षय करने तथा आत्मा को शुद्ध बनाने में सहायक है।

-निजीसचिव, प्रधानमुख्य वनसंरक्षक, जयपुर

गुरुहीराष्टकस्तोत्रम्

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. द्वारा 10 नवम्बर, 2021 को गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 59वें दीक्षा दिवस पर गोटन में स्व-रचित रचना जनपरिषद् में सुनायी गई, जिसका संकलन श्री हंसराजजी चौपड़ा, गोटन ने किया है।

-सम्पादक

वसन्ततिलकावृत्तम् (राग)

उदाहरण-1. भक्तामरप्रणतमौलिमणि.....

2. श्री रत्नहस्तिगणनूतनज्ञानसूर्यम्.....

भक्तद्विरेफसुखधाममुखारविन्दम्

हस्तस्रजा विलसितं च करारविन्दम्।

यान्तं सुसंयमपथं चरणारविन्दम्,

हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥1॥

भक्त रूपी भ्रमरों के लिए जिनका मुखकमल सुख का धाम है, जिनका हस्तकमल हमेशा करमाला से विलास पाता है तथा जिनके चरणकमल सतत संयम पथ पर प्रयाण करते हैं, ऐसे श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को मैं भक्ति से प्रणाम करता हूँ।

सान्द्रप्रसादसदनं वदनं वदान्यम्,

वातप्रलोलितविलम्बितकर्णकेशम्।

तेजोविराजितललाटमिवार्कबिम्बम्,

हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥2॥

जिस उदार महापुरुष का मुख मानो गहरी प्रसन्नता का ही घर बना हुआ है तथा जिनके कानों के लटकते हुए लम्बे बाल हवा में हिल रहे हैं और जिनका ललाट सूर्य बिम्ब की तरह प्रखर तेज से दीप्त है, ऐसे पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को मैं भक्ति से प्रणाम करता हूँ।

यद्दर्शनामृतरसं सरसं निपीय,

भक्त्या भरा गततृषा न भवन्ति भक्ताः।

तृप्तः कलानिधिकरात् किमु चक्रवाकाः ?

हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥3॥

अहो! इन पूज्य के दर्शन रूपी सरस अमृतरस का पान करके भी भक्ति से भरे लोग कभी तृप्त नहीं हो पाते, क्या कभी चातकपक्षी चन्द्रकिरणों से तृप्त हो पाते हैं, मैं ऐसे पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को मैं भक्ति से प्रणिपात करता हूँ।

कारुण्यसौम्यसमताक्षमतादयस्ते,

पूता गुणाः सुरुचिराः शुभकण्ठलग्नाः।

सर्वे चिरागतवयस्यवदेव यस्य,

हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥4॥

जैसे बहुत समय बाद लौटा हुआ मित्र अपने मित्र के गले लग जाता है, वैसे ही करुणा, सौम्यता, समता, क्षमा आदि रुचिर पवित्र गुण जिनके कण्ठ लग गये हैं (गले लग गए हैं), ऐसे पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चरणों में मैं प्रणत हूँ।

कोपानलं शमयितुं नववारिवाहम्,

मानद्रुमं विखनितुं गजराजकल्पम्।

मायोरगीखगपतिं जितलोभयक्षम्,

हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥5॥

जो क्रोध रूपी अग्नि को बुझाने के लिए नये बादलों की तरह हैं, मान रूपी वृक्ष को उखाड़ने के लिए महाहस्तिराज के समान हैं तथा माया रूपी सर्पिणी को खत्म करने में पक्षिराज गरुड़ सदृश हैं और जिन्होंने लोभ रूपी यक्ष को जीत लिया है, ऐसे पूज्य गुरुराज श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को मैं भक्ति से प्रणाम करता हूँ।

श्राद्धा यदीयवचनं परिपालयन्ति,

व्याख्याततत्त्वमखिलं हृदि भावयन्ति।
संशुद्धबुद्धिहृदयं सहसा श्रयन्ति,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥6॥

जिनके वचनों का सभी श्रावक जन पालन करते हैं और कहे गए तत्त्व को सदा हृदय में सजोकर रख लेते हैं तथा विशुद्ध बुद्धि और हृदय को धारण करते हैं, ऐसे पूज्य हीराचन्द्रजी म.सा. को हम प्रणाम करते हैं।

लोके जडा गलितगात्रमदप्रसक्ताः,
तेषां विशोधनपरं नवजीवनाभम्।
सञ्चालितं व्यसनमुक्तिमहाभियानम्,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥7॥

दुनिया में जो भी लोग मदिरा आदि व्यसनों में रचे-पचे हैं और जिनका शरीर भी नष्ट प्रायः हो चुका है। उनको विशुद्ध बनाने वाला और नया जीवन देने

वाला 'व्यसनमुक्तिमहाभियान' जिन्होंने चलाया है, मैं उन पूज्य गुरुदेव के चरणों में भक्ति से प्रणाम करता हूँ।

यस्य प्रसादनिकराच्च दयाप्रभावात्,
अस्मादृशा अपि जडाः प्रभवो भवन्ति।
कर्तुं सुखं ललितकाव्यसुगद्यपद्यम्,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणतोऽस्मि भक्त्या॥8॥

जिस महापुरुष के प्रसाद और कृपा प्रभाव से हम जैसे जड़ लोग भी लालित्यपूर्ण अच्छे गद्य-पद्यमय काव्य को रचने में समर्थ हो जाते हैं, ऐसे पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को मैं भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ। गुरुहीराष्टकं भव्यं, ये पठन्ति जनाः सदा। प्राप्नुवन्ति कृपादृष्टिं, प्रार्थितार्थफलप्रदाम्॥

जो भी लोग इस गुरु हीराष्टक को पढ़ेंगे वे हमेशा सभी इच्छित फल देने वाली उनकी कृपा दृष्टि को प्राप्त करेंगे।

अनमोल ज़िन्दगी है, इसको संवारना है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

अनमोल ज़िन्दगी है, इसको संवारना है,
दे धर्म का उजाला, इसको निखारना है।
हालात इस जमाने के, बिगड़े हुए हैं,
भटक न जाए जीवन, इसको सम्भालना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥1॥

मुश्किलों से पाया है, नरतन का चोला,
जाना अकेला है और आया अकेला।
अच्छे काम कर ले, इस ज़िन्दगी में,
आत्मा का कचरा, हमको बुहारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥2॥

साधना-आराधना में, मन को लगाएँ,
सबको अपना जग में, मीत बनाएँ।

न किसी से वैर हो, न किसी से नफ़रत,
प्यार और प्रीति को, हमें निहारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥3॥

भोगवादी जीवन से, बचते ही रहना,
त्याग-तपस्या है, जीवन का गहना।
विषयों की लालसा में, कभी मत फँसना,
मर्यादा की सौरभ, हमें उभारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥4॥

सरलता और सादगी का, रहे अपना जीवन,
देव, गुरु, धर्म पर हो, अपना समर्पण।
कर्मों को काट करके, पाएँ मोक्ष मञ्जिल,
बस जीवन में अपने, यही चाहना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥5॥

-जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,
स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

क्या रात्रि-भोजन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है?

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

भोजन क्यों?

जीवन के लिए हवा एवं पानी के बाद में भोजन सबसे आवश्यक तत्व है। भोजन से शरीर के विकास तथा संचालन हेतु आवश्यक ऊर्जा मिलती है। अतः यह आवश्यक है कि भोजन करते समय इन उद्देश्यों की पूर्ति का विशेष खयाल रखा जाये। यदि इन बातों का ध्यान न रखा गया तो जो भोजन स्वास्थ्यवर्धक होने की बजाय स्वास्थ्य भक्षक बन जाता है। उसमें कौन-कौनसे से पौष्टिक तत्व कितनी-कितनी मात्रा में होने चाहिए? क्या खाना चाहिए? और क्या नहीं खाना चाहिए? इन बातों के सम्बन्ध में चिकित्सक और आज का पढ़ा लिखा मानव ज्ञान अवश्य रखता है और जन साधारण के लिए विपुल साहित्य भी उपलब्ध है। फिर मानव भी स्वाद के वशीभूत होकर उन नियमों का पूर्ण पालन नहीं करता। जितना जीवन के लिए भोजन आवश्यक है, उससे भी अधिक उसका पाचन आवश्यक है। अतः हमें उन सब कारणों से बचना चाहिए जो भोजन का पाचन करने में बाधक हैं।

प्रकृति में एक निश्चित नियमानुसार दिन-रात होते हैं। व्यक्ति की दिनचर्या और रात्रिचर्या का अलग-अलग विधान होता है। शरीर के अलग-अलग अङ्ग और अवयव भी उसी के अनुसार अधिक सक्रिय और कम सक्रिय होते हैं। अतः भोजन कैसा किया जाए? कितना किया जाए? कहाँ किया जाए? कब किया जाए? आदि की जानकारी भी आवश्यक है ताकि जो भोजन हम करते हैं उसका अधिकाधिक लाभ मिल सके। इन तथ्यों की उपेक्षा से अच्छे से अच्छा पौष्टिक भोजन भी लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानिकारक बन जाता है।

स्वास्थ्य के लिए विभिन्न नियमों का पालन

आवश्यक है। किसी एक नियम की अवहेलना भी हमारे लिये अहितकारी हो सकती है। एक बूँद ज़हर मनो दूध को अपेय बना देता है। मरने के लिए सौ साँपों के काटने की आवश्यकता नहीं होती। एक साँप का काटा भी मर जाता है। छोटी-सी आग की चिंगारी ढेर सारे घास को जलाने की क्षमता रखती है। आज चारों तरफ प्रदूषण के परिणामस्वरूप हमारे लिये शुद्ध वायु, शुद्ध पानी भी उपलब्ध नहीं है। अत्यधिक रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं के अन्धाधुन्ध उपयोग तथा कृत्रिम, मिलावटी, बनावटी और घर से बाहर खाने की बढ़ती प्रवृत्तियों के कारण शुद्ध खाद्य पदार्थ और भोजन उपलब्धि भी दुर्लभ होती जा रही है। ऐसे वातावरण में व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के बारे में अधिक सजग और सतर्क होने की आवश्यकता है। जो नियम स्वयं से सम्बन्धित है, उन नियमों का पालन आवश्यक है। अन्यथा छोटी-छोटी भूलें उसकी सुख-शान्ति में दखल डाल सकती हैं और रोगग्रस्त जीवन जीने के लिए बाध्य कर सकती हैं।

कीटाणुओं का भोजन पर प्रभाव

सूर्यास्त के पश्चात् बहुत से सूक्ष्म जीव पैदा हो जाते हैं। सूर्य का प्रकाश इन कीटाणुओं को पैदा होने से रोकता है। सूर्य के ताप में अनेक विषैले कीटाणु निष्क्रिय बन जाते हैं, जो सूर्यास्त के बाद पुनः सक्रिय होने लगते हैं। प्रायः हम अनुभव करते हैं कि दिन में 1,000 वाट के बल्ब के पास भी सूक्ष्म जीव नहीं आते, जबकि रात में थोड़ी-सी रोशनी में भी बल्ब के आसपास मच्छर मण्डराने लगते हैं। ये जीव आहार की गन्ध के कारण भोज्य पदार्थों की तरफ आकर्षित होते हैं। वहीं दूसरी तरफ भोजन में भी अनेक सूक्ष्म बेक्टीरिया उत्पन्न हो जाते हैं। इनका रंग भोजन के रंग जैसा ही होने से कृत्रिम

प्रकाश में हम इन्हें नहीं देख पाते हैं। कृत्रिम प्रकाश में उजाला तो है, परन्तु वह सूर्य की बराबरी नहीं कर सकता। पूर्ण शाकाहारियों के लिये यह भोजन निश्चित रूप से त्याज्य होता है। रात्रि में तमस (अन्धेरे) के कारण वैसे भी भोजन तामसिक बन जाता है तथा ऐसा भोजन करने से व्यक्ति की मानवीय प्रवृत्तियाँ बदलने लगती हैं। शरीर और मन में विकार उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति स्वार्थी बनने लगता है। ध्यान, आत्मचिन्तन और स्वाध्याय में बाधा उत्पन्न होने लगती है। रात्रि-भोजन से स्मरण शक्ति कमजोर होने लगती है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पूर्णरूपेण विकसित नहीं कर पाता।

रात्रि-भोजन और निद्रा

भोजन और शयन के बीच कम से कम चार घण्टे का अन्तर आवश्यक होता है। निद्रा के समय तक भोजन का पूरा पाचन न हो तो भोजन का वह अंश अमाशय में ही पड़ा रहता है और पाचन सम्बन्धी अनेक रोगों को पैदा करने का कारण बनता है। अंग्रेजी में एक कहावत है—Early to Bed & Early to rise is the way to be Healthy, Wealthy & Wise अर्थात् जल्दी सोने तथा जल्दी उठने से व्यक्ति स्वस्थ, सम्पन्न, समृद्धिशाली और बुद्धिमान होता है। इस दृष्टि से भी जब व्यक्ति देर से भोजन करेगा तो निद्रा भी देर से लेगा और उठेगा भी देरी से। ऐसा व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाता। आज मधुमेह (डायबिटीज) जैसे अनेक रोगों को पैदा करने में रात्रि-भोजन भी एक मुख्य कारण होता है। इससे पेट बढ़ने लगता है तथा पाचन सम्बन्धी रोग भी पैदा होते हैं। जो चिन्तन और चिन्ता का विषय है। प्रकृति में सूर्योदय और सूर्यास्त प्रतिदिन निश्चित समय पर होता है, जो हमारी दिनचर्या और रात्रिचर्या के बीच स्पष्ट भेद रेखा दर्शाता है। यदि इसके विपरीत आचरण किया गया तो स्वास्थ्य के लिए अहितकर होने की सम्भावना बढ़ती है।

सूर्य के ताप का शरीर पर प्रभाव

सूर्य की रोशनी से शरीर में रोग-प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। इसी कारण प्रायः अधिकांश रोगों का प्रकोप

रात में बढ़ने लगता है। प्रत्येक बीमारी भी अपेक्षाकृत रात में ज्यादा कष्टदायक होती है। इसका मुख्य कारण रात में सूर्य की गर्मी का अभाव होता है।

जिस प्रकार चूल्हे पर रखी हुई वस्तु को जब अग्नि की गर्मी मिलती है तभी वह पकती है, उसी प्रकार हमारे आमाशय में हम जो डालते हैं वह भी पेट की उष्णता (जठराग्नि) के कारण ही पचता है। इसी कारण जिसकी जठराग्नि प्रदीप्त होती है उसकी पाचन शक्ति अच्छी मानी जाती है। भोजन करते समय उन सब नियमों का पालन करने का प्रयास किया जाना चाहिये, जिनसे जब तक भोजन का पूर्ण पाचन न हो, पाचन शक्ति मन्द न पड़े। भोजन में शक्ति का माप कैलोरी की उष्णता पर आधारित होता है। पेट में नाभि को कमल की उपमा दी गई है। कमल को भारतीय संस्कृति में निष्कामता, निर्मलता और निर्लिप्तता का प्रतीक कहा गया है। कमल और सूर्य का सम्बन्ध लोक विख्यात है। कमल सूर्योदय के साथ खिलते हैं और सूर्यास्त के साथ उनकी सक्रियता में अन्तर आ जाता है। हमारे शरीर में वे सभी स्थल जिन्हें कमल की उपमा दी गई है जैसे मुख कमल, हृदय कमल, नाभि कमल आदि सूर्योदय के साथ सक्रिय होते हैं और सूर्यास्त के साथ उनकी सक्रियता में अन्तर आ जाता है। विशेष रूप से नाभि कमल का पाचन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। सूर्यास्त के पश्चात् इसके सक्रिय न होने से रात्रि भोजन का पाचन बराबर नहीं होता। इसीलिये तो कहा गया है—“सुबह का खाना खुद खाओ, दोपहर का दूसरों को खिलाओ और रात्रि का खाना दुश्मन को खिलाओ।” तात्पर्य यह है कि रात्रि में आहार का पाचन बराबर नहीं होता।

आज भोजन शास्त्रियों एवं वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग से सिद्ध हो चुका है कि सूर्य की रोशनी में सौर ऊर्जा के प्रभाव से भोजन में पौष्टिकता तथा विटामिनों की मात्रा बढ़ जाती है, क्योंकि उस समय कीटाणुओं की उपस्थिति नगण्य होती है जो सायंकाल होते-होते बढ़ने लगते हैं।

दिन में प्राण वायु की अधिकता

सूर्य के प्रकाश में वृक्ष एवं पेड़-पौधे ऑक्सीजन रूपी प्राणवायु छोड़ते हैं। अतः वायुमण्डल में रात्रि की अपेक्षा दिन में ऑक्सीजन की मात्रा अपेक्षाकृत ज्यादा रहती है। जिससे पाचन सरलता से होता है। इसके विपरीत रात में वृक्ष ऑक्सीजन ग्रहण कर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। ऐसे वातावरण में श्वास लेने एवं भोजन से आरोग्य बिगड़ता है।

पशु-पक्षियों द्वारा भोजन की उपेक्षा

अधिकांश पशु-पक्षी जिन्हें दिन में पेट भरकर खाने को मिल जाता है वे रात में प्रायः नहीं खाते। भले ही आज मनुष्य की संगति से उसके अन्दर कुछ अंशों में इस सम्बन्ध में अपवाद हो सकते हैं। विशेष रूप से शाकाहारी पशु तो आज भी यथासम्भव इस नियम का पालन करते हैं। इससे स्पष्ट है कि रात्रि-भोजन प्रकृति के अनुरूप नहीं है। परन्तु अपने आपको सभ्य, चिन्तनशील, बुद्धिमान समझने का अहं भरने वाला मानव उसके दुष्प्रभावों के गूढ़ रहस्यों का चिन्तन करने के बजाय विपरीत आचरण करे इससे ज्यादा क्या अज्ञान हो सकता है।

रात्रि-भोजन एवं पारिवारिक व्यवस्था

मनुष्य जीवन का मुख्य ध्येय नर से नारायण बनना है, जिसके लिए आत्मचिन्तन, ध्यान, स्वाध्याय के लिए उचित समय एवं स्थान आवश्यक है। शान्त और एकान्त वातावरण आवश्यक है। जिस घर में रात्रि-भोजन नहीं होता वहाँ महिलाओं को भोजनशाला से जल्दी छुट्टी मिल जाती है। ऐसे परिवारों को जहाँ दिन में भोजन बन जाता है, जैन सन्तों की भिक्षा का भी सहज लाभ मिल सकता है। ऐसे परिवारजनों को सामाजिक कार्यों के लिए भी अधिक समय मिल सकता है। परिवार के सदस्यों के साथ आमोद-प्रमोद हेतु रात्रि में आसानी से सभी भागीदार हो सकते हैं। जल्दी खाने एवं जल्दी सोने से प्रातः जल्दी उठना सरल होता है जो आत्म-साधना एवं स्वाध्याय के लिए सर्वोत्तम समय है।

रात्रि-भोजन के सम्बन्ध में विभिन्न मत

रात्रि-भोजन में जो हिंसा होती है उसके कारण जप, तप और तीर्थ यात्रा आदि सब व्यर्थ हो जाते हैं। पद्म पुराण-प्रभाव खण्ड में रात्रि-भोजन को नरक का प्रथम द्वार बताया है। चत्वारि नरकद्वाराणि, प्रथमं रात्रि भोजनम्। चरक संहिता के अनुसार रात्रि-भोजन दूषित और अम्लीभूत होने से बहुत क्षति पहुँचाता है।

मार्कण्ड पुराण में तो सूर्यास्त के बाद अन्न को मांस और जल को रक्त जैसा हो जाने की बात बहुत स्पष्ट शब्दों में वर्णित है। जिसके भाव निम्न हैं- अस्तंगते, दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते। अन्नं मांससमं प्रोक्तं मार्कण्डेयमहर्षिणा। गीता के सतरहवें अध्ययन के दसवें श्लोक में कहा गया है- यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्। उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्। अर्थात् रात में रखा या बनाया हुआ तथा नीरस, दुर्गन्ध युक्त तथा किसी जीव जन्तु के द्वारा स्पर्श किया हुआ और अपवित्र आहार तामस मनुष्यों को ही प्रिय होता है।

यजुर्वेद के अनुसार रात्रि-भोजन को राक्षसों का भोजन बतलाया गया है। योगवशिष्ट पूर्वार्ध श्लोक 108, योग शास्त्र प्र. 2 आदि में भी रात्रि-भोजन न करने का स्पष्ट निर्देश दिया गया है।

जो बेटा माँ-बाप की माला फेरे, धोक दे, प्रणाम करे, परन्तु उनकी आज्ञा का पालन न करे तो हम ऐसे पुत्र को क्या कहेंगे? उसी प्रकार हम धर्म ग्रन्थों एवं विज्ञान की बातें करें और अप्राकृतिक जीवन पद्धति अपनाकर स्वस्थ रहना चाहें तो असम्भव है।

रात्रि-भोजन क्यों ?

रात्रि-भोजन के लिए एक तरफ जहाँ हमारी असजगता एवं उससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी का अभाव जिम्मेदार होता है तो दूसरी तरफ हमारी सामाजिक और सरकारी व्यवस्थाएँ भी उतनी ही जिम्मेदार होती हैं। सामूहिक भोजन का समय निर्धारित करते समय तथा कार्यालयों में भोजनावकाश का समय

निर्धारित करते समय स्वास्थ्य के अनुकूल समय पर भोजन करने के समय की पूर्ण उपेक्षा की गयी है। जैसी व्यवस्था होगी, उसी के अनुरूप जनसाधारण अपने आपको ढालता है। जब बच्चे प्रातःकाल जल्दी पाठशाला जायेंगे और दोपहर बाद घर पहुँचेंगे तो पारिवारिक सदस्य समय पर कैसे भोजन कर सकते हैं? दो भोजन के बीच कम से कम 7-8 घण्टों का अन्तर चाहिये। अतः जब सुबह खाना देर से खायेंगे तो रात का खाना स्वतः देरी से हो जायेगा, क्योंकि बिना भूख खाना भी तो उचित नहीं। इस प्रकार आज हमारे लम्ब और डिनर रोगों के मञ्च बन गये हैं।

दूसरी तरफ आज नाश्ते का प्रचलन बढ़ गया है, जो भोजन के सही समय पर हमारी भूख को समाप्त कर देता है। अतः जिन लोगों को समय पर खाने की अनुकूलता है, वे भी समय पर नहीं खाते।

तीसरी बात व्यक्ति का भोजन के बारे में जितना संयम रहना चाहिये उतना नहीं है। इसलिये जब चाहा, जो चाहा, जहाँ चाहा, जैसा चाहा पेट में डाल देता है, जिससे सौरमण्डल की दृष्टि से पाचन के लिए जो सर्वश्रेष्ठ समय है उस समय उनको भूख ही नहीं लगती।

चौथी बात रात्रि के प्रकाश के बारे में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में हमारी मिथ्या धारणाएँ हैं। जिनके फलस्वरूप रात्रि भोजन को आधुनिकता का

प्रतीक समझने की भूल हो रही है। सोते हुए को जगाया जा सकता है, परन्तु जो जागृत व्यक्ति निद्रा का बहाना कर सोये उसको जगाना बहुत मुश्किल है।

स्वास्थ्य की प्राथमिकताएँ

जीवन में प्रथम सुख नीरोगी काया है। उसके अभाव में सारे सुख अधूरे हैं, अपर्याप्त हैं। कारण कि परिस्थितियाँ, समस्याएँ, प्रतिकूलताएँ चाहे जो हों व्यक्ति को अपने को स्वस्थ रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी तथा उसके लिये पूर्णरूपेण सजग और सतर्क रहना होगा। जो व्यक्ति कपड़े पहनकर आभूषण पहनता है उसके शरीर की शोभा बढ़ जाती है और उसे हम बुद्धिमान कहते हैं। परन्तु जो कपड़े खोलकर गहने पहनता है, उसको दुनिया पागल कहती है। आज हमारी स्थिति भी लगभग वैसी ही है, क्योंकि हमारी जीवनचर्या और लक्ष्य में पैसा प्रमुख है, स्वास्थ्य गौण है जो कटु सत्य है।

रात्रिभोजन के दुष्प्रभावों को समझने के कारण आज अमेरिका में 70 प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति रात्रिभोजन को पसन्द नहीं करते। वे सूर्यास्त के पहले भोजन करने लगे हैं, तो हमारे लिए ऐसा करना क्यों सम्भव नहीं है?

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-
342003(राज.)

प्रार्थना का महत्त्व

कमला सिंघवी

प्रार्थना का अभिप्राय है-हे परमात्मन्! जिस मार्ग पर चलकर आप समस्त दुःखों से मुक्त बने हो, वह मुझे भी प्राप्त हो जाए। प्रार्थना रूपी प्रभु भक्ति से शक्ति का जागरण होता है। भगवद् आचरण में ही अनन्त सुख और अमिट सम्पदाओं का निवास हुआ करता है। वीतराग भगवान के भजन से भक्त को उसी प्रकार लाभ मिलता है जिस प्रकार सूर्य की किरणों के सेवन से तथा वायु के सेवन से रोगी को लाभ होता है।

जो भक्त शान्तचित्त से वीतराग की प्रार्थना करते हैं, उन्हें जीवन में अपूर्व लाभ की प्राप्ति होती है। वीतराग के विशुद्ध-आत्मस्वरूप का चिन्तन भक्त के अन्तःकरण में समाधिभाव उत्पन्न करता है। उस समाधिभाव से आत्मा को अलौकिक शान्ति की प्राप्ति होती है। एकाग्रता के साथ प्रार्थना करने से साधक को ऐसी अनुभूति होती है कि संसार का सारा सुख, संसार की सारी सम्पदा, प्रार्थना रूपी भक्ति के सामने तुच्छ है। साधक को प्रार्थना से मोक्ष साध्य की प्राप्ति होती है।

-भड़गाँव (महाराष्ट्र)

Ethical Solution Through *Śrāvakācāra* (12 Vrats) For Business Excellence

Dr. H. Kushal Chand

(Continue from the last issue)

A man can become more human only by faith and by controlling his lower self or passions. A person who has complete control of the lower self is *Jina*. Jains believe *Jina* is suitable for following, instead of just worship. By ignoring the creator-God, Jainism entrusts a man towards his environment and establishes that the man is the cause of every event around him, with him or for him or by him. Hence, if the man leads a right life, it reflects in his environment; if the man leads a polluted life, again it reflects in his environment. Today, we see ecological degradation because of man, as his life is full of depravity. To reverse this process and to minimise damage to the environment, man must adopt non-violence and lead a life of compassion.

According to Jain³¹ "There has never been a darker time for humanity than the one we are going through now. All material achievements cannot hide the fact that the world is being torn asunder by conflicts caused by differences in religion, economic status, race, caste, creed, nationality and what not. There has never been a time when the need for peace has been so acute. The reason is that there has been such a dangerous increase in the means of destruction during recent times. War first starts in the human mind and not elsewhere. If the human mind is turned to *ahiṃsā* all over the world, there would be no cruelty and war. But, merely chanting the word *ahiṃsā* cannot change the mind. *Ahiṃsā* has to be practised in thought word and deed by each

with a conviction that it is a law of nature, breach of which will be avenged by nature itself."³² This quote is the self-propounded philosophy of Jainism for environmental conviction. Jainism offers practical and positive code of conduct that helps a man to lead a life of non-violence and compassion. An infliction of this code of conduct or *aṇuvratas* is highly essential in this hour in the current state of the world. The promise of *ahiṃsā* is the duty of every individual, irrespective of his/her background (race, caste, etc.) to preserve all life forms and matter on this earth. Hence, when *ahiṃsā aṇuvrata* is followed by every community, be it *śrāvaka* or *śrāvika* at the individual level, the environmental problems are resolved by itself.³³ This small vow to venerate all life forms was proposed by Lord Mahavira and must be followed by *śrāvaka*. This is mentioned in *Upāsaka-daśāḥ Sūtra*.

There are other *Sūtras* for people in business which are more effective than the rules or legislation developed by a man in this modern world. It must be understood that advances at a global level can be made only by changes at an individual level; which is possible by strict adhering to the practice of *ahiṃsā aṇuvrata*. This spiritual mission must be practised vigorously by all humans to prevent societies from experiencing a further crisis. *Ahiṃsā* is the basic ethics of Jainism which laid the foundation for its ethics and policies. "*Ahiṃsā*" means "non-violence", "non-injury"; not harming any living creature

in any form. *Ahimsā* is the base foundation for all the strict practices of Jains including the vegetarianism and such similar violent-free behaviors. Jains maintain animal sanctuaries with very poorly diseased birds and animals and give them the best care and concern with full protection. These are the obvious ways we perceive humanism and *ahimsā* practice followed by Jains worldwide.

The concept of *ahimsā* practised and preached by Jains are way too different from the remaining philosophies. Every religious tradition claims violence to be hurting or causing hindrance to others, whereas in Jainism causing harm to our own self is itself a big sin and it is against their practice of *ahimsā*. According to Jains, causing harm to others or themselves is bad to our soul. Jains follow *ahimsā* towards all living creatures from human to insects to plants and micro-organisms. They consider every living being as a sacred one, and they claim that every individual deserves a fearless life. If the vow of *ahimsā* is taken by every individual, then it is commonly believed that the environment is safe to live in. The protection of life believed by Jainism is referred as *abhaya dāna*, and it is the highest assistance that people can make.

According to Jains, *ahimsā* is not only avoiding violence against others but also the very minimal thought of it in your mind is against it^v. Mahatma Gandhi had strong friendship with a famous Jain scholar Shrimad Rajchandra, whose influence of Gandhiji formed the base for his *Satyagraha* (truth struggle) against British dominance in India and this paved the way for the constructive change in contemporary Hindu practices. Jainism is not a proselytising religion, and there are no structurally formulated principles for them. Jain followers play a major role in propagating vegetarianism and *ahimsā*

practices for decades and decades. Jain *ācāryas* have formulated a certain set of principles that would fall under the concept of *ahimsā* appropriately. The members of Jain business community too are familiar with basics of Jain ethics and they take care to take to ethical business practices to the extent possible. Now we will explore the *satyavrata* in which a businessman must not lie to achieve benefits.

3.5.2 Minor vow of truthfulness (*Satya Aṇuvratas*)

Satya- Truthfulness: *Second partial Vow: Sthula Mrushāvāda Viraman Vrata* Self-restraint from needless deceits and being untruthful for the advantage of one's own self, family, friends and business. A layman should not lie to achieve business advantage.

The foremost lapses and defilements of the vow of truth are as follows :

- Untruthfulness toward others and towards own-self.
- Encouraging or welcoming being untruthful. Overstating, altering or fabricating the facts for self-needs or impairing others. It also includes talking false information about others, revealing other's secrets, and betraying the trust of others. Fawning or acting ostentatiously for attaining your needs. Uttering of the truth through which pain, aggression or ferocity is caused to others. Making use of indecent or callous language is also a factor.³⁴

Satya- An answer to disbelief and uncertainty

"Truthfulness is the abode of austerity, self-restraint and all other virtues. Indeed truthfulness is the source of all noble qualities as the ocean is that of fishes".³³ In the *Sūtra* twelve of *Daśavaikālika* this vow is analysed.

This vow stops a person from making false statements because of desire and greed. We will not ourselves utter a lie nor cause others to do so nor approve of indulging in falsehood and that for good- by three instruments and modes- by the mind, word and deed. We shall not take to untruth, nor approve of other's doing the same.³⁵ A man will incline towards the path of *Satya*, effortlessly if he follows *ahimsā anuvrata*. It requires being elucidated completely to avoid any misunderstandings. *Satya* or truthfulness is the second primary pledge that a householder needs to follow to be free of *karma*. *Satya* is not just honesty but has a wider meaning. It denotes being true to oneself, not being two-faced, deceitful and dishonest, being honest to reality.

Ācārya Umasvati says, "Speaking what is not commendable is falsehood".³⁶ Overpowering or exclusion and instruction of data are known as falsehood in general terms. But people qualify truth depending on circumstances. Due to incorrect facts, assurance to falsehood is superior to truth. This has brought about chaos in economic, social, political and above all in the business field worldwide. But Jainism initiates both householders and abstainers to *Satya* as a *vrata* or vow that has to be followed every day. Jaina *vrata* of *Satya* is complete and applied because it takes into account all prospects of realism. *Ācārya* Samantabhadra says "He who does not speak gross (*thula*) falsehood, does not cause others to speak and does not speak even the truth if it is likely to bring danger (*Vipada*) to himself or anybody else, can be said to desist from gross falsehood."³⁷ It is interesting to note that "careless activity of mind, body or speech also contributes to four types of falsehood (*pramitta-yoga*)"³⁸ They are :

Repudiating the reality concerning its position, time and class, when the existence is

true. As an example, the government doesn't approve of the fact that the welfare of the citizens does not reach to the rural people in remote villages. Proclamation of the existence of something that does not exist is the next type. False reports submitted by officials regarding road development, water supply and infrastructure that exists only on paper equivalent are included. It also comprises of faults like representing things that are different from the original like a horse being called a cow. The government says that people benefited from dam project are more, and people who need to be evacuated because of dam construction will be rehabilitated. On the other hand, only a small number will be benefitted from dam projects. The rehabilitation project is just in papers. This is uncivilised lie where the public is being cheated by the government.³⁹

When a speech is condemnable (*garhita*), wicked (*savadya*) and displeasing (*apriya*) it is known as falsehood. A Minister in his response to information of rape of women and other outrages once said, "What is new about rape?" these kinds of statements articulating heartlessness and indifference towards another man's suffering is also a crime according to Jainism. Scriptures both of the Digambaras and Śvetāmbaras are written and have characterized the forms of untruth: "1) denial of what is, ii) assertion of what is not, iii) representation of something in a form other than its real form, iv) reprehensible speech which is tactlessly hurtful, insulting or encouraging harmful actions like advice to steal or kill".⁴⁰

From the above facts, we blame the family, society, state, country, organisation, government, numerous sectors, etc., for a single person's faux pas. "There are five contraventions of truth against which *Ācārya*

Samantabhadra has warned everyone observing the vow of honesty. *Parivāda* is giving untrue or incorrect guidance about issues related to good conduct is the first type of *aticāra*; where people are deceived in matters related to belief or conduct is offensive and must be shunned. *Raho'bhyākhyāna*, revealing people's secrets or not keeping the promise of untrue issues; the revelation of private talks known due to overhearing, is likewise offensive. *Paisunya*, indulging in insulting people or gossiping about the flaws of people should not happen for the reason that the prestige of people will be hampered. *Kūta-lekha-karaṇa*, Committing forgery is the fourth kind of *aticāra*. According to *samveda*. It comprises of possessing or up keeping of false accounts and continuation of false publicity about others. *Nyāsāpahāra* is the fifth one which includes infringement of trust or embezzlement entrusted things given in confidence. In numerous situations, people entrust their jewellery or cash to people due to various reasons hoping to get it back when required. Not accepting the fact of entrusted items either entirely or partially is a falsehood.”⁴¹

1. *Sahasabakhane (S.) or Parivada (D.)* – This means offering false or wrong advice. Misguiding and mismanagement are now a part of everyday life in all fields like political, medical, social etc. To illustrate, a doctor directing a person to go through all kinds of medical tests when not required but merely to earn money out of it, amounts to *Parivada*. The person believing in the incorrect advice might get into distress, but the person who intentionally gives false advice will encounter more problems due to *karmic* influx, according to Jainism. There are uncountable dishonest gurus who are powering religious and philosophical skirmishes by preaching

ideas which need to be based on non-violence, coexistence and compassion for everyone, but as an alternative, they are encouraging fundamentalism and bigotry. They need to face the wrath of *karma* more than their followers. Offering to give some positive guidance to someone, but later misguiding them intentionally, and these things happen in some international bodies like the World Bank, IMF, that provide wrong advice to emerging countries, also amounts to *Asatya* and invites *karma* at the organisational level.⁴²

2. *Raho'bhyākhyāna* - Exposing the secrets. This usually happens in modern business practices. Spies are employed in the competing firms and gather the trade secrets of their competitor. The spy in this situation invites *karma*, but the employer of the spy invites greater *karma* as they are the initiators of corruption. Two countries engaging spies to observe the strategic defence positions, the capability of the other country is a great example. This happens in areas like business and international relationship, where technology is pilfered and sold. These people could be rich, but it is impossible to escape the law of *karma*. Copyright violation, patents, stealing of formulas, scientific ideas, etc are all examples of *Raho'bhyākhyāna*.

3. *Sadarmantbheye (S.) or Paisunya (D.)* - Chattering about other people's negative points. There are lots of examples relating to this *aticāra*, like gossiping about neighbors, spoiling the character of a person in an organisation known as grapevine etc. up to the information that is being gossiped at the national and international level. A person is being talked about when he is not there to defend himself. Therefore, people may tell false statements or overstate occasions or statements. This is done merely to waste time-but damage is caused to the neighbors' status

and well-being by their sluggish gossip. These instances are happening in all segments of life where the situation worsens out of proportion. Therefore, Jainism aims at every man and woman at a young stage to thwart such habits that damage one another and warns about the *karma* one invites.⁴³

4. *Kūṭa-lekha-karaṇa* - Perjury or forgery. Although a person takes an vow on the Bhagvad Gita, Quran, Bible, etc., people give untrue statements on the witness stands. Former US President Bill Clinton committed perjury when he refused to accept any close relationship with a White House intern when he was questioned on the witness stand. But soon he accepted that he had lied and apologized to the people of America. People might become famous or rich and escape consequences due to forgery or perjury, but *karma* will not leave them alone. Not only the offender, but also people who prompt him, the inactive observers, is all under the attack of the *karma* theory.

5. *Mosovayase (S.)* or *Nyāsāpahāra (D.)* - Breach of trust. One of the media (Tehelka.com) exposed corruption in high places. Politicians, bureaucrats and officials – all of them were a part of the adulterous conspiracy in cheating the nation and its people for gaining riches. This is an uncultured misbehavior of the vow of *Satya* and invites great *karma*. A stockbroker of India was involved in shares scam. Although Harsad Mehta was a Big Bull among stock brokers, he was involved in breach of trust and cheated numerous investors. In the beginning he escaped the law, but was arrested later. His last stages of life were in the prison and eventually died there due to ailment. There are numerous scams, scandals in all parts of the world. Tourism, conversion, corruption and consumerism are the evils today. People have

lost all faith in truth but they should not forget that it is truth that triumphs ultimately.

R. Williams has discussed other *aticāras*, mentioned by Haribhadra, Siddhasena Ganin and others, which may be briefly indicated: "imputing someone without due reflection on a non-existent allegations made by way of jibes, divulging to what has been said by one's wife in confidence special circumstances, uttering words that may cause distress to others, counterfeiting of seals of others or attributing some statement to another though he has in fact not made it and divulging from jealousy or another motive of the secret intention of another, inferring from his gestures or facial expressions."⁴⁴

The *aticāras* that we discussed have become customary in the present world. They become hindrances in practising the truth. Overstatement, uncomplimentary attitude, offensive language and instructions contribute to falsehood nowadays more in business and corporates. The demanding benefit which does not exist in the self or declining to recognise the good qualities in others is also a falsehood. A vow of *Satya* or truth is truthfulness to us, fellow-beings and environment. It indicates that all actions are focused due to correct faith, knowledge and behaviour which indicate that a person needs to be free from wrath, voracity, timidity, worriedness, jest and blame. *Aticāras* should be understood and has to be overcome. *Aticāras* are closely associated with *karma* theory for the reason that when avoiding these misdemeanours, pure environment is attained and a man's *karma* is redeemed.⁴⁴

Therefore, *Satya* needs to be observed as a social restraint, practised at the individual level, which helps the business society ethically and raises the individual psychologically. If not, a man invites *karma*

for himself and will suffer eventually.

- Dept. of Jainology, 29/3, Ranganathan Avenue,
Kilpauk, Chennai-600010 (Tamilnadu)
31. Ibid. p.32.
32. Ibid. p.32.
33. Ibid.
34. Jaina Education Committee, *Jain Philosophy and Practice-2: JAINA Education Series 401-Level 4* (USA:JAINA Education Committee, 2010), http://www.jcgb.org/images/files/pathshala/level_4/JES401_Level4_for_Print_2010_10_02.pdf.
35. Ibid.
36. S.A. Jain, *Reality (Tattvartha-Sutra)* (Madras: Jwalamalini Trust, 1992).
37. AcaryaSamantabhadra, *Ratnakar and Sravakacara* op.cit Verse 55

38. Tukol, *Compendium of Jainism*.op.cit., p210.
39. Sancheti Asoo Lal and Bhandari Manak Mal, *First Steps to Janism*, 2nd ed. Jodhpur: Sumcheti Trust, 1989).
40. Tukol, *Compendium of Jainism*.op.cit., p210.
41. Ibid. p.211
42. Lal and Mal, *First Steps to Jainism*.
43. K.C. McConnell, "Everybody Knows 'She Is Mataji:.' The Relationships of Jain Sadhvis as Instruments of Empowerment and Identity Formation" (Haverford College, 2016), <https://scholarship.tricolib.brynmawr.edu/bitstream/handle/10066/18974/2016McConnellKC.pdf?sequence=1>.
44. Tukol, *Compendium of Jainism*.op.cit., 212.
45. McConnell, "Everybody Knows 'She Is Relationships of Jain Sadhvis as Instruments of Empowerment and Identity Formation.'".

गरिमा को बढ़ा देना

श्री निपुण डागा

(तर्ज :: दुनिया गाये यश तेरा)

वैराग्य के जीवन से, आदर्श बना देना
वीर बन जिनशासन की गरिमा को बढ़ा देना
ज्ञान की ज्योति से, दर्शन सम्यक् करना
चारित्र की पूजा से, हम को भी तिरा देना
संयम तप की साधना से, शासन को दिपा देना..
मोह नगरी को तजकर, निर्मोही बन जाना
मोक्ष की अभिलाषा से, महायोगी तुम बनना
परीषहों के अङ्गारों में, तुम अजय बने रहना..
हीरा महेन्द्र की शरण में, प्रमोद भाव लाना
विनय समर्पण लाकर, सत्यान्वेषी बन जाना
हे वीर तू, कर्मों को चीर तू, उत्कृष्ट समाधि रखना
देखकर तेरी दृढ़ता, पर्वत कम्पन करता
अतहियद्वाए समर्पण, गुण श्रेणियाँ है चढ़ना
हर क्रदम अब प्रभु आज्ञा में, अप्रमत्त बने रहना
कायर हम तो रह गए, तुम तो गगन छूना
भक्तों के मसीहा बनकर, हमको न भुला देना
दीक्षा की शिक्षा से, निपुण बने रहना..

-बी 13, सेटी कॉलोनी, जयपुर-302004 (राज.)

विधि का विधान

श्री शिखरचन्द छाजेड़

अपने युग का-कोई कितना भी प्रधान
महान या कि करुणानिधान
विधि का विधान सबके लिए एक समान...।।
जन्मा सो जावे करणी-फल हर कोई पावे
शुभ से सुखी अशुभ से दुःखी हर प्राणी,
हर इंसान विधि का विधान सबके लिए एक समान.
राजा-राणा-छत्रपति-योगी-जोगी-
त्रिभुवनपति बदल न सकें संविधान
विधि का विधान सबके लिए एक समान...
चंद दिन का जीवन कितना व्याकुल है मन
रात-दिन हम रतें कैसे पाऊँ मैं धन
समेट ले कितना भी खाली हाथ, जाता इंसान
विधि का विधान सबके लिए एक समान.....
दया की, दुआ मिलेगी निर्दयता की सजा मिलेगी
अटल सत्य है मृत्यु बचा न सके,
तीर्थकर भगवान विधि का विधान
सबके लिए एक समान.....
-वरिष्ठ स्वाध्यायी, करही (मध्यप्रदेश)

आओ मिलकर कर्मों को समझें (17)

(दर्शनावरणीय कर्म)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा—निद्रा-निद्रा दर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

समाधान—जिस अवस्था में जीव थोड़ी मुश्किल से जागृत होता है, उसे निद्रा-निद्रा दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं। निद्रा की अपेक्षा निद्रा-निद्रा थोड़ी अधिक गहरी होती है। पानी आदि के उपयोग से या अन्य किसी उपाय से जीव जागृत होता है। दूसरे शब्दों में जिस कर्म के उदय से जीव को कठिनाई से जागृत होने वाली निद्रा आती है, उसे निद्रा-निद्रा दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं।

जिज्ञासा—प्रचला-प्रचला दर्शनावरणीय किसे कहते हैं?

समाधान—चलते-फिरते नींद लेने को प्रचला-प्रचला कहते हैं। मनुष्यों में भी इस प्रकार की निद्रा का उदय होता है, परन्तु अधिकतर इस निद्रा का उदय तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय प्राणियों में होता है। घोड़ा, ऊँट, हाथी आदि चतुष्पद प्राणी अधिकतर चलते-चलते नींद ले लेते हैं, खड़े-खड़े नींद ले लेते हैं। दूसरे शब्दों में जिस कर्म के कारण इस प्रकार की निद्रा का उदय होता है, उसे प्रचला-प्रचला दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं।

जिज्ञासा—स्त्यानर्द्धि निद्रा कर्म किसे कहते हैं?

समाधान—जिस निद्रा के उदय से निद्रित अवस्था में विशेष बल प्रकट हो जाये अथवा जिस निद्रा से दिन में चिन्तित अर्थ और साधन विषयक आकांक्षा का एकत्रीकरण हो जाये, उसे स्त्यानर्द्धि अथवा स्त्यानर्द्धि निद्रा कर्म कहते हैं।

दूसरे शब्दों में जिसके उदय से आत्मा स्वप्न में बहुशुद्ध कर्म करती है, उसे स्त्यानर्द्धि कहते हैं। यहाँ स्त्यान का अर्थ स्वप्न और गृद्धि का अर्थ दीप्ति लिया गया है।

ऐसा भी फलितार्थ समझ सकते हैं कि जिस शयनावस्था में आत्मा की शक्ति रूप ऋद्धि स्त्यान अर्थात् पिण्डीभूत (एकत्रित) हो जाये, उसे स्त्यानर्द्धि कहते हैं। यदि प्रथम संहनन वालों को इसका उदय हो तो उसमें अर्धचक्री (वासुदेव) के बल से आधे बल के बराबर शक्ति उत्पन्न हो जाती है। द्रव्य लोक प्रकाश ग्रन्थ में उल्लेख मिलता है कि प्रथम संहनन के अलावा शेष संहनन वाले मनुष्यों को यदि स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हो जाये तो उस मनुष्य के औसत बल से सात-आठ गुना बल उत्पन्न हो जाता है।

जिज्ञासा—स्त्यानर्द्धि निद्रा की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

समाधान—1. स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय 1 से 6 गुणस्थान तक के जीवों को हो सकता है।

2. स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी-असन्नी मनुष्यों को तथा संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी-असन्नी तिर्यञ्चों को हो सकता है।

3. नारकी, देवता, युगलिक तिर्यञ्च तथा युगलिक मनुष्यों को स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय नहीं होता है।

4. स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय यदि किसी साधु को हो जाता है तो वह संयम-पालन के योग्य नहीं रहता है।

5. स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय जीव उत्पन्न होने के बाद शरीर पर्याप्ति पूर्ण कर लेने के पश्चात् कभी भी हो सकता है।

6. स्त्यानर्द्धि निद्रा की उदीरणा इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण होने के बाद हो सकती है।

जिज्ञासा—साधुपने में रहते हुए स्त्यानर्द्धि निद्रा से सम्बन्धित कौन-कौन से उदाहरण मिलते हैं ?

समाधान—जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण द्वारा विरचित विशेषावश्यक भाष्य की टीका में साधुपने में स्त्यानर्द्धि निद्रा के निम्नांकित पाँच उदाहरण मिलते हैं—

1. **मांस खाने का उदाहरण**—किसी गाँव में एक पटेल (किसान) रहता था। वह मांस खाने में अति लुब्ध था। कच्चा-पक्का जो भी मांस मिलता उसे खा जाता था। एक समय कोई गुणवान स्थविर भगवन्त से उसने उपदेश सुना। बोध प्राप्त किया और जैन भागवती दीक्षा धारण कर ली। दीक्षा लेकर स्थविरों के साथ में एक ग्राम से दूसरे ग्राम भिन्न-भिन्न स्थलों पर विहार करने लगा। एकदा विहार करते समय किसी स्थल पर मांस लुब्ध पुरुषों द्वारा एक भैंसे को चीरते हुए देखा। उस दृश्य को देखकर पूर्व संस्कारों के कारण उसे मांस खाने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गई। इस तीव्र इच्छा को रखता हुआ दैनिक आहार करने के बाद स्थण्डिल भूमि जाकर आया, सायंकाल प्रतिक्रमण किया, रात्रि में भी उसकी इच्छा शान्त नहीं हुई। तीव्र इच्छा के साथ सो गया। रात्रि में स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हुआ। उपासरे से निकल कर ग्राम के बाहर चला गया। जंगल में एक भैंसे को देखा तो उसे मार दिया और उसका मांस खाने लग गया। साथ में मांस लेकर आया और उपासरे के ऊपर की छत पर रख दिया और पुनः सो गया। प्रातः काल उठकर अपने गुरुजी को कहा—मैंने ऐसा स्वप्न देखा है। दूसरे साधुओं ने उपासरे के ऊपर रखे हुए मांस को लाकर गुरुजी को दिखाया। गुरुजी को यह निश्चय हो गया कि इसे स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय हुआ है। यह मुनि अब चारित्र-पालन के योग्य नहीं है, ऐसा निश्चय किया। श्री संघ ने उस साधु का मुनिवेश वापस उतरवा दिया।

2. **मोदक खाने का उदाहरण**—किसी साधु ने

विचरण करते हुए किसी ग्राम में किसी घर के अन्दर थाल में रखे हुए सुगन्धित, सरस एवं मनोज्ञ मोदकों को देखा। उस स्थल पर खड़े रहकर अनेक बार लुब्ध भाव से अर्थात् खाने की तीव्र इच्छा से उन मोदकों को देखा, परन्तु उन मोदकों को प्राप्त नहीं कर सका, उसे बहुत निराशा हुई। उपासरे में चला गया, वहाँ मोदक खाने की तीव्र अभिलाषा से युक्त होकर रात्रि में सो गया। सोने के बाद स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हो गया। उसके प्रभाव से वह साधु बाहर निकलकर मोदक वाले के घर पर आ गया। घर आकर किवाड़ तोड़कर अन्दर चला गया। अपनी इच्छा के अनुसार मोदक खाने लगा। कुछ मोदक पात्र में रखकर साथ में लेकर उपासरे में आ गया। पात्र उपासरे में रख कर वापस सो गया। प्रातःकाल गुरु के पास जाकर रात्रि के स्वप्न की बात प्रस्तुत कर दी। दूसरे साथ वाले साधुओं ने प्रतिलेखना करते समय पात्र में रखे हुए मोदकों को देखा और गुरुजी के सामने लाकर दिखाया। गुरुजी ने कहा—इस मुनिराज को स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय हुआ है, अब यह संयम-पालन के योग्य नहीं है। अतः उसका मुनिवेश श्री संघ ने वापस ले लिया।

3. **दाँतों का उदाहरण**—किसी साधु को एक दिन किसी हाथी ने बहुत परेशान किया। उस हाथी से परेशान होकर वह साधु भाग कर उपासरे में आ गया। उसके पश्चात् उस साधु को उस हाथी के ऊपर लगातार क्रोध आता रहा, उसी क्रोधावेश में रात्रि में सो गया। सोने के पश्चात् रात्रि में स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हो गया। उसके प्रभाव से उस साधु के शरीर में अत्यधिक बल प्रकट हो गया। उपासरे से निकला, नगर के मुख्य दरवाजों को तोड़ डाला और जंगल में जहाँ वह हाथी था, वहाँ चला गया। उस हाथी को जान से मार दिया, उसके दोनों दाँत खींचकर निकाल लिये और दाँतों को साथ में लेकर उपासरे में आ गया। उन दाँतों को उपासरे के बाहर रखकर वापस सो गया। प्रातःकाल गुरुजी के पास

जाकर रात्रि में देखे स्वप्न की पूरी बात बतला दी। उपासरे के बाहर हाथी के दाँतों को जब गुरुजी ने देखा तो निश्चय हुआ कि इस साधु को रात्रि में स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय हुआ है। अब यह संयम-पालन के योग्य नहीं रहा। श्री संघ को बुलाकर उससे साधुवेश वापस उतरवा दिया।

4. **कुम्हार का उदाहरण**—किसी ग्राम में एक बड़ा कुम्हार रहता था। उसने वहाँ पधारे मुनिराज से एकदा उपदेश सुना, उपदेश से प्रभावित होकर उनके गच्छ में दीक्षा ले ली। दीक्षा लेने के बाद संयम-पालन करते हुए एक दिन रात्रि में सोते हुए उसे स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हो गया। गृहस्थ जीवन के मिट्टी के पिण्ड को तोड़ने-कूटने आदि के अभ्यास के कारण, पूर्व संस्कारों की दृढ़ता के कारण उस कुम्हार मुनि ने वहाँ उपासरे में सोये हुए दूसरे साधुओं के मस्तकों को तोड़ दिया और पास में एकांत में उनके धड़ (शरीर) और मस्तकों का ढेर लगा दिया। जब दूसरे साधुओं ने इस दृश्य को देखा कि इन साधुओं के शरीर निष्चेष्ट पड़े हुए हैं। पूरी घटना को जानकर गुरुजी को अवगत कराया, गुरुजी ने देखा कि जिस साधु ने यह कार्य किया है, उसे स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय हुआ है, अब यह साधु संयम-पालन के योग्य नहीं है। अतः श्री संघ ने उससे मुनिवेश वापस उतरवा लिया।

5. **बड़ की शाखा का उदाहरण**—कोई एक साधु

विचरण करते हुए किसी ग्राम में आ रहा था। आते समय गर्मी की भीषणता से परेशान होकर वृक्ष की छाया पाने की तीव्र इच्छा से चलता रहा। रास्ते में एक बड़ का वृक्ष आया, उसकी शीतल छाया देखकर उस वृक्ष के नीचे बैठ गया। उस बड़ के वृक्ष की एक डाली बहुत नीचे झुकी हुई थी। वह डाली साधु के मस्तक पर आ रही थी, जिससे उस साधु को बहुत अधिक परेशानी हो रही थी। अत्यधिक परेशान होता हुआ वह साधु उपासरे में आ गया और उस बड़ के वृक्ष पर क्रोध करता रहा। क्रोधावेश में रात्रि में सो गया। उसे स्त्यानर्द्धि निद्रा का उदय हो गया। उस निद्रा के कारण रात्रि में उपासरे से बाहर निकला जहाँ बड़ का वृक्ष था, वहाँ आया और उस नीचे झुकी हुई शाखा को गुस्से में आकर तोड़ डाला और शाखा को साथ में लेकर उपासरे में आया। दरवाजे के बाहर उस शाखा को रख दिया और वापस सो गया।

प्रातःकाल उठकर उस साधु ने गुरुजी को रात्रि में देखे स्वप्न की सारी बात बता दी। उपासरे के बाहर रखी शाखा को देखकर गुरुजी ने निश्चय किया कि इसे रात्रि में स्त्यानर्द्धि निद्रा का उत्कृष्ट उदय हुआ है, इस कारण से अब यह संयम-पालन के योग्य नहीं है। श्री संघ ने उस साधु का वेश उतरवा कर वापस उसे अपने घर भेज दिया।

—रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

मान-विजय का प्रयत्न

इसमें मैंने क्या किया?

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा को मद्रास उच्च न्यायालय में उनकी फर्म 'सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज' को 50 वर्ष पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया। मैंने उन्हें फोन पर बधाई दी तो वे बोले— "इसमें मैंने क्या किया, समय तो अपने आप बीतता गया।" पचास वर्षों में उन्होंने जो श्रम, कार्यनिष्ठा, ईमानदारी आदि से प्रतिष्ठा प्राप्त की, उसका अहंकार उन पर सवार नहीं था।

—डॉ. धर्मचन्द जैन

कैसे करें मन का निग्रह?

श्री पारसमल चण्डालिया

मन बहुत चञ्चल है। इसे बन्दर, भूत और घोड़े आदि की उपमा दी जाती है। उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 23 गाथा 58 में कहा है-‘मणो साहसिओ भीमो, दुद्रुस्सो परिधावई’ यह मन रूपी साहसिक और भयानक दुष्ट घोड़ा चारों ओर भागता-फिरता है। मन रूपी घोड़ा गलत रास्ते पर नहीं गया, शान्ति से खड़ा है तो यह श्रेष्ठ है। घोड़ा गलत रास्ते पर चला गया और उसकी लगाम खींच ली तो यह बेहतर है। परन्तु भटकते मन को वश में करने की कोशिश नहीं की तो यह अच्छा नहीं है। कैसे करें मन को वश में? प्रभु उपाय फरमाते हैं-‘पहावंतं निगिणहामि सुयरस्सी समाहियं’-उन्मार्ग की ओर जाते हुए मन रूपी घोड़े को श्रुतज्ञान रूपी लगाम से बाँध कर वश में किया जा सकता है। जैसे जातिवान घोड़ा शिक्षा द्वारा सुधर जाता है उसी प्रकार मन रूपी घोड़े को सम्यक् प्रकार से धर्म की शिक्षा द्वारा वश में रखा जा सकता है।

मन नोइन्द्रिय है। इसे यशकीर्ति, आदेयता आदि खूब पसन्द है। अपने भूतकाल के सुखों को याद करने में मन को मजा आता है और भविष्य काल के सुखों की कल्पना करके मन नाच उठता है। भूतकाल के संसार का बार-बार चिन्तन करना और भविष्य के संसार की तरङ्गों में मस्त बनना, यह मन की भयंकर भूल है। इस भूल को सुधारने के लिए मन को वश में करना जरूरी है।

मन की विशेषता

मन, वचन, काया तीन योग हैं। इन तीन योगों में से मन को वश में करना, मन का निग्रह करना अत्यन्त कठिन है। मन राजा है तो इन्द्रियाँ नौकर हैं। पहले मन विषयों में जाता है फिर इन्द्रियाँ विषयों में जाती हैं। मन आदेश करता है आँख को कि-यह सुन्दर रूप है, देखो!

फिर आँख सुन्दर रूप देखती है। मन आदेश देता है जीभ को कि खा-खा-खा बहुत सुन्दर वस्तु है, इसे खाने में मजा आयेगा। फिर जीभ खाने के लिए दौड़ती है। इसी प्रकार श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय के लिए भी समझ लेना चाहिये। विषयों की ओर जाते मन को जो रोक लेता है उसकी इन्द्रियाँ भी विषयों में नहीं जाती है। इसीलिए सबसे पहले मन को जीतना जरूरी है। उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 23 गाथा 36 में प्रभु फरमाते हैं-

एगो जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।

दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं।।

अर्थात् जिसने एक मन को जीत लिया उसके द्वारा पाँचों इन्द्रियाँ जीत ली जाती हैं और जिसने पाँच इन्द्रियों को जीता वह पाँच विषयों सहित दस को जीत लेता है। इस प्रकार दस को जीतने वाला, सभी शत्रुओं को जीत लेता है।

मन को निग्रह करने का उपाय

मन को विषयों में नहीं जाने देना और चला जाय तो उसे पुनः खींच लेना, यह मन का प्रत्याहार है, मन का निग्रह है। सबसे पहले मन और इन्द्रियाँ विषयों की ओर जावे ही नहीं, यह श्रेष्ठ है और कदाचित् चली जाये तो उन्हें समझपूर्वक रोकना, रोककर पुनः खींच लेना ही मन का निग्रह है। इन्द्रियों का अपना-अपना स्वभाव है। वे तो अपने-अपने विषयों में प्रवृत्त होंगी ही, किन्तु प्रवृत्त होती हुई इन्द्रियों को कैसे रोका जाय, इसके लिए अभ्यास करना पड़ेगा।

पाँच इन्द्रियों को वश में करने से पहले चञ्चल मन को वश में करना जरूरी है। मन को वश में करने का उपाय जानने के लिए महाभारत में अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं-

चञ्चलं हि मनः कृष्ण! प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सुदुष्करम्॥6/34॥

हे कृष्ण! मन चञ्चल है, मन भटकाने वाला है, बलवान है, दृढ़ है। मैं मानता हूँ कि उसका निग्रह करना, हवा को पकड़ने जैसा दुष्कर कार्य है।

अर्जुन के प्रश्न के उत्तर में श्री कृष्ण ने मन को काबू में करने का उपाय बतलाते हुए गीता में कहा है—
“अभ्यासेन तु कौन्तेय! वैराग्येण च गृह्यते॥6/35॥
अर्थात् 1. अभ्यास और 2. वैराग्य से मन को काबू में लाया जा सकता है।

अभ्यास से नियन्त्रण

अनादिकाल से इन्द्रियों के एवं मन के संस्कार विषयों के पीछे भागने के हैं अतः एक ही प्रयास से ये संस्कार मिटने वाले नहीं हैं। अभ्यास से ही इनको छुड़ाया जा सकता है। जैसे समझाने पर नशेबाज धीरे-धीरे नशा छोड़ देता है उसी प्रकार मन और इन्द्रियों को अभ्यास से विषयों की ओर जाने से रोका जा सकता है। धीरे-धीरे आंशिक रूप से व्रत प्रत्याख्यानों के द्वारा विषयों का त्याग देशविरति है और सम्पूर्ण रूप से त्याग सर्वविरति है। देशविरति अथवा सर्वविरति को अपना कर मन को वश में किया जा सकता है।

वैराग्य से नियन्त्रण

जिनवचनों का बारबार चिन्तन, श्रवण और मनन करने से वैराग्य प्राप्त होता है। जिनवाणी का श्रवण कर आचरण में लाने से वैराग्य दृढ़ होता है। वैराग्य से विषय राग घटता है। राग घटने से विषयों में जाती हुई इन्द्रियों को रोकने का काम सरल हो जाता है। जब विषय राग ही समाप्त हो जायेगा तो इन्द्रियाँ विषयों में जायेंगी ही नहीं। मन रूपी राजा के अधीन बनी हुई इन्द्रियाँ, मन के आदेश बिना एक कदम भी आगे नहीं भरेगी। यह होता है सर्वोत्तम मन का निग्रह। इन्द्रियों को वश में करने की अपेक्षा मन को वश में करना जरूरी है। इन्द्रियों का निग्रह द्रव्य निग्रह, व्यवहार निग्रह है, परन्तु मन का निग्रह भाव निग्रह है, निश्चय निग्रह है। यही निग्रह

सच्चा निग्रह है।

कैसे हो मनोगुप्ति का पालन ?

समस्त विकल्प जाल से मुक्त होना और समभाव में प्रतिष्ठित होकर मन का आत्मा में रमण करना अथवा अशुभ अध्यवसाय में जाते हुए मन को रोकना मनोगुप्ति कहलाती है। मन को शुभ में प्रवृत्त करना समिति है तो अशुभ से निवृत्ति करना मनोगुप्ति है। इन्द्रिय विषयों में जाते हुए मन को रोक तो लिया, किन्तु मन तो भूत है, बन्दर है, मन को अशुभ कामों से रोका तो उसे शुभ काम में लगाना पड़ेगा। अन्यथा वह पुनः अशुभ में चला जायेगा। अतः मन रूपी बन्दर-भूत को कहीं तो बाँधकर रखना ही पड़ेगा अन्यथा वह तो उछलकूद करेगा ही। कहा भी है—

ज्यूं बंदर मदिरा पियां, बिच्छू डंकित गात।

भूत लग्यो कौतुक करे, त्यूं कर्मा को उत्पात॥

इसलिए मन को कहाँ स्थापित करना? मन को सदैव आत्मा में-आत्मगुणों में लगा कर रखना। आत्म-गुणों में रमण करने से ही मनोगुप्ति का पालन होता है।

कैसे पता लगे कि मन समाधि में है ?

मन सदैव क्षमा, नम्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य आदि आत्मगुणों में ही लगा रहना चाहिए। आत्मगुणों में रमण ही मन का समाधान है और यही मन की समाधि है। मन समाधि में है-यह कैसे जानें? जैसे—

1. किसी ने गाली दी, निंदा की, उपालम्भ दिया, खोटा आरोप लगाया-फिर भी मन अपनी मस्ती में रहे। जैसे बहरे व्यक्ति पर कुछ भी असर नहीं होता है उसी प्रकार इन सब बातों को सुनकर कुछ भी असर नहीं हो तो समझना कि मन समाधि में है।
2. कोई प्रशंसा करे, खूब मान-सम्मान दे, अनुमोदना करे, हार पहनावें, अभिनन्दन करे, परन्तु जैसे मृतक को कोई फर्क नहीं पड़ता है वैसे ही कोई फर्क नहीं पड़े तो मानना कि मन समाधि में है।
3. भूल से दोष सेवन हो गया तो उसे छिपाने का विचार नहीं हो। लोग क्या समझेंगे, ऐसा विचार नहीं, मेरी

इज्जत चली जायेगी, ऐसा भय नहीं और सहज भाव से बड़ों के सामने, गुरु भगवन्तों के सामने अपने दोष कह देने की तैयारी हो तो मान लेना कि मन समाधि में है।

4. भोजन चाहे जैसा सुपर हो, परन्तु जैसे गधे को मिश्री में कोई रस नहीं वैसे ही मन में कोई रस उत्पन्न न हो तो मान लेना कि मन समाधि में है।
5. क्षमा, नम्रता, सरलता और निर्लोभता रूप आत्म-गुणों में मन बराबर सम्पूर्ण रूप से जुड़ा रहे, एक पल भी एक अंश जितना भी क्रोधादि भाव को स्पर्श नहीं करे तो यह मन का समाधान है, मन की समाधि है। इसीलिए सच्चे वीतरागी साधक के

लिए उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 19 गाथा 91 में कहा है-

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदा पसंसासु, तहा माणावमाणओ॥

लाभ और अलाभ में, सुख और दुःख में, जीवन और मरण में, निंदा और प्रशंसा में तथा मान और अपमान में समभाव रखे।

जो साधक मनोगुप्ति का पालन करता है, मन का निग्रह करता है वही ऐसा वीतरागी साधक होता है और उसी का आत्म-कल्याण होता है।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिडुल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

संयम को उसका इंतज़ार है

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

(तर्ज :: जीवन को जिसका इंतज़ार है...)

ठोकर में जिसके यह संसार है,
संयम को उसका इंतज़ार है.....
जाना है जिसको भवपार है,
संयम को उसका इंतज़ार है!

मुक्ति पाने को जो तरसा है,
आँखों से सावन भादों बरसा है.....
बन्धन-सा लगता यह संसार है,
संयम को उसका इंतज़ार है!

संयम की यादों में जो रोया है,
संयम के भावों में जो खोया है....
भावों की तूफानी रफ़्तार है,
संयम को उसका इंतज़ार है!

जीता है लोहा ले के साँसों में,
फौलादी योद्धा है वो लाखों में.....
कर्मों पे ताने जो तलवार है,
संयम को उसका इंतज़ार है!

'तीर्थ' के जीवन की तकदीर है,
मन के मन्दिर में महावीर है.....
वीर को वन्दन बारम्बार है,
संयम को मेरा इंतज़ार है!

- 'जिनशास्त्र', 14, अभ्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादिपेट,
चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

कब तलक अपने ही कर्मों...

श्री निर्मल कुमार जामड़

कब तलक अपने ही कर्मों को यूँ ही कोसेंगे।
अपने भावों को शुद्ध रखने की कब सोचेंगे॥
नासमझ कौन है, और कौन समझदार यहाँ।
बहुत बारीक-सा भेद है, कब खोजेंगे॥
ज़िन्दगी पा के भी, क्या हमने किया कुछ ऐसा।
दिल के दरवाजे से, अन्तर को कब टटोलेंगे॥
क्या वजह है कि हम, सुकून से नहीं जीते हैं।
मन में जमे कषायों के, घेरे को कब तोड़ेंगे॥
कितनी मुश्किल से, यह रुह, इस बदन में आई।
पञ्चम गति में जाने का, पुरुषार्थ कब फोड़ेंगे॥

-2/175, जवाहर नगर, जयपुर-302004
(राजस्थान) लेखक अब दिवंगत

निज अनुभव से पढ़ा इन्सानियत का पाठ

श्री गौतम पारख

स्व की अनुभूति से ही जीवन के अनुभवों की कहानी बनती है। कहते हैं कि आपबीती घटना व्यक्ति के जीवन की पाठशाला बन जाती है। अनुभव सुखद हो, दुःखद हो, पीड़ाकारी हो, आह्लादकारी हो, सभी परिस्थितियों में सोच और समझ सम्यक् होनी चाहिये। सीखने, समझने, स्वीकारने, सुधारने और सतर्क रहने के भावों से अनुभव अनुरञ्जित होने लगे तो समझना चाहिये अनुभव जीवन-विकास की पगडण्डी बन गई है। पगडण्डी में चलकर जीवन को निखारा, सँवारा और सुधारा जा सकता है। सहनशीलता, संवेदनशीलता को आत्मसात् करते हुये अनुभव की कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ जा सकता है। वहीं दूसरी ओर, अनुभव हमें छलकपट, धोखाधड़ी के साथ बदले की भावना तथा अविश्वसनीयता का पाठ पढ़ाने लगे तो सतर्क, सावधान हो जाना चाहिये अन्यथा हमारा अनुभव ही हमें विनाश की ओर ले जाने लगेगा।

अपनापन और परायेपन के बीच की रेखा ही तो हमारी सोच एवं समझ को राग-द्वेष से अनुरञ्जित करती है। भेदभाव की रेखाओं को चिह्नाङ्कित करती है। संवेदनशीलता पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाती है। मोहजन्य संवेदनशीलता व्यवहार को निभाती अवश्य है, किन्तु संवेदनशीलता जब निष्काम, निस्पृह भावों से सेवा, करुणा, सहयोग, समन्वय और शान्ति का पाठ पढ़ाती है तो व्यक्ति स्वयं धन्य होने लगता है और दूसरों को धन्य करने लगता है। स्वयं धन्य का अभिप्राय भाव जगत् की सन्तुष्टि तथा आत्मानुभूति है। स्वयं को धन्य बनाने के लिए स्वयं को बहुत कुछ खोना, त्यागना और तपाना पड़ता है। अपनी सोच और समझ को सेवा, सहयोग की भावना के साथ करुणा, दया, आत्मीयता से भीगना ही तो हमारी इन्सानियत की निशानी कहलाती है।

सही मायने में सेवा धर्म, जाति और सम्बन्धों से ऊपर उठा होता है। सेवा की केवल एक ही पहचान होती है, वह है मानवता और इन्सानियत। वहीं दूसरी ओर समीक्षा जब सदा दूसरों पर केन्द्रित होती है तब व्यक्ति इन्सानियत से दूर भागता है तथा कलंक, निंदा एवं चुगली की ओर प्रयाण करने लगता है। व्यक्ति जब दूसरों की समीक्षा से हटकर निष्कामभाव से, स्वीकारने की मनोवृत्ति से स्वयं की समीक्षा करने लगता है तो इन्सानियत का राही बन जाता है और वह स्वयं के सुधार का अङ्ग बनने लगती है।

स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक घटनाक्रम स्मृति पटल पर उभरकर आ गया। एक व्यक्ति चिकित्सालय में अपने कन्धे पर एक बच्चे को उठाकर, दौड़ता, हाँफता, बेचैन होता प्रवेश करता है। सीधे वह चिकित्सक महोदय के कमरे में चला जाता है। हाँफते-हाँफते चिकित्सक महोदय से निवेदन करता है कि बच्चे को चोट लग गई, बेहोश हो गया। इसलिये तत्काल देख लीजिये। चिकित्सक उस व्यक्ति को डाँटने लगा। मेरे चेम्बर में तुम सीधे घुस कैसे गये? तेरी हिम्मत कैसे हुई? लाइन में जाकर खड़ा हो जा। लाइन में तेरी बारी आएगी तब मैं इसे देखूँगा। फिर भी उस व्यक्ति ने गिड़गिड़ाते हुये कहा डॉक्टर साहब! बालक बेहोश है, हालत नाजुक है, मुँह से खून भी आ रहा है। कृपया इसे पहले देखकर इलाज कर दें। चिकित्सक ने आँखे उठाकर भी उसे नहीं देखा, और चिल्लाते हुये कहा कि एक बार कह दिया ना कि लाइन से आ। समझ नहीं आता क्या? वह व्यक्ति बच्चे को कन्धे पर उठाये हुये पुनः अनुरोध करने लगा। इतने में ही डॉक्टर साहब की पत्नी दौड़ती-दौड़ती चिकित्सक महोदय के चेम्बर में घुसी। आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। साँस भर गई थी तथा हाँफ रही थी।

अपने चिकित्सक पति से कहने लगी-अपने बेटे दीपक को दुर्घटना में गम्भीर चोट आ गई है। कोई भला व्यक्ति उसे अपने कन्धे पर उठाकर दौड़ते, हाँफते आपके चेम्बर में लाया है। तब डॉक्टर ने उस हाँफते गिड़गिड़ाते व्यक्ति के कन्धे पर उठाये हुये बालक को देखा। वह तो डॉक्टर का ही पुत्र दीपक था। चिकित्सक महोदय अवाक् रह गये। तत्काल उन्होंने अपने बालक को गोद में ले लिया। उसका तत्काल इलाज प्रारम्भ कर दिया। नर्स, वार्डबॉय, जूनियर डॉक्टर सभी एक आवाज में आ गये। बालक दीपक का इलाज प्रारम्भ हुआ। बालक ने आँखे खोली। मुँह से गिरने वाला खून बन्द हुआ। जो व्यक्ति दौड़ते-दौड़ते उस बालक को उठाकर लाया था, उसने भी राहत की साँस ली।

मैं सोचने लगा कि काश एक चिकित्सक आपातकालीन सेवा के क्षणों में सभी मरीजों को अपना बेटा, पत्नी, भाई समझकर इलाज करता तो कई जिन्दगियाँ बच जाती अथवा गम्भीरतम स्थिति में जाने से रुक जाती। इस संसार में उस भले व्यक्ति के समान भी सेवाभावी, व्यक्ति होते हैं जो गिड़गिड़ाकर, हाँफते-हाँफते, अनुरोध कर, डाँट खाकर भी लोगों की सेवा का उत्कृष्ट प्रयास करते हैं। ऐसे व्यक्ति को मैं प्रणाम करने लगा।

यही तो इन्सानियत एवं मानवता का जीता जागता उदाहरण है। इन्सानियत ही व्यक्ति का सबसे बड़ा धर्म है। स्वयं को तराशना और दूसरों की मदद

करना ही तो प्रभु का पथ है, सन्देश है, धर्म है, इन्सानियत है, मानवता की पुकार है।

मैं सोचने लगा कि चिकित्सक को जो इस घटनाक्रम से अनुभव हुआ, सीख मिली, आत्मसाक्षात्कार हुआ, निश्चित रूप से भविष्य में आपातकालीन सेवा देते समय उसे अपने इकलौते पुत्र दीपक का चेहरा अवश्य दिखाई देने लगेगा। आपातकालीन सेवाएँ देने के लिए चाहे रात हो या दिन, वह पीछे नहीं हटेगा। कन्धे पर उठाकर दीपक को दौड़ते-भागते चिकित्सा हेतु लाने वाले व्यक्ति को भी वह सदा प्रणाम करता रहेगा। अन्ततः चिकित्सक महोदय ने आपातकालीन सेवाओं में फीस नहीं लेने का निर्णय ले लिया। निस्पृह सेवाभावियों का वे सदैव सम्मान करने लगे।

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! चाहे हमें गिड़गिड़ाना पड़े, अपमानित होना पड़े, हाथ फैलाना पड़े, धक्के खाने पड़े, तब भी हम सेवा का, परोपकार का, करुणा का, दया का, जीवरक्षा का मार्ग न छोड़ें। हे प्रभो! सत्य को जीवन्त रखने के लिए हमें सारे सांसारिक रिश्ते-नाते, सम्बन्धों से ऊपर उठाये रखना, ताकि बेगाने होकर भी हम सत्य की रक्षा कर सकें। हे प्रभो! हमें केवल और केवल इन्सानियत, मानवता का पाठ पढ़ाते रहना, पढ़ाते रहना, पढ़ाते रहना।

-राजनादगाँव (छत्तीसगढ़)

यादगार बनाओ ज़िन्दगी

संकलन : श्री गणपतलाल जैन

1. खुश होकर गुज़ारो ज़िन्दगी तो मस्त है.. ज़िन्दगी।
2. दुःखी होकर गुज़ारो तो त्रस्त है.... ज़िन्दगी।
3. तुलना से गुज़ारो तो पस्त है..... ज़िन्दगी।
4. सीखने में गुज़ारो तो किताब है.... ज़िन्दगी।
5. इन्तजार में गुज़ारो तो सुस्त है..... ज़िन्दगी।
6. दिखावे में गुज़ारो तो बर्बाद है..... ज़िन्दगी।
7. मिलती है एक बार प्यार से बिताओ... ज़िन्दगी।
8. जन्म तो रोज होते हैं यादगार बनाओ... ज़िन्दगी।

-51, जवाहर नगर, गुलाब बाग, बजरिया-
सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (12)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

46. असत्य एवं बुराई का कद कितना भी ऊँचा क्यों न हो, सत्य एवं अच्छाई से हमेशा छोटा ही होता है। अपनी तात्कालिक सफलता अथवा लाभ के लिए कभी भी सत्य के उत्तम एवं सकारात्मक ऊर्जा के स्रोत के मार्ग का त्याग न करें, क्योंकि अन्त में विजय हमेशा सत्य की ही होती है। अच्छाई हमेशा दिल को सुकून देती है और दिमाग पर बोझ नहीं पड़ने देती। यदि आप सत्य के पक्ष में खड़े हैं तो विश्वास कीजिये, आप के मन एवं मस्तिष्क की शक्ति के विरुद्ध संसार की सभी शक्तियाँ कमजोर होंगी और विपक्ष बौना दिखाई देगा। सत्य के मार्ग पर चलने वाला अन्तहीन विपक्षियों के कारण परेशान तो अवश्य हो सकता है, किन्तु पराजित कभी नहीं हो सकता।
47. जब दिमाग कमजोर होता है, परिस्थितियाँ समस्या बन जाती हैं। जब दिमाग स्थिर होता है, परिस्थितियाँ चुनौती बन जाती हैं। किन्तु जब दिमाग मजबूत होता है, परिस्थितियाँ अवसर बन जाती हैं। स्पष्ट है कि परिस्थितियाँ वही होती हैं, किन्तु उनकी प्रकृति एवं उनका हमारे ऊपर प्रभाव हमारे मन एवं मस्तिष्क की अवस्था के अनुसार बदलता रहता है। अतः सत्य यही है कि हमारे स्वयं के जीवन की दिशा एवं दशा पूर्ण रूप से हमारी स्वयं की मनःस्थिति पर ही निर्भर करती है। अपने मन एवं मस्तिष्क को सदैव अपने नियन्त्रण में रखिये। सकारात्मक रहिये, नकारात्मक आचरण का परित्याग करिए। आपकी परिस्थितियाँ स्वतः ही आपके नियन्त्रण में आ जाएँगी।
48. खुद वह बदलाव बनिए, जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं। किसी भी परिवर्तन को किसी दूसरे में देखने के पहले, उस परिवर्तन को स्वयं अपने व्यक्तित्व में लाइये। किसी दूसरे को कोई शिक्षा देने से पहले उसको स्वयं अपने जीवन पर लागू करें। किसी भी शिक्षा को अपनाने हेतु आप किसी को बाध्य तो नहीं कर सकते, किन्तु दूसरों को उस शिक्षा को ग्रहण करने हेतु प्रेरित कर सकते हैं, और उसके लिए आपको स्वयं एक उत्कृष्ट और अनुकरणीय मिसाल बनकर सब के लिए प्रेरणास्रोत बनना होगा।
49. जो व्यक्ति ज्ञान और कर्म को एक रूप में देखता है, वह ही सही मायने में ज्ञानी है। आप ज्ञान और विद्वत्ता का सञ्चय करते रहिये, अपने ज्ञानकोष को निरन्तर बढ़ाते रहिये, किन्तु यदि आपके द्वारा उस ज्ञान को कर्म की कसौटी पर नहीं कसा गया अथवा उसका सदुपयोग आत्म-उत्थान तथा व्यक्तित्व, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान हेतु नहीं किया गया, तो उस ज्ञान का क्या लाभ एवं क्या उपयोगिता? ऐसा ज्ञान पूर्णतः अभिमानी, खोखला एवं दम्भयुक्त किताबी ही रह जाता है। वह ज्ञान, जिसे अर्जित करके स्वहित और परहित रूपी सत्कर्म में परिवर्तित किया जा सके, वही सार्थक है, तथा उसका साधक ही सही अर्थ में ज्ञानी और विद्वान् कहा जायेगा।
50. अगर बुरा वक्त नहीं आता तो, अपनों में छिपे हुए गैर और गैरों में छिपे हुए अपने, कभी नज़र नहीं आते। अच्छा और बुरा वक्त हर किसी के साथ रहता है। लेकिन बुरे वक्त में एक अच्छाई भी है, कष्ट में हमें प्रायः किसी न किसी की मदद की आवश्यकता पड़ती है, और यही एक अवसर है जो हमें दूसरे लोगों की अपने प्रति निष्ठा की सत्यता से अवगत करा देता है। जो लोग केवल आपके सुख के समय साथ देने वाले होंगे, वे लोग किसी न किसी बहाने से आपके बुरे वक्त में आपसे दूर ही रहने का प्रयास करेंगे। ❖

अध्यात्म-साधना का मूल : सम्यग्दर्शन

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

अध्यात्म-साधना का मूल आधार एवं मुक्तिमहल (मोक्ष) का प्रथम सोपान है 'सम्यग्दर्शन'। सम्यग्दर्शन महत्त्वपूर्ण आन्तरिक दृष्टि है जिसके कारण अज्ञान सुज्ञान में, अचारित्र सुचारित्र में तथा अतप (अज्ञान तप) सुतप में परिवर्तित हो जाता है। आत्मा में एक नवीन आलोक का अनुभव होता है।

आत्मस्वरूप की प्रतीति, विश्वास, वीतराग और वीतराग प्ररूपित तत्त्वों पर दृढ़ आस्था होना सम्यग्दर्शन है। अहिंसामय शुद्ध धर्म पर श्रद्धा होना वास्तविक तत्त्व श्रद्धान है और वही सम्यग्दर्शन है। तत्त्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन साधु और श्रावक दोनों के लिए समान रूप से लागू होता है, जबकि गृहस्थों के लिए देव, गुरु और धर्म के प्रति क्रमशः पूज्यत्व, उपास्यत्व और अनुष्ठयेत्व (आचरणीयता) भाव प्रकट करने के लिए तत्त्वत्रय अध्यवसाय रूप है। जड़ और चेतन में, स्व और पर में, आत्मा और पुद्गल में भेदविज्ञान करना सम्यग्दर्शन का वास्तविक कार्य है।

सम्यग्दर्शन का आविर्भाव दो प्रकार से होता है-प्रथम निसर्ग से अथवा स्वभाव से। द्वितीय अधिगम अर्थात् अध्ययन, श्रवण आदि अन्य निमित्त से। निसर्ग और अधिगम के साथ जब अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ तथा दर्शनमोहनीय की तीन प्रकृतियों (मिथ्यात्व, मिश्र और समकित मोहनीय), के क्षयोपशम, उपशम या क्षयरूप अन्तरंग सामग्री मिलती है, तब सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है।

सम्यग्दर्शन रूप कार्य की उत्पत्ति में उपादान कारण स्वयं आत्मा है, क्योंकि सम्यग्दर्शन आत्मा का निजगुण है, मिथ्यात्व उसकी अशुद्ध पर्याय है

और सम्यग्दर्शन उसकी शुद्ध पर्याय है। मिथ्या स्वरूप अशुद्ध पर्याय का व्यय और सम्यग्दर्शन रूप शुद्ध पर्याय का उत्पाद ही सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती, सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति के बिना सम्यक् चारित्र की प्राप्ति नहीं होती। चारित्र के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती और मोक्ष-प्राप्ति के बिना कर्मजन्य दुःखों से छुटकारा नहीं मिलता। सम्यग्दर्शन के अभाव में जो भी क्रियाएँ की जाती हैं वे मोक्षमार्ग से बाहर होने के कारण आत्मा के लिए कल्याणकारिणी नहीं होती।

सम्यग्दर्शन का वास्तविक स्वरूप आन्तरिक रूप से मोहकर्म के भेदन की प्रक्रिया से प्रारम्भ होता है, जो मोहकर्म को तोड़ता हुआ कर्मास्रव को रोककर संवर एवं निर्जरा की साधना करता है। सम्यग्दर्शन होने पर जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है तथा जीवनदृष्टि में ऐसा परिवर्तन घटित होता है कि जो जीवन की दिशा ही बदल देता है। जीवन में फिर **सम** (शत्रु-मित्र पर मित्रभाव रखना अथवा अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ का शमन करना), **संवेग** (मोक्ष की अभिलाषा एवं धर्म में रुचि रखना), **निर्वेद** (संसार से उदासीन होना, भोग में अरुचि, वैराग्य-भाव रखना), **अनुकम्पा** (दुःखी जीवों को देखकर दया करना, उनके दुःखों को दूर करने की भावना रखना) तथा **आस्तिक्य** (जिन वचनों पर दृढ़ श्रद्धा-विश्वास करना) की स्वतः अभिव्यक्ति हो जाती है।

सम्यग्दर्शन समत्वभाव में भी सहायक है। सम्यग्दर्शन से दृष्टि की निर्मलता होती है, दृष्टि की निर्मलता में संकीर्ण स्वार्थ नहीं रहता और न ही

अपना एवं दूसरों का अहित करने की बुद्धि होती है। जीव अनुकूलता और प्रतिकूलता में सम रहता है।

सम्यग्दर्शन अनुपम सुख का भण्डार, सर्वकल्याण का बीज, संसार सागर से पार उतारने का महान् जलयान, चिन्तामणि रत्न के रूप में साधक की अक्षय निधि तथा पारसमणि है, जिसके स्पर्शमात्र से अज्ञान रूपी लोहा ज्ञान रूपी स्वर्ण में

परिवर्तित हो जाता है।

जिनशासन का सार तत्त्व सम्यग्दर्शन मोक्ष गमन का आरक्षण है जो सद्गुरुओं के उपदेशों, सत्शास्त्रों एवं सत्साहित्य के गहन अध्ययन-चिन्तन से प्राप्त होता है।

-“हुकूम”, 5-ए/1, सुभाष नगर, पालरोड़,
जोधपुर-342008 (राज.), 94685-61640

जैनत्व को जन-जन तक पहुँचाएँ

श्री सुगालचन्द जैन

मैं कुछ वर्षों पहले रविवार के दिन गिरजाघर (चर्च) में कौतुहलवश गया। चर्च में मेरा स्वागत दहलीज पर खड़े दो व्यक्तियों द्वारा बड़े आदर और प्रेम से किया गया एवं मुझे अग्र पंक्ति में बिठाया गया। उस समय पादरी प्रभु-भक्ति का उद्बोधन दे रहे थे। उद्बोधन समाप्ति के पश्चात् स्वयं पादरी मुझे गेट तक छोड़ने आये एवं फिर से आने का निमन्त्रण भी दिया।

ऐसा उदार हृदय हमारे धार्मिक स्थानों पर क्यों नहीं अपनाया जाता। जिससे सर्वधर्म, सर्व समुदाय के व्यक्ति जैनदर्शन के प्रति आकर्षित हों। हमारे यहाँ मन्दिरों में साधर्मि-वात्सल्य के नाम पर व्याख्यान के समय निःशुल्क भोजन की व्यवस्था होती है। हमें डर रहता है कि कोई व्यक्ति व्याख्यान के समय भोजन की पंक्ति में आकर नहीं बैठ जाये। इस डर से हम मेहमान का स्वागत भी नहीं कर पाते हैं, न ही उन्हें जैनदर्शन जो कि सच्चे अर्थों में जन-दर्शन है के बारे में अवगत करवाने की चेष्टा करते हैं। ऐसे में मुफ्त भोजन जैसी व्यवस्थाएँ जिन दर्शन को जन-दर्शन बनने में बाधा बनती हैं।

ईसाई एवं मुस्लिम धर्मों के व्यक्ति व्याख्यान आदि श्रवण करने के लिए एवं सेवा, पूजा के लिए गिरजाघर, मस्जिद में नियत समय पर उपस्थित हो जाते हैं। वहाँ पर किसी प्रकार की कोई भोजन-व्यवस्था

नहीं होती। परन्तु हमारे यहाँ व्याख्यान में समय पर पहुँचना तो दूर व्याख्यान समाप्ति तक सामाजिक बन्धुजन पहुँचते हैं एवं व्याख्यान समाप्त होने पर गौतम प्रसादी के लिए कतार में बैठ जाते हैं। इसमें भी कोई स्वधर्मी बन्धु जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर होता है, उसे कार्यकर्ता पंगत से उठा देते हैं अथवा बफे की प्लेट उसके हाथ से खींच लेते हैं। क्या यह सही है? अत्यन्त सोचनीय विषय है।

मेरे अभिप्राय से हर स्थानक, मंदिर में भोजन की व्यवस्था निःशुल्क नहीं होकर शुल्क के साथ हो। निःशुल्क भोजन-व्यवस्था केवल आर्थिक दृष्टि से निश्कतजन के लिए होनी चाहिए। कई स्थानों पर श्रावक चातुर्मासों के बढ़ते हुए खर्चों के कारण चातुर्मास नहीं करवा पा रहे हैं। जिससे जिनवाणी सुनने में व्यवधान पड़ता है। मेरा जैन समाज के कर्णधारों से नम्र निवेदन है कि मन्दिरों एवं स्थानकों में निःशुल्क भोजन-व्यवस्था के बारे में पुनर्विचार करें। चातुर्मास एवं मन्दिर की व्यवस्था कम से कम खर्चीली बनायें।

हमारा ध्यान जैनत्व को जन-जन तक पहुँचाने का हो। जैनदर्शन के अनुयायी धर्म, वर्ण, जाति, समुदाय से मुक्त हों। हमारा प्रयास जन-जन को जैनत्व के रंग में रंगकर संसार में सुख-शान्ति एवं अहिंसा स्थापित करने का हो। आवश्यकता है हमें हमारी सोच को समयानुसार परिवर्तन करने की एवं ऐसे विषयों पर विचार-विमर्श करने की।

-संस्थापक, भगवान् महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई

दो गज़लें

डॉ. दिलीप धींग

(1) बाजारीकरण

साँसें बिकती हैं, आस बिकती है।
 तृप्ति, भूख और प्यास बिकती हैं।
 विश्व का हुआ बाजारीकरण,
 कफ़न बिकता है, लाश बिकती है।
 फसल का कोई अता-पता नहीं,
 अनबोई अनउगी घास बिकती है।
 अरे सन्त भी बन गये सौदागर!
 श्रद्धा यहाँ बिन्दास बिकती है।
 कौन किसके क्या लगता है 'दिलीप'?
 माँ, बहिन, बेटी औ' सास बिकती है॥

(2) फुर्सत किसे है?

पूरी जब उसकी तलाश हो गई।
 पाँखुरी प्रेम की पलाश हो गई।
 स्वार्थ की लपटों से घिरी जिन्दगी,
 मौत से पहले ही लाश हो गई।
 फुर्सत किसे है रखवाली करने की,
 फूलों की फसल घास हो गई।
 आग में ईंधन डालते ही गये,
 तृप्ति स्वयं ही प्यास हो गई।
 'दिलीप' ज्यों-ज्यों बढ़ीं सुविधाएँ,
 साधनाएँ सारी विलास हो गई॥

- 'उमराव सदन', 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002

जीवन को जीना सिखलाएँ

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: दिल है छोटा-सा, छोटी-सी आशा)

जीवन को जीना सिखलाएँ गुरुवर,
 दोषों से बचना बतलाएँ गुरुवर।
 भटके हुए का शरणा है गुरुवर,
 समता-समाधि का झरना है गुरुवर॥
 जीवन को जीना.....॥टेर॥
 अन्धियारे पथ का तुम हो उजेरा,
 डूबते हुए को मिलता तुमसे सहारा।
 कर्मों की बेड़ी में जकड़े हैं हम तो,
 मुक्ति का रास्ता दिखला दो अब तो॥
 श्रद्धा का दूजा नाम है गुरुवर,
 जीवन को जीना.....॥1॥
 जाने-अनजाने हो गई जो भूलें,
 साधना पथ की न बन जाएँ शूलें॥

आलोचना, निंदा, गर्हा करूँ मैं,
 गलियाँ अपनी तेरे सामने धरूँ मैं॥
 आत्म की शुद्धि करवा दो गुरुवर,
 जीवन को जीना.....॥2॥
 आरा है पंचम, दुर्लभ है मुक्ति,
 चर्या तेरी देखूँ, जागे है शक्ति।
 आत्मा के तुम, हो सजग प्रहरी,
 आज्ञा पालन में, बुद्धि है गहरी॥
 जन-जन की आस्था का धाम हो गुरुवर,
 जीवन को जीना.....॥3॥
 कर्मों के जाले, आस्रव के नाले,
 कितने भवों से हमने अन्तर में पाले।
 सान्निध्य तेरा मिला अब जो पावन,
 दोषों का सारे, करना है विलोपन॥
 मुक्ति की मञ्जिल, पहुँचा दो गुरुवर,
 जीवन को जीना.....॥4॥

प्रभो! जन-जन का तूँ मंगल कर

श्रीमती मीमा चौधरी

(28 जुलाई 1945-18 दिसम्बर, 2021)

(विज्ञान कितना ही विकास कर ले पर माँ का विकल्प नहीं ढूँढ़ सकता, क्योंकि माँ का कोई विकल्प इस जगत् में बना ही नहीं है। माँ पहली गुरु है, अनुराग की महादेवी है। ममता और समता का समन्वय है। माँ के बिना तीर्थंकर भी जन्म नहीं ले सकते। माँ सर्वदा पूजनीय और सर्वहितकारिणी है। मेरी माँ हमारे स्वर्गीय पिता श्री सम्पतराजजी चौधरी की धर्मसंगिनी ही नहीं, उनकी ऊर्जा और प्रेरणा भी थीं। उनका प्रेम इतना छलकता था कि स्वतः ही सामने वाला अभिभूत हो जाता था। स्नेह, वात्सल्य, करुणा की प्रतिमूर्ति हमारी माँ ने हमें ये सब प्रियकर गुणसौरभ बचपन से ही घुट्टी में पिलाए और नैतिकता, प्रामाणिकता तथा धार्मिकता का अनूठा समन्वय करना सिखलाया। 'दिल से' मेरी माँ की डायरी से उद्धृत कतिपय सुभाषित हैं। -डॉ. सुनील चौधरी, पुत्र)

- ❁ आनन्द ही शान्ति का सृजन करने में समर्थ है। आपका मन एक शान्ति का बहता अविरल स्रोत है, यह हृदय का सहज गुण है। इस झरने को बहने दो, सम्मुख बैठे भविकजन के मन को इसका स्पन्दन होने दो।
- ❁ जीवन एक अवसर है अर्थात् जीवन का हर पल एक ऐसे अवसर का सृजन करता है जिसका सार्थक उपयोग कर हम जीवन को सार्थक बना सकते हैं।
- ❁ जिस तरह फूल आते हैं और चले जाते हैं, काँटे भी आकर चले जाते हैं। सुख और दुःख भी आते हैं और जाते भी हैं, पर जो जगत् में 'इस चले जाने' का रहस्य जान लेता है वह सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है।
- ❁ 'हाथ पोला तो जगत् गोला' अर्थात् उदार हस्त से जगत् में सब जीवों की सहायता करने वाले के हाथ में पूरा जगत् ही समा जाता है।
- ❁ अब्याबाध सुख का स्रोत आत्मा के ही भीतर है और उसे अपनी प्रज्ञा से जाना जा सकता है।
- ❁ गौतमगणी का राग भी वीर प्रभु महावीर की अनुपम करुणा से अनुराग में बदल गया। अनुराग प्रेम की पराकाष्ठा है, अहो भाव की अभिलाषा है। प्रेम सदा मंगलकारी है। प्रेम आत्मा की सुगन्ध है।
- ❁ प्रेम का हृदय में उदय होना ही प्रभात है, क्योंकि वीर प्रभु की वाणी भी तो प्रेम की ही बात है। प्रेम ही प्रार्थना का ध्येय है, प्रेम ही मुक्ति का पाथेय है।
- ❁ जब अन्त समय आएगा और काल आपको अपने उड़न-खटोले में लेने आएगा, मन ज़रूर बीत गए पलों को एक चलचित्र की तरह देखेगा और पाएगा, कि केवल उन्हीं पलों में ख़ुशी पायी जिसमें प्रेम सम्मिलित है तथा वह दिन धन्य होगा जब हमारे प्रेम का विस्तार होगा और वह प्रभु की भक्ति में परिवर्तित हो जाएगा।

नव प्रभात की प्रथम किरण में, वन्दन करती मैं झुककर।

प्रभु मेरा दिन तूँ मंगलकर, जन-जन का तूँ मंगलकर॥

जीवों को नहीं सताऊँ मैं, दुःखियों की पीर मिटाऊँ मैं।

मैं जग से जाऊँ हँस-हँसकर, प्रभु तूँ मेरा दिन मंगलकर॥

-जी 1001, आग्रवाली सेफायर, सेक्टर-45, नोयडा (उत्तरप्रदेश)

नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

युवक परिषद् करती आह्वान

श्री मन्नीष मेहता

जीवन में मानव सदा से ही दुर्लभ को देखना चाहता है। भौतिक रूप से संसार के आश्चर्यों को देखने को उपलब्धि मानता है। जो कुछ भी पाना अतिदुष्कर हो, असम्भव हो, उसी के पीछे दौड़ता है। सांसारिक सुखों और भोगों की ओर हमारी दौड़ इसी का प्रमाण है। रत्नसंघ में 9 दिसम्बर, 2021 को हुई 13 जैन भागवती दीक्षाएँ भी ऐसा ही विलक्षण क्षण था। ऐसे अद्भुत क्षण के साक्षी होने के लिए हजारों की संख्या में लोग देश के कोने-कोने से पीपाड़शहर आए। अनुमोदना का भाव लिए उस कस्बे में नगर जैसा आभास हुआ। मनोगत भाव इतने उत्कृष्ट थे कि ऐसा आभा मण्डल निर्मित हुआ कि वहाँ के कुरैशी समाज ने दीक्षा दिवस पर अपना समस्त कारोबार बन्द करने की घोषणा की, जीवों को अभय दान मिला। हम सभी अपने-अपने पुण्य की सराहना करने लगे कि हमें ऐसे उत्कृष्ट अवसर का हिस्सा बनने का सुअवसर मिला। वास्तव में भला तो उस जीव का होता है जो संयम पथ पर बढ़ता है तथापि उनकी सराहना से, अनुमोदना से कहीं-न-कहीं हमारी आत्मा को भी सच्चे सुख का किञ्चित् आस्वादन हुआ। कहा जाता है कि जब कोई मोक्ष जाता है तब उस क्षणमात्र के लिए नारकियों को भी सुख मिलता है वैसा ही हमारे साथ हुआ। चारित्र लेने वाले महापुरुषार्थी जीवों के कल्याण के मंगल भाव के साथ हमने स्वयं के लिए भी ऐसे भाव निरन्तर भाये कि ऐसा क्षण हमारे जीवन में भी उपस्थित हो। प्रभु महावीर के बताए उस उत्तम मार्ग पर अपने चरण बढ़ाने के भाव भी परम सुखदायी एवं फलदायी हैं ऐसा मनोरथों के चिन्तन में आता है।

हमें अतीव प्रसन्नता एवं फक्र है कि दीक्षार्थियों में युवाओं का जो अनुपात है वह इसका प्रमाण है कि युवा

धर्म से जुड़ा है। प्रभु महावीर ने फरमाया है कि युवा अवस्था धर्म से जुड़ने के लिए सबसे उत्तम समय है। धर्म से जुड़ना हमारे मुक्ति पथ को आसान करता है। भोगों से जुड़ने पर यह मार्ग अधिक परिश्रम एवं पुरुषार्थ साध्य बन जाता है। अतः सभी युवाओं को धर्म-मार्ग में यथाशीघ्र प्रवृत्त होने का आचरण करना चाहिए। जिन्होंने किया है, जो कर रहे हैं और जो करेंगे उन सभी का अभिनन्दन एवं अनुमोदना।

दीक्षा के इस पावन प्रसङ्ग पर हम सभी के जीवन में भी स्थायी विकास हो, उपलब्धि जुड़े, इस आशय से युवक परिषद् की ओर से आह्वान है कि-

अहिंसा व्रत के पचचक्रान-भगवान महावीर के जिनशासन में व्रतों का बहुत महत्त्व है। इस पथ के अनुगामी चारित्रिक आत्मा जहाँ छह काया के जीवों को अभयदान करते हैं वहाँ हम इस प्रथम व्रत को लेकर कम से कम स्थूल हिंसा का त्याग अवश्य करें।

स्वाध्याय-प्रबल प्रतापी महान् पूज्य गुरुवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने सामायिक-स्वाध्याय का जयघोष दिया, हमारी आस्था के केन्द्र पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. सदैव हमें इसकी प्रेरणा करते हैं तथा भावी आचार्य महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. निरन्तर अप्रमत्त भाव से स्वाध्याय में लीन रहते हैं। हमें इन सभी से प्रेरणा लेकर 13 नवदीक्षितों से प्रभावित होकर कम से कम 13 मिनट के नियमित स्वाध्याय के नियम तो लेने ही चाहिए।

सन्त-सती दर्शन-हमारी आत्मा को रिचार्ज करने के लिए, हमारी प्रकृति एवं प्रवृत्ति में समानता के लिए, उन्नत जीवन जीने के लिए, भावों की अभिवृद्धि के लिए, पुण्य के संवर्धन के लिए सन्त-सतियों के दर्शन, सेवा एवं वन्दन सबसे आसान उपाय हैं। 13

नवदीक्षितों की इस संयमयात्रा की स्मृति में, सकारात्मक अनुमोदना की दृष्टि से (1 + 3 = 4) प्रत्येक चार माह में कम से कम सन्त-सतियों के एक सिंघाड़े के सपरिवार दर्शन की सद्प्रेरणा युक्त परिषद् कर रहा है। अतः इस नियम को अवश्य स्वीकार करें।

आप इस बात से सहमत होंगे कि बिना नियम के कुछ दिन तक तो व्यक्ति किसी कार्य को कर लेता है, पर कारण होते ही वह छूट जाता है। हमारे नवदीक्षितों ने संसार छोड़ दिया, संयम जीवन अङ्गीकार कर लिया तो क्या हम उन्हें भेंट स्वरूप सदैव के लिए नहीं ले सकते। आप भगवान की वाणी का अनुसरण करते हुए इन भावों को तुरन्त देव, गुरु, धर्म की साक्षी से संकल्पबद्ध करें, इसी क्षण एवं सन्त-सतियों के प्रथम दर्शन के साथ नियम लेकर पक्का कर लें, टालें नहीं, क्योंकि वीर प्रभु

का सन्देश है कि-“जैसे सुख उपजे वैसा करो, पर धर्म कार्य में विलम्ब मत करो।”

हम सभी भावना भायें कि हमें भी सुअवसर मिले। हम भी वीर पथगामी बनें और इसके लिए ये छोटे-छोटे नियम बड़े कारगर सिद्ध होंगे।

समस्त जीवों के उत्कृष्ट एवं मंगल के भाव लिए, सभी चारित्रिक आत्माओं के चरम लक्ष्य की प्राप्ति की वीर प्रभु से मंगल प्रार्थना के साथ, संयम पथ पर चरण बढ़ाने वाले, इस पथ के अनुरागी साधकों के लिए शुभ भावना रखते हुए सभी को सादर जय जिनेन्द्र!

-अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, इन्कम टैक्स कॉलोनी, टॉक रोड, जयपुर-302015 (राजस्थान)

गुरु हीरा कृपा से

महासती श्री रुचिताजी म.सा.

गुरु हीरा कृपा से, तीजे पद को पाया है
भावी आचार्य के अन्तर में हीरा समाया है
अर्पण और समर्पण से ही, तीजे पद को पाया है।
भावी आचार्य के अन्तर में हीरा समाया है।।1।।
धायमात्री सम गुरुदेवा, नंदीषेण सी अनमोल सेवा
वात्सल्यमूर्ति है गुरुदेवा,
तन-मन से करे संघ की सेवा
गुरु महेन्द्र को पाकर शासन लहराया है।
भावी आचार्य के अन्तर में हीरा समाया है।।2।।
वाचना से झलकते सुधर्मा स्वामी,
पृच्छना में लगते गौतम स्वामी
परिवर्तना में पूर्व अनुगामी,
अनुप्रेक्षा में उच्च परिणामी
स्वाध्याय की पर्यायों में दिन-रात लगाया है
भावी आचार्य के अन्तर में हीरा समाया है।।3।।
देशना लगती सभी को रुचिकर,
सरस व्याख्यानी है नववें पट्टधर।

द्वय आचार्य सबको प्रियंकर, वर्तमान के हैं तीर्थंकर
अहो भाग्य से हमने, ऐसे गुरु को पाया है
भावी आचार्य के अन्तर में हीरा समाया है।।4।।

-संकलन : श्रीमती बीना मेहता, जोधपुर

वन्दना हमारी है

श्री धर्मचन्द्र जैन

माँ सोहनी के नन्द, लोढ़ा पारस के चन्द,
तेरी धीरता-गम्भीरता, विनम्रता अपारी है....
जोधाणा में जन्म पाये, दीक्षा भी जोधाणा पाये,
आगम अध्येता बन, ज्योति विकसायी है।।
संयम में सजगता देखो, जीवन में सरलता देखो,
संघनायक निष्ठा देखो, रोम-रोम में बसायी है।।
संवत्सरी की पावन घड़ी, पीपाड़ शहर माँहि,
महान् अध्यक्षसायी जी को, भावी आचार्य प्रदायी है।।
धाय माता पद धारी, सहनशील तप भारी,
महेन्द्र नाम गुण धारी, संघ दीप्ति चमकायी है।।
ऐसे भावी आचार्य के, चरण कमल माँहि,
पल-पल कोटि-कोटि, वन्दना हमारी है।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

महामनस्वी कविप्रवर श्री तिलोकऋषिजी म.सा.

श्री एस. सी. कटारिया

मालव भूमि में हर युग, हर काल में धर्म की ध्वजा ऊँची रही है। महापुरुषों के तप-त्याग ने विश्व में इसे मान-सम्मान दिलाया है। जैन श्रमणों की पावन शृङ्खला में कविकुल भूषण पूज्य श्री तिलोकऋषिजी म.सा. का नाम एक भास्वर नक्षत्र के रूप में आज भी प्रकाशित हो रहा है। उन्होंने अपनी अल्प आयु में ही जैनधर्म को गौरवान्वित कर कुल, परिवार तथा नगर को धन्य किया।

‘रतनपुरी का रूँखड़ा, भला बताया राम।

भूखा ने भोजन मिले, धाप्या ने विश्राम।।’

मालवा की शस्य श्यामला धरती जो अपनी डग-डग रोटी पग-पग नीर की उक्ति के लिए प्रसिद्ध है, वीर भोग्या वसुन्धरा माँ भारती के माटी, धर्म-साहित्य और कलाधरा जैसे महिमामय पवित्र भू-भाग में स्थित रत्नललाम (रतलाम) पर विक्रम सम्वत् 1904 की चैत्र कृष्णा तीज बुधवार (सन् 1847) को धार्मिक पारमार्थिक संस्थाओं को संरक्षण देने वाले सुसंस्कृत सुश्रावक पिता श्री दुलीचन्दजी सुराणा के घर पर माता नानूबाईजी की पावन कुक्षि से पूज्यपाद तिलोकऋषिजी का जन्म हुआ। रतनपुरी के अनमोल रत्न, रतलाम की माटी के गौरव ने अपनी विद्वत्ता, विराट् कवित्व और कला की प्रतिभा से जन-जीवन तथा धार्मिक जगत् को अचम्भित किया। अल्प आयु में ही उन्होंने सत्तर हजार श्लोकों की काव्य रचना कर डाली।

श्रावक प्रतिक्रमण में जो पाँच पदों के जो सवैया हैं, वे भी आपश्री द्वारा ही रचित हैं। आपके छन्द और श्लोक लोकप्रिय हैं।

आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के आप दादा गुरु थे। आचार्यश्री का इन छन्दों पर बड़ा

विश्वास था, उनका नियम था, जब तक वे छन्द पद नहीं गाते तब तक विहार नहीं करते थे। पूज्यप्रवर एक उच्च कोटि के विद्वान् कवि और आगम ज्ञाता ही नहीं, बल्कि कुशल शिल्पी एवं चित्रकार भी थे। वे अपने दोनों हाथों एवं पैरों से लिखने, चित्र बनाने में सिद्ध महापुरुष थे।

आपने जैन आगम शास्त्र, सिद्धान्त और तत्त्वज्ञान पर आधारित कई चित्र बनाए। मात्र पच्चीस वर्ष छह माह के संयम-जीवन में उन्होंने विलक्षण ज्ञान, लेखन एवं प्रवचनों से जिनशासन की प्रचुर प्रभावना की। महाराष्ट्र में जैनधर्म की अलख जगाने वालों में वे प्रथम स्थानकवासी ऋषि मुनिराज थे। अहमदनगर में पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी म.सा. के पधारने का अवसर बना, उनके पदार्पण की सूचना एक सुश्रावक ने वहाँ की धर्मनिष्ठ सुश्राविका को दी। वह श्राविका इस शुभ समाचार से इतनी प्रफुल्लित हुई कि उसने समाचारदाता को अपना स्वर्णकंकण भेंट कर दिया। यह घटना पूज्य श्री तिलोकऋषिजी म.सा. के विमल यश और विपुल प्रभाव का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

जैनधर्म के इतिहास में उत्कृष्ट त्याग और साहस के ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनमें माता-पिता, पुत्र और पूरा परिवार ही संयम के कठिन मार्ग पर सरलता से अग्रसर हुआ है। वर्तमान में भी ऐसे प्रसङ्गों को सुन देखकर लोग चकित हो जाते हैं और धर्म की त्रैकालिक महत्ता के प्रति श्रद्धावनत हो जाते हैं। श्री तिलोकऋषिजी म.सा. और उनके परिवार के दीक्षा के निर्णय के समय भी ऐसा ही अचरज हुआ था।

विक्रम सम्वत् 1914 को माघ कृष्णा प्रतिपदा गुरुवार को गुरुप्रवर अयवन्ताजी म.सा. से माता, पुत्री और दोनों पुत्रों ने जैन आर्हती दीक्षा अङ्गीकार कर ली।

उस समय श्री तिलोकऋषिजी म.सा. की लघु वय नौ वर्ष दस माह थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी ऐसे विलक्षण मुनिराज के जीवन, काव्य-साहित्य और कलाकृतियों पर शोध प्रबन्ध लिखे जा सकते हैं। (डॉ. मंजुलाजी बम्ब, जयपुर ने श्री तिलोकऋषिजी की काव्य साधना पर शोधप्रबन्ध लिखकर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की है।) पूज्य श्री गणेशमुनिजी म.सा. के शब्दों में आपके द्वारा निर्मित चित्र आज इतिहास के महत्त्व को प्रदर्शित करते हैं। उनकी पुनीत-स्मृति में स्थापित श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन परीक्षा बोर्ड, पाथर्डी (अब अहमदनगर) के माध्यम से देशभर में जैनतत्त्व, ज्ञान, सिद्धान्तों का सघन और व्यापक प्रचार हो रहा है। जैन जगत् के ज्योतिर्धर सन्तसाधक रतलाम नगर के गौरव

सुराणा कुल दीपक ऐसे महिमावन्त यशस्वी मुनीश्वर श्री तिलोकऋषिजी म.सा. का मात्र 36 वर्ष की अल्पायु में विक्रम सम्वत् 1940 (सन् 1883) में अहमदनगर में स्वर्गगमन हो गया था। गुरुप्रवरश्री के देवलोक गमन के समाचार सुनकर हुकमगच्छ के आचार्य पण्डित श्री उदयसागरजी म.सा. ने कहा-“आज स्थानकवासी जैन समाज का एक सूर्य अस्त हो गया।” स्वामी विवेकानन्द के समकक्ष माने गए रत्नत्रय के आराधक पूज्यश्री तिलोकऋषिजी म.सा. की पवित्र पावन स्मृति को आत्मीय श्रद्धार्चन करते हुए शत-शत वन्दन-नमन।

-रतलाम (मध्यप्रदेश)

सुख का आधार : शाकाहार

श्री कस्तूरचन्द बाफणा

सारा जगत् मौत के साये में, कारण है कोरोना।
विश्व में हाहाकार मचा,
समझ नहीं आता क्या करना।।
जैसे-तैसे एक साल बीता, दूसरी शुरु हुई लहर।
हर आदमी भयभीत है,
इसका और भारी है कहर।।
दुनिया दुःख झेल रही, कोरोना का है प्रभाव।
दुःख का कारण एक ही, करुणा का है अभाव।।
प्राणिमात्र मित्र मेरे, सबको हैं प्राण प्यारे।
जीओ और जीने दो का,
सिद्धान्त हर आदमी धारे।।
मारने वाला तो मरता है, बचाने वाला बलवान।
जो चाहो अभय होगा,
प्राणिमात्र को दो अभयदान।।
नानाविध बम बनाकर दम्भ भरता है प्राणी।
कोरोना ने हवा निकाली जैसे बर्फ हुआ पानी।।

मानव-मानव का शत्रु, किससे करेगा यारी।
चमन वीरान हो रहा, देख रही दुनिया सारी।।
जग में जगह नहीं जीने को,
श्मशान का है बुरा हाल।
अन्तिम क्रिया में भी वेटिंग नम्बर,
कोरोना कितना है विकराल।।
ऐ मानव अपना अहं छोड़,
कुदरत की ताकत मान ले।
इंसानियत को अपना, हैवानियत को त्याग दे।।
पापभीरु बन प्राणी, पाप देता है सन्ताप।
करुणा में ताकत भारी, हर लेती जो हर सन्ताप।।
मत करो खोटे काम,
करने वाले को रोना पड़ता है।
शुभ काम करो निज हार्थों से,
कोरोना यही तो कहता है।।
ऐ मानव जीवन में चाहे जो सदा बहार।
सुखी जीव एक मन्त्र, अपना ले शाकाहार।।

-आर. सी. बाफणा ज्वैलर्स, सुभाष चौक,
जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

संसार भावना

संकलनकर्ता-श्री लड्डूलाल जैन (देवली वाले)

अनित्य भावना में संयोगों की क्षणभंगुरता, अशरण भावना में संयोगों की अशरणता और संसार भावना में उन्हीं संयोगों की निरर्थकता बताई जाती है।

संसार भावना का लक्षण-

छन्द

चहुँ गति दुःख जीव भरै हैं, परिवर्तन पंच करै हैं।
सब विधि संसार असारा, यामे सुख नहीं लगारा॥
पर द्रव्यन ते प्रीति जो, है संसार अबोध।
ताको फल गति चार में, भ्रमण कह्यो श्रुत शोध॥
दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहु न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान॥

यह संसार दुःखों का महासागर है। पूर्व कर्मों का फल भोगता हुआ यह जीव चार गतियों में भ्रमण करता रहता है तथा जन्म, जरा, रोग और मरण आदि के दुःख भोगता रहता है। संसार में ऐसे दुःखमय स्वरूप का विचार कर उससे विरक्त होना संसार भावना है।

जीव की अशुद्ध पर्याय ही संसार है। मिथ्यात्व और अज्ञान के कारण चारों गतियों में दुःख भोगता हुआ पंच परावर्तन (द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव तथा भाव) रूप करता रहता है, किन्तु कहीं शान्ति प्राप्त नहीं करता, इसलिए संसार भाव सर्व प्रकार से सार रहित है, उसमें किञ्चित्मात्र सुख नहीं है।

अज्ञानी जीव के द्वारा जिस प्रकार सुख की कल्पना की जाती है, वैसा सुख का स्वरूप ही नहीं है। जिसमें अज्ञानी जीव सुख मानता है, वह वास्तव में सुख नहीं है, वह तो पर द्रव्य के आलम्बन रूप मलिन भाव होने से आकुलता उत्पन्न करने वाला दुःख रूप भाव है। सम्पूर्ण जगत् को छान मारा, पर संयोगों में कहीं सुख दिखायी नहीं दिया। यदि निर्धन धन के अभाव में दुःखी

है तो धनवान भी कहाँ सुखी हैं, वे भी तो तृष्णावश होकर दुःखी ही दिखाई देते हैं।

हमारी स्वयं की आत्मा ही सुखमय है, उसके ध्रुव-स्वभाव में संसार है ही नहीं। स्वान्मुखता पूर्वक ऐसा चिन्तन करके सम्यग्दृष्टि जीव, वीतरागता में वृद्धि करता है, यही संसार भावना है। संसार भावना संसार की असारता दर्शाने वाली है।

छन्द

मन्थन करे दिन-रात जल, घृत हाथ में आवे नहीं।
रज-रेत पेले रात-दिन, पर तेल ज्यों पावे नहीं॥
सद्भाग्य बिन ज्यों सम्पदा, मिलती नहीं व्यापार में।
निज आत्मा के भान बिन त्यों सुख नहीं संसार में॥

जिस प्रकार जल का मन्थन चाहे रात-दिन ही क्यों न करें, पर उसमें से घी की प्राप्ति सम्भव नहीं है; इसी प्रकार रेत को रात-दिन ही क्यों न पेले, पर उसमें तेल का निकलना सम्भव नहीं है। जिस प्रकार सद्भाग्य के बिना व्यापार में सम्पत्ति की प्राप्ति सम्भव नहीं है उसी प्रकार निज आत्मा को जाने बिना संसार में सुख की प्राप्ति सम्भव नहीं है। यह एक ऐसा महासत्य है, जिसके जाने बिना संसार में विरक्ति और आत्म सन्मुख दृष्टि होना सम्भव नहीं है।

अनन्तकाल नित्यनिगोद में बिताकर किसी तरह यह जीव वहाँ से निकलता है तथा चार गति रूप संसार जीव राशि में आता है। सम्यक्त्व प्राप्त करने तक जीव चार गतियों में डोलता हुआ पाँच प्रकार के परावर्तन किया करता है तथा दुःख भोगता रहता है। सम्यक्त्व प्राप्त होने पर जीव पंच परावर्तन के चक्र से निकल जाता है तथा उसका संसार सीमित हो जाता है।

नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य तथा देव ये चार गतियाँ हैं।

ये चारों गतियाँ दुःख रूप ही हैं। तिर्यञ्च के एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय तथा पञ्चेन्द्रिय के भेद से तीन प्रकार हैं—पाँच प्रकार के स्थावर एकेन्द्रिय होते हैं। वे प्रचुर भावकलंक सहित होते हैं तथा जन्म-मरण का दुःख भोगते रहते हैं। एकेन्द्रियों में उत्पन्न होने पर जीव वहाँ अनन्तकाल बिताता है। विकलेन्द्रिय (दो से चार इन्द्रिय) जीव संज्ञाओं का तथा अन्य जीवों द्वारा मार दिया जाने का दुःख भोगते रहते हैं। पञ्चेन्द्रिय पशु भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, छेदन-भेदन, प्रताड़ना तथा अन्य सबल पशुओं, मनुष्यों द्वारा मार दिया जाने का दुःख भोगते रहते हैं। वक्र परिणाम, ज्ञान की विराधना तथा एकेन्द्रियादि जीवों की बहुत हिंसा तिर्यञ्चगति में उत्पन्न होने के कारण है।

नरकों में अकल्पनीय दुःख है। नरक सात हैं, वहाँ आगे के नरकों में दुःखों की अधिकता होती जाती है। नारकी को क्षणमात्र भी सुख नहीं होता। जहाँ दुःखों के कारण एक समय भी बिताना कठिन होता है ऐसे नरकों में नारकी को कम से कम दस हजार (10,000) वर्ष तथा अधिकतम 33 सागर तक रहना होता है। नारकी दुःखों से घबराकर मरना चाहते हैं, लेकिन आयु के पूर्ण होने पर ही मरण होता है। जीवों के निर्दयतापूर्वक घात, तीव्र पाप तथा बहुत परिग्रह के कारण जीव नरकों में उत्पन्न होता है।

देवगति में ईर्ष्या, हीन भावना, पराधीनता तथा इष्ट वियोग सम्बन्धी अनेक मानसिक दुःख हैं। छह मास पूर्व मृत्यु का आभास हो जाने पर देव मरण तथा परलोक के भय से दुःखी रहते हैं। मनुष्य गति में इष्ट

वियोग, अनिष्ट संयोग, रोग-वेदना, अपङ्गता, निर्धनता, भविष्य की आशंका, भय आदि अनेक दुःख देखे जाते हैं। इस प्रकार संसार में चारों गतियों में दुःख ही है, संसार में सुख मानना भूल है।

मिथ्यात्व और कषाय के कारण जीव चार गति पंच परावर्तन के चक्र में फँसा हुआ दुःख भोगता रहता है। सम्यक्त्व प्राप्त करने पर जीव इस चक्र में से निकल जाता है, अन्य कोई उपाय नहीं है। इस प्रकार संसार में दुःखमय स्वरूप का तथा उससे निकलने का चिन्तन करना संसार भावना (अनुप्रेक्षा) है।

गहराई से विचार करें तो दुःख का ही दूसरा नाम संसार है। अनादिकाल से चतुर्गति में भटकते हुए इस जीव ने अनन्त दुःख भोगे हैं और निरन्तर भोग रहा है। बड़े ही भाग्य से सहज ही विचारशक्ति और विचार का अवसर प्राप्त हो गया है। अतः अवसर चूकना योग्य नहीं है। संसार में सुख की कल्पना में उलझे रहकर यदि यह अवसर चूक गया तो फिर चार गति चौरासी लाख योनियों में भटकने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रहेगा। अतः संसार की असारता जानकर सारभूत निज शुद्धात्मा की आराधना में ही सार है।

संसार भावना सम्बन्धी इस प्रकार के विचार-चिन्तन-मनन-घोलन की सार्थकता तभी है, जब चिन्तक की दृष्टि, उपयोग और ध्यान पर संयोगों से हटकर स्वभाव सन्मुख हो और जीव अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव करे।

-139, महावीर नगर, इन्दौर (म.प्र.)

प्रेरणास्पद वचन

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया

- ✿ जहाँ माँ-बाप का सम्मान हो वही परिवार होता है।
- ✿ हँसता हुआ मन, और हँसता हुआ चेहरा, यही हमारी सच्ची सम्पत्ति है।
- ✿ यदि नीयत हमारी अच्छी है, तो घर में ही मथुरा-काशी है।
- ✿ ज़िन्दगी में कसम, क़दम और कलम सोच-समझकर उठानी चाहिये।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

मुक्ति का राही (मुक्तिपथिकः)-तत्त्वावधान-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.। काव्यरचना-मूल-हिन्दी-श्री सम्पतराज चौधरी। संस्कृत रूपान्तर-डॉ. शम्भुदयाल पाण्डेय, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2. जोधपुर-0291-2624891, 3. अहमदाबाद 94293-03088, 4. बेंगलोर-98441-58943, 5. जोधपुर-94610-26279, 6. जलगाँव-94225-91423, द्वितीय संस्करण-संस्कृत रूपान्तर के साथ 2021, पृष्ठ-374 + 30 = कुल 404, मूल्य-500 रुपये।

मुक्ति का राही (मुक्ति-पथिकः) आचार्यश्री हस्ती के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति है। प्रस्तुत काव्य-रचना के रचनाकार श्री सम्पतराज चौधरी हैं, जिन्होंने हिन्दी भाषा में पद्यरचना की है और डॉ. शम्भुदयाल पाण्डेय ने इसका संस्कृत-रूपान्तर किया है। प्रस्तुत रचना में लेखक ने आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के जीवन को संक्षिप्त रूप से काव्य में प्रस्तुत किया है। इसमें 839 पद्य/छन्द हैं एवं चार गीत हैं। जीवनी का प्रत्येक चरण अलग-अलग अध्यायों में विभक्त है। यह एक खण्डकाव्य है। प्रस्तुत रचना में लेखक ने आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के बचपन से लेकर उनके समाधिमरण तक की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं और प्रसङ्गों का सुन्दर चित्रण काव्य-पद्यों में किया है और उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भी विस्तार से लयबद्ध पद्यों में मनोरम चित्रण किया है। अनेक प्रसङ्ग एवं संवाद ऐसे हैं, जो हृदयस्पर्शी हैं। माँ-बेटे का संवाद, आचार्यपद, महाप्रयाण आदि के प्रसङ्ग अत्यन्त भावप्रधान एवं वैराग्यरस से परिपूर्ण हैं। आचार्यश्री के

जीवन के हृदयस्पर्शी प्रसङ्गों का भी इसमें विस्तार से मनोहारी वर्णन किया गया है। आचार्यश्री की प्रेरणा से समाज में एकता स्थापित होने की घटनाओं का भी समुचित वर्णन हुआ है।

प्रस्तुत रचना का संस्कृत-रूपान्तर भी बहुत ही सुन्दर, शुद्ध एवं यथार्थ भावों से परिपूर्ण है, जिसको पढ़ने से भी विशिष्ट आनन्द की अनुभूति होती है।

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के नीचे विभिन्न आगमों के प्रासङ्गिक उद्धरण गाथा/श्लोक अर्थ सहित दिये गये हैं, जो सारभूत एवं शिक्षाप्रद हैं। सम्पूर्ण रचना ही लय के साथ गाकर पठनीय है, जिसके पठन से विशेष आनन्दानुभूति होती है और आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धा के भाव पैदा होते हैं। यथास्थान दिये गये गीत भी कण्ठस्थ कर गाये जाने योग्य हैं।

पुस्तक के परिशिष्ट में आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की जीवन-यात्रा प्रस्तुत हुई है और रत्नसंघ की आचार्य-परम्परा का भी विस्तृत उल्लेख है। साथ ही पारिभाषिक शब्दों की भी व्याख्या की गई है, जिसमें विषय-वस्तु को समझने में सहायता मिलती है। अन्त में प्रस्तुत जीवनी ग्रन्थ में प्रयुक्त नैसर्गिक चित्रों का प्रतीकात्मक अर्थबोध भी दिया गया है।

जार्न, कैसे हैं हमारे धर्माचार्य-धर्मगुरु-लेखक-नौरतनमल मेहता। प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2. जोधपुर-0291-2624891, 3. अहमदाबाद 9429303088, 4. बेंगलोर-9844158943, 5. जोधपुर-9461026279, 6. जलगाँव-9422591423, प्रथम संस्करण-विक्रम संवत् 2078, कार्तिक शुक्ला षष्ठी, नवम्बर 2021, पृष्ठ-61 + 10 = कुल 71, मूल्य-20 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन आचार्यश्री हीरा के 59वें दीक्षा-दिवस के पावन अवसर पर किया गया है। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक के प्रारम्भ में आचार्यश्री

हीराचन्द्रजी म.सा. की जीवन-रेखा को प्रस्तुत कर सार-रूप में संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है। इसके अध्ययन से ही पाठक को आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं परम्परा के मूल पुरुष से लेकर पूर्ववर्ती आचार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त हो जाती है। आचार्यश्री का साधु-साध्वियों के लिए सन्देश एवं विहार-सेवा में श्रावक वर्ग का विवेक भी पठनीय एवं अनुकरणीय है। सामायिक एवं स्वाध्याय हेतु आचार्यश्री की मुख्य प्रेरणा रहती है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जन्म, बचपन, विरक्त भावना, दीक्षा, मुनि-जीवन और गुरु के मिशन में सहयोग का विवेचन किया है। साथ ही आचार्यश्री हस्ती के अन्तिम चातुर्मास, संथारा, श्रद्धाञ्जलि सभा का वर्णन करते हुए आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चादर महोत्सव एवं वक्ताओं की शुभकामनाओं का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में संघनायक पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का सारगर्भित प्रेरक उद्बोधन भी सन्निहित है। आचार्यश्री हीरा के तीन दशक के शासनकाल की प्रमुख उपलब्धियों का विशद एवं विस्तृत विवरण दिया गया है। आचार्यश्री के शासन काल में सम्पन्न दीक्षा-महोत्सवों तथा चातुर्मास की सूची भी दी गई है। विभिन्न सम्मेलनों का भी वर्णन किया गया है। आचार्यश्री के व्यक्तित्व, उनकी विशेषताओं और कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का भी जीवन-परिचय देते हुए उनके एवं अन्य मुनियों के उद्गारों का भी संक्षेप में समावेश किया गया है।

जैनधर्म-लेखक-प्रोफेसर के. एल. कमल, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) दूरभाष-0141-2520230 Email : prabharati@gmail.com, प्रथम संस्करण-2021, ISBN : 978-93-92317-06-04, पृष्ठ-96 + 7 = 103, मूल्य-180 रुपये।

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक की एक नवीनशैली में रचना की है। पुस्तक का पूरा शीर्षक है-शान्ति, समृद्धि, मैत्री का सङ्गम जैनधर्म : अहिंसक विश्व हेतु अपनाएँ तीर्थङ्कर महावीर का मार्ग। लेखक ने जैनधर्म के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित होकर उसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करते हुए वर्तमान में प्रासङ्गिकता को प्रकट किया है। सात अध्यायों में विभक्त पुस्तक के प्रथम अध्याय में संक्षेप में जैनधर्म के सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में जैनधर्म की विशेषताओं का सुन्दर वर्णन किया गया है और चतुर्थ अध्याय में तीर्थङ्कर महावीर के व्यक्तित्व का विशद वर्णन है। लेखक ने पञ्चम अध्याय में महावीर के पञ्चशील दर्शन का विस्तृत वर्णन किया है और षष्ठ अध्याय में भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता एवं महत्त्व को रेखाङ्कित किया है। सातवाँ अध्याय अति महत्त्वपूर्ण है जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार से हम भगवान महावीर के सिद्धान्त अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त को अपनाकर विश्व-शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

पुस्तक के अन्त में कतिपय श्वेताम्बर एवं दिगम्बर जैन समाज के लब्ध प्रतिष्ठ साधुओं, साध्वियों एवं जैन विद्वानों की पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। लेखक का प्रयास एवं दृष्टि प्रशंसनीय है।

प्राकृत आगम साहित्य में पर्यावरण-लेखक-डॉ. तारा डागा, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) दूरभाष-0141-2520230 Email : prabharati@gmail.com, प्रथम संस्करण-2021, ISBN : 978-81-952891-1-0, पृष्ठ-370 + 25 = 395, मूल्य-350 रुपये।

डॉ. तारा डागा ने पी-एच.डी. के पश्चात् पोस्ट डॉक्टर फैलो के रूप में 'प्राकृत आगम साहित्य में पर्यावरण' विषय पर शोधकार्य किया। उसी का परिणाम यह ग्रन्थ है। इसमें उन्होंने अब तक के प्राकृत आगम

साहित्य के ज्ञान का मन्थन करके सार-रूप में नवनीत के समान वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। पर्यावरण संरक्षण की वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में आवश्यकता है। इसके लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार तथा अनेक संस्थाएँ कार्य कर रही हैं, परन्तु फिर भी जन-सामान्य को पर्यावरण-संरक्षण के महत्त्व की जानकारी एवं प्रेरणा होना जरूरी है। पर्यावरण को दूषित होने से बचाना हम सबका कर्तव्य है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में प्राकृत भाषा में रचित आगमों में जो पर्यावरण संरक्षण के सूत्र बताये गये हैं, उनकी विस्तार से व्याख्या कर समझाने का सुन्दर एवं सार्थक प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की भूमिका में ही लेखक ने विस्तार से शोध प्रबन्ध की विषय-वस्तु का अध्याय के क्रम से संक्षेप में विवेचन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। लेखिका ने प्रथम अध्याय में पर्यावरण विज्ञान को विस्तार से समझाया गया है और पर्यावरण को विभिन्न दृष्टियों से परिभाषित किया है। द्वितीय अध्याय में प्राकृत आगम साहित्य में वर्णित पर्यावरण विषयक सूत्रों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया है। तृतीय अध्याय में प्राकृतिक पर्यावरण भूमि, जल, वायु एवं जैविक पर्यावरण के संरक्षण का वर्णन है। वनस्पति-सम्बन्धी पर्यावरण की विस्तार से चर्चा की गई है। पर्यावरण के क्षेत्र का विस्तार करते हुए चतुर्थ अध्याय में मनोवैज्ञानिक पर्यावरण को भी शामिल कर लिया गया है,

जिसके अन्तर्गत लेश्या, कषाय एवं कर्मसिद्धान्त की सुन्दर एवं स्पष्ट रूप से भूमिका को प्रस्तुत कर समझाया गया है। पञ्चम अध्याय में वैचारिक पर्यावरण का वर्णन है। अर्थात् सर्वप्रथम मनुष्य के मस्तिष्क में विचार उत्पन्न होते हैं और तत्पश्चात् वह तदनुसार प्रवृत्ति करता है। अतः प्राणिमात्र के प्रति आत्मौपम्य भाव एवं पर्यावरण संरक्षण के विचारों से वैचारिक पर्यावरण का शुद्ध होना आवश्यक है। लेखिका ने सांस्कृतिक एवं नैतिक पर्यावरण का भी प्रस्तुत पुस्तक में विशद विवेचन किया है। अन्त में आध्यात्मिक पर्यावरण की चर्चा की गई है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची संलग्न की गई है, जो कथन की प्रामाणिकता को सिद्ध करती है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पर्यावरण-संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में जैनधर्म के सभी प्रमुख सिद्धान्तों का समावेश समुचित तरीके से कर दिया गया है। सभी सिद्धान्त एवं मान्यताएँ पर्यावरण-संरक्षण के सम्बन्ध में अतीव प्रासङ्गिक एवं उपयोगी है। शोधप्रबन्ध के अन्त में उपसंहार दिया गया है और साथ में पर्यावरण-संरक्षण के लिए कतिपय महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये गये हैं, जो सभी प्रबुद्धजनों के द्वारा पालन करने योग्य हैं। अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची भी दी गई है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध सभी सुज्ञजनों के लिए पठनीय है और पुस्तक में वर्णित सिद्धान्तों एवं उपायों का पालन कर हम पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं। लेखिका का कार्य प्रशंसनीय है।

जिनवाणी

डॉ. पी. सी. जैन

बड़ी भली जिनवाणी माँ, तत्त्वामृत पान कराती है।
सदा सुलाती दुनिया की माँ, ये माँ हमें जगाती है।।
क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम उपदेशिनी।
तप, त्याग, ब्रह्मचर्य को समझाती जिनवाणी है।।
मिथ्यात्व नाशिनी, कर्म-धर्म प्रियता प्रचारिणी।
स्व-पर को भानुवत् प्रकाशिनी, जिनवाणी है।

नाना विषयों का नग्न रूप, जिनवाणी हमें दिखाती है।
जिसके पढ़ने-गुणने से हमें स्व मेव विरक्ति आती है।।
जिनवाणी ही निज-भक्तों की ऐसी नींद उड़ाती है।
कर्मों की भयानक मारों से, छुटकारा हमें दिलाती है।।
निरावरण, निर्मल, निर्दोष, नियमित प्रकाशित।
सुमन विचारों की सर्व-हितंकर जिनवाणी है।।

-बी-417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-
302017 (रज्ज.)

समाचार विविधा

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में 9 दिसम्बर को 13 मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षा पीपाड़ में सम्पन्न

स्थानकवासी परम्परा में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-16 एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-28 के पावन सान्निध्य में पुण्यधरा-पीपाड़शहर में हजारों जैन-जैनेतर जन समुदाय की उपस्थिति में मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी, गुरुवार तदनुसार 9 दिसम्बर, 2021 को श्री ओसवाल लोडेसाजन विकास केन्द्र (कोट) में श्रद्धालुजनों की विशाल उपस्थिति में जय-जयकार के गगनभेदी जयनादों के साथ तेरह मुमुक्षुजनों का दीक्षा-महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। तीन दिन के दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में गेलड़ा, हीरावत, बागरेचा मेहता, आबड़, लूंकड़, संकलेचा, जरगड़, मुणोत, नागसेठिया तथा अलीगढ़ का जैन परिवार अपने पारिवारिक परिजनों एवं इष्ट-मित्रों के साथ दीक्षा-महोत्सव में सम्मिलित हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीरा, भावी आचार्य श्री महेन्द्र एवं अधिकतर रत्नसंघीय सन्त-मुनिराजों और महासतीवर्याओं के सान्निध्य में एक साथ तेरह विरक्त-विरक्ताओं की संयम-साधना में पावन प्रवेश के अनुमोदनार्थ एवं पूज्य गुरुवर्य सहित सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सेवा-भक्ति और व्रत-प्रत्याख्यान अङ्गीकृत करने के उद्देश्य से मारवाड़-मेवाड़-मेरवाड़ा-पल्लीवाल-पोरवाल-हाड़ौती-शेखावाटी-सिवाञ्ची जैसे हर क्षेत्र के भक्तजन तो पधारे ही, वीर प्रसूता राजस्थान के छोटे-से-छोटे ग्राम-कस्बे-नगर और महानगरों के श्री संघों के साथ श्रद्धालुजनों ने पुण्यधरा-पीपाड़ पहुँचकर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ लिया। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हरियाणा से लेकर दक्षिण भारत के कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु तक के गुरुभक्त दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसङ्ग पर गुरुचरणों में पहुँचे। जोधपुर-जयपुर-अजमेर-ब्यावर, मदनगंज-किशनगढ़, दूदू, बालोतरा, बाड़मेर, पाली, सोजत जैसे राजस्थान के नगरों के अतिरिक्त चेन्नई, बैंगलुरु, कोलकाता, नागपुर, कानपुर, जलगाँव, धूलिया जैसे नगरों-महानगरों से सैकड़ों श्रद्धालुजनों ने भी पुण्यधरा-पीपाड़ पहुँचकर विरक्त-विरक्ताओं का एवं उनके पारिवारिक-परिजनों का स्वागत-सत्कार-बहुमान और अभिनन्दन कर अपने-आपको धन्य-धन्य समझा।

पुण्यधरा-पीपाड़ में तो आबाल-वृद्ध सबका उत्साह देखने लायक कहा जा सकता है। पुण्यधरा पीपाड़ के प्रबुद्धजनों ने एक साथ तेरह दीक्षाओं की सफलता के लिए तीन दिन का कार्यक्रम सुनिश्चित किया, जिससे वीर परिवारजनों, मुमुक्षुजनों, अतिथियों, पदाधिकारियों को सुनने का सुअवसर तो प्राप्त हुआ ही, स्वागत-सत्कार और अभिनन्दन के लिए भी पर्याप्त समय सुलभ हो गया। आगत श्रद्धालुओं ने पीपाड़ शहर के सुज्ञजनों की दूरदर्शिता-पूर्ण निर्णय की मन-ही-मन सराहना की।

पूज्य आचार्यप्रवर के अतिशय-प्रभाव से प्रारम्भ में कतिपय दीक्षाओं की स्वीकृति बढ़ते-बढ़ते सात से नौ, नौ से ग्यारह और अन्त में ग्यारह से तेरह दीक्षाएँ जिनमें चार मुमुक्षु भाइयों की तथा नौ मुमुक्षु बहिनों की (कुल तेरह) दीक्षाओं का सुयोग पाकर पीपाड़वासी तो हर्ष और गर्व से फूले नहीं समा रहे थे, वहीं समूचे रत्नसंघ में प्रमोद का भाव छा जाना स्वाभाविक कहा जा सकता है।

दीक्षा-महोत्सव के पहले मुमुक्षुजन, उनके माता-पिता और पारिवारिक-परिजन एवं ग्राम-नगर के श्रद्धालुजन तथा इष्ट-मित्रों के साथ पीपाड़ पहुँचने प्रारम्भ हुए, इसके पूर्व दीक्षार्थी परिवारजनों के लिए अलग-अलग मकान सुनिश्चित कर रखे थे और आवश्यक सामान भी पहले से यथास्थान पहुँचाया जा चुका था, अतः हर परिवार को सुविधाओं और साधन-सामग्री से युक्त मकान तो मिला ही, उन्हें गुरु-सेवा का पर्याप्त समय भी मिल गया।

पुण्यधरा-पीपाड़ पुराना क्षेत्र है। पीपाड़ का राता उपासरा करीब 600 वर्षों से है। उस गुरुवर्य के प्रति श्रद्धा और समर्पण प्रारम्भ से रहने के कारण एक साथ तेरह दीक्षाओं की क्रियान्विति सफल रही। पीपाड़शहर के मध्य कोट के विशाल प्रांगण में पहले भी कई बार चार-चार दीक्षाओं के सफल आयोजन हुए हैं। अभी इस विशाल दीक्षा कार्यक्रम में पीपाड़ के श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष-मंत्री-सहमंत्री-कोषाध्यक्ष के साथ कार्यकारिणी के सदस्यगण तो सक्रिय-सजग बने ही, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् और बालिका मण्डल के साथ सकल जैन समाज दीक्षा महोत्सव की सफलता में भावनापूर्वक जुड़ गया।

पुण्यधरा-पीपाड़ मूल के वासी और चेन्नई रहवासी श्री प्रेमकुमारजी कवाड़ को इस दीक्षा-महोत्सव का संयोजक बनाया गया, वहीं लाभार्थी श्री धनरूपचन्दजी बागरेचा मेहता जो मूलतः पीपाड़वासी हैं और बैंगलुरु महानगर के रहवासी हैं, वे भी सजग हो गये तो छोटे-बड़े सभी जैन-जैनेतर भाई-बहिनों में उमङ्ग-उल्लास छा गया।

आचार्यप्रवर, भावी आचार्यश्री प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के प्रभाव से पुण्यधरा पीपाड़ में चातुर्मास पश्चात् भी दैनिक कार्यक्रम प्रार्थना-प्रवचन-प्रतिक्रमण और त्याग-तप आदि निर्बाध रूप से सानन्द सम्पन्न होते रहे। संघनायक पूज्य गुरुदेव के पाद-विहार की स्थिति नहीं होने से गुरुवर्य को मजबूरन पीपाड़ विराजना पड़ा तथा इस बीच दीक्षा-महोत्सव की घोषणा से समूचे रत्नसंघ में हर्ष की लहर छा गई। पीपाड़ संघ भी पुलकित हो उठा।

पुण्यधरा-पीपाड़ के सुज्ञजनों ने एक साथ तेरह दीक्षार्थियों का कार्यक्रम सफल हो, इस भावना से तीन दिन तक कार्यक्रम चलाने का निर्णय किया।

चिकित्सा सेवियों का सम्मान एवं मुमुक्षुओं के परिवारजनों की विचाराभिव्यक्ति का कार्यक्रम 07 दिसम्बर, 2021 को

07 दिसम्बर सायं पश्चात् पूर्व-निर्धारित कार्यक्रमानुसार कोट में सन्त-सती के श्रमणोचित औषधोपचार में सेवाएँ देने वाले चिकित्सकों तथा चिकित्साकर्मियों का स्वागत किया गया। व्यवस्था बनाने में सहयोगी पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सम्मान किया गया तथा वीर परिवारजनों से दीक्षा की भावना कैसे बनी, एतदर्थ विचार-चिन्तन सुनने का सुअवसर भी मिला। दिनांक 07 दिसम्बर, 2021 का कार्यक्रम भी करीब 3 घण्टे चला, अतः 08 दिसम्बर, 2021 को अखिल भारतीय संघ के स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम में भी सुविधा रही।

08 दिसम्बर, 2021 को प्रातः मुमुक्षुओं की शोभायात्रा

पूज्य आचार्यप्रवर, भावी आचार्यप्रवर तथा समस्त सन्त-सतीवृन्द को वन्दन करने के अनन्तर 4 मुमुक्षु बन्धुओं तथा 9 मुमुक्षु बहनों की भव्य शोभायात्रा 8 दिसम्बर को प्रातः 9.00 बजे प्रारम्भ हुई जो पीपाड़ के प्रमुख बाजारों से होकर हॉस्पिटल होती हुई स्वाध्याय भवन के निकट पहुँची। शोभायात्रा में आगे बैण्ड बाजा, हाथी पर लाभार्थी श्री धनरूपचन्दजी मेहता, फिर बघियों में क्रमशः मुमुक्षु एवं उनके पीछे परिवारजन और रिश्तेदार चल रहे थे। समागत श्रद्धालु अपनी सुविधा से किसी भी मुमुक्षु की बगधी के पीछे जयनाद करते चल रहे थे। बीच-बीच में भी बैण्ड की व्यवस्था थी। बघियों में शोभायात्रा भव्य लग रही थी। शोभायात्रा में लगभग 5,000 श्रद्धालुजन साथ चल

रहे थे। बाजार के बीच अनेक स्थानों पर सबका स्वागत किया गया। लगभग तीन घण्टे तक चली शोभायात्रा की व्यवस्था में पीपाड़ के सभी सदस्य विशेषतः युवक एवं श्राविका मण्डल बहुत सजग रहे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा मुमुक्षुओं, वीर-परिवारजनों के बहुमान-स्वागत तथा अभिनन्दन का कार्यक्रम

कोट में 08 दिसम्बर, 2021 को मध्याह्न में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्वावधान में मुमुक्षुओं, वीर माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों और अतिथियों का स्वागत-सत्कार-बहुमान और अभिनन्दन भी शानदार रहा। तेरह विरक्त-विरक्ताओं को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया गया, वहीं वीर परिवारजनों को रजत-पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति सम्मान प्रदान कर उनका बहुमान किया गया। दीक्षा महोत्सव में पधारे मुख्य अतिथि माननीय श्री शांति कुमारजी धारीवाल-स्वायत्त शासन मन्त्री, राजस्थान सरकार का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान एवं रजत-पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र देकर अभिनन्दन किया गया। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम के लाभार्थी श्री धनरूपचन्दजी मेहता-बेंगलुरु, संयोजक श्री प्रेमकुमारजी कवाड़-चेन्नई का भी स्वागत-अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति में रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय जस्टिस श्री प्रकाशजी टाटिया, शासनसेवा समिति के संयोजक श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, स्थानीय संघाध्यक्ष श्री श्रेणिकजी कटारिया, क्षेत्रीय प्रधान श्री ए.सी. चौधरी ने स्वागत-सत्कार में अतिथियों एवं वीर परिवार का बहुमान किया। संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सदस्यगण, संघ और संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारिगण, स्थानीय संघ के प्रबुद्ध कार्यकर्तागण को मञ्च पर आमन्त्रित कर उनसे भी वीर परिवार का स्वागत करवाया गया।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जस्टिस टाटिया साहब ने स्वागत भाषण में सभी कार्यकर्ताओं का आभार प्रदर्शन किया। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री हुण्डीवाल साहब ने एक साथ तेरह दीक्षाओं की सफलता में पुण्यधरा पीपाड़ के उत्साहपूर्ण सहयोग पर अन्तर्मन से धन्यवाद-साधुवाद दिया। मुख्य अतिथि माननीय श्री शांति कुमारजी धारीवाल, मन्त्री, राजस्थान सरकार ने संघनायक पूज्य गुरुदेव एवं भावी आचार्य श्री प्रभृति सन्त-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करके उनके अतिशय-प्रभाव से तेरह दीक्षाएँ विधिवत् रूप से होने को महत्त्वपूर्ण तो बताया ही, पीपाड़ संघ की सुन्दर व्यवस्था की सराहना भी की। कार्यक्रम पश्चात् आचार्यप्रवर-भावी आचार्यप्रवर के श्री चरणों में पहुँचकर मंत्री महोदय ने पूज्य गुरुदेव से आवश्यक मार्गदर्शन लिया। महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पीपाड़ श्री संघ की सक्रियता-सजगता तो प्रेरणादायी है ही, व्यवस्थाएँ भी सुचारु रूप से गतिमान हैं।

मुमुक्षुजनों के हृदयोद्गार प्रेरणादायी रहे, साथ-ही-साथ संयम के प्रति उनका सकारात्मक चिन्तन श्रवण कर जन समुदाय प्रमुदित हुआ। वीर परिवारजनों का स्वागत-अभिनन्दन वीर परिवारजनों से कराने की कार्य-योजना प्रभावी रही।

दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम 09 दिसम्बर, 2021 को

09 दिसम्बर को प्रातः विरक्त-विरक्ताओं के अस्थायी निवास स्थान से वृहद्धाल-अभिनिष्क्रमण यात्रा के अनन्तर संघनायक पूज्य गुरुदेव-भावी आचार्यश्री एवं सन्त-मुनिराज तथा महासतीवर्याओं के दर्शन-वन्दन एवं पूज्य गुरुदेव के मांगलिक पश्चात् संकेतानुसार मुमुक्षुओं का वस्त्र-परिवर्तन एवं केश-कर्तन कक्ष में जाकर

सांसारिक वस्त्राभूषणों का त्याग करके साधु-वेश में गुरुदेव के सम्मुख कोट में पधारने के सभी कार्यक्रम सुचारु-सुव्यवस्थित और सुन्दरतम तरीके से नियत-निर्धारित समय पर सम्पन्न हुए।

दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम-09 दिसम्बर, 2021 को सन्तों के पधारने का क्रम प्रातः 11.15 बजे पश्चात् प्रारम्भ हुआ। मध्याह्न 12.15 बजे पश्चात् गुरुदेव का पदार्पण हुआ और उसके साथ ही पाट पर कुल 16 सन्त सुशोभित हुए। जन समुदाय प्रातः 9.00 बजे से कोट में उपस्थित होकर आगे-आगे बैठने के लिए अपना-अपना स्थान ग्रहण करता गया। पाण्डाल सामायिक करने वालों एवं फर्श पर बैठने वालों से पूरा भर गया।

सन्त-सतीवृन्द कोट में पधारे तो जय-जयकार के जयनाद श्रवण कर व्यवस्था सम्भालने वालों ने स्वयं खड़े होकर अनुरोध किया कि आप अपने स्थान पर बैठे-बैठे हाथ जोड़कर वन्दन कर लें, परन्तु खड़े होकर वन्दन-नमन करके व्यवस्था नहीं बिगाड़ें। सन्त-मुनिराजों के पश्चात् 28 महासतीवर्याओं का युगपद् आगमन हुआ। वन्दना करके सन्त विराजे। उसके पश्चात् महासती-मण्डल ने विधिवत् वन्दन-नमन करके अपना स्थान ग्रहण किया। प्रातः 11.15 बजे तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने नमस्कार महामन्त्र का उच्चारण प्रारम्भ किया तो सबकी नजरें मुनिश्री की ओर केन्द्रित हो गई। मुनिश्री ने ऊँ शान्ति....शान्ति.....शान्ति आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित प्रार्थना प्रारम्भ की तो एक स्वर-एक लय से समवेत स्वर में प्रार्थना में सभी सम्मिलित हो गये।

सर्वप्रथम श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने अपना प्रवचन प्रारम्भ कर फरमाया कि शाश्वत सुख पाना हो तो अकेले हो जाओ और जिन्हें सुख नहीं चाहिए वे जग के झमेले में रहें। मुनिश्री ने उत्तराध्ययनसूत्र का हार्द बताते कह दिया-जो आत्मा में रमण करता है वह सुखी है और जो संसार में रमण करता है उसका सुख उससे कोसों दूर है। राग से भी शान्ति और सुख कोसों दूर है, वीतरागता में शान्ति भरपूर है। शान्ति, आनन्द और मुक्ति प्राप्त करनी है तो उसे वीतरागता का वरण करना ही होगा। मुनिश्री ने कहा-जो राग से रञ्जित है वह शान्ति से वञ्चित है। आप राग घटायें, राग कम-से-कम करते जायें तो आपको शान्ति और सुख रहेगा।

आज तेरह मुमुक्षुजन प्रव्रजित हो रहे हैं इनमें ग्यारह बाल ब्रह्मचारी हैं। ज्ञान, भक्ति और वैराग्य के लिए आपको-हमको यह मानव जीवन मिला है। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा रचित भजन की पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हुए कहा-“ममता से सन्ताप उठाया, आज हुआ विश्वास।” मुनिश्री ने ममता से दूर हटकर रहने की प्रेरणा करते हुए बताया कि एक होता है-राग, दूसरा है-विराग और तीसरा है-वीतराग। राग में पदार्थ छूटता है, त्याग में ममत्व टूटता है और वीतरागता में आनन्द फूटता है, अतः आप एकत्वभाव में रहने की कला सीख जाओ तो आपका जीवन सार्थक होगा। मुनिश्री ने उपस्थित जन-समुदाय को एक सूत्र दिया-“जाग-जाग-जाग रे। त्याग-त्याग-त्याग रे।”

महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा. ने अपनी बात रखते कहा कि आज यहाँ जो केशर-क्यारी खिल रही है उसके पीछे ‘सोही उज्जुयभूयस्स’ ही कारण है। महासतीजी ने आगे कहा-यात्रा करने के लिए तीन मार्ग प्रचलन में हैं। एक है जल मार्ग तो दूसरा है थल मार्ग और तीसरा है वायु मार्ग। वीतराग भगवन्तों ने इन मार्गों के साथ एक अन्य मार्ग बताया और वह है संयम का मार्ग। संयम का मार्ग वीरों का मार्ग है। यह मार्ग हाई-वे है और सुपर है। संयम के मार्ग में कोई टेन्शन नहीं है। संयम के वेश का भी महत्त्व है। संयम पेनफुल लाइफ को पीसफुल लाइफ बनाता है। संयम के पथ में प्रगति है, उन्नति है, अतः आप-सब को संयम-साधना में निरन्तर गति-प्रगति करनी चाहिये।

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने गीत के स्वरों में फरमाया-‘अष्टकर्म के गहरे कूप से बहन मुझे निकालो जी। जीत ही उनको मिली जो हार से जमकर लड़े हैं जी। महासतीजी ने संसार के दुःखों से किनारा न करने को आश्चर्य कहा तथा फरमाया कि आज तक वीतरागवाणी को जितना नहीं माना उतना व्यक्ति को दुःख है।

महासतीजी ने एक-एक करके आश्चर्यों का वर्णन करते हुए भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र, उपासकदशाङ्गसूत्र, अणुतरोववाई, विपाकसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र के सन्देश को प्रस्तुत कर कहा कि इनको स्वीकार नहीं करना आश्चर्य है। संयम को स्वीकार न करना एवं मोक्ष-मार्ग में कदम नहीं बढ़ाना महान् आश्चर्य है। 'अहो! आश्चर्यम् अहो! आश्चर्यम्' की शब्दावली में उन्होंने आश्चर्य को रेखाङ्कित कर उपस्थित जनसमुदाय में आगमवाणी के अनुसार जीवन जीने एवं संयम स्वीकार करने की प्रेरणा की।

महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. ने फरमाया कि धर्मधरा पीपाड़ में जहाँ दो-दो आचार्यों ने जन्म लिया उस गुरु हस्ती-गुरु हीरा की जन्मभूमि में आज तेरह भव्यात्माएँ दीक्षित हो रही हैं इसका हम-सबको प्रमोद है। महासतीजी ने सविकल्प और निर्विकल्प मार्ग की चर्चा करते कहा कि एक मार्ग दुःख का मार्ग है तो दूसरा संयम का निर्विकल्प होने का मार्ग सुख का मार्ग है। महासतीजी ने कहा कि मुमुक्षु श्री सुनिलजी गेलड़ा के बचपन में जगी वैराग्य-भावना आज 55वें वर्ष में साकार हो रही है। सभी पुण्यात्माएँ संयम-साधना में गुरु-गुरुणी का आज्ञा-आराधन तो करेंगे ही, सरलता-सेवा और समर्पण का जीवन जीकर स्व-पर कल्याण-मार्ग में उन्नति-प्रगति करते हुए लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करें, यही हमारी मंगल मनीषा है।

श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने आनन्दम्-आनन्दम् भजन की कड़ियाँ उच्चारित करते कहा कि आज तेरह-तेरह जीवात्माओं को सी.ए. (चारित्र में एडमिशन) का सर्टिफिकेट मिलने वाला है। कुछ विरली आत्माओं को यह मार्ग सरल-सुखदायी लगता है तो अनेक आत्माओं को संयम-साधना असम्भव, टफ, बोरिंग, मोनोटोनस लगती है। क्योंकि उनको संयम के आनन्द का अनुभव नहीं है। मुनिश्री ने फरमाया कि गृहस्थ घर पर रहते ज्ञान की आराधना कर सकते हैं, दर्शन की साधना में आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन चारित्र-पालन नहीं हो सकता। इसमें छह काया के जीवों की रक्षा, पाँचों इन्द्रियों पर विजय, विषय-वासना को जीतना, कषाय कम करते-करते साधना-आराधना करना होता है, जो गृहस्थ जीवन में सम्भव नहीं।

पूज्य गुरुदेव का पदार्पण- मुनिश्री का प्रवचन चल रहा था तभी संघनायक पूज्य गुरुदेव और भावी आचार्यश्री आदि सन्तों के कोट में प्रवेश के कारण दूर से जय-जयकार के जयनाद उपस्थित जन समुदाय ने सुने तो प्रायः सबकी नजरें कोट में प्रवेश के रास्ते पर जम गईं। व्यवस्था सम्भालने वाले पुनः पुनः निवेदन कर रहे थे कि आप-सभी अपने-अपने स्थान पर विराजे रहें। गुरुदेव के पधारने पर खड़े न हों, वन्दन नहीं करें और शान्ति बनाए रखकर व्यवस्था में सहयोग करें।

दीक्षा-प्रसङ्ग पर पधारे हजारों श्रावक-श्राविका, युवक-युवति, बालक-बालिकाओं ने व्यवस्थापकों की बात मानकर जहाँ के तहाँ जमे रहे। पूज्य गुरुदेव धीरे-धीरे चलकर पधारे तो समस्त सन्त-मुनिराज और महासतियाँजी महाराज ने अपने स्थान पर खड़े होकर आचार्यप्रवर-भावी आचार्यश्री का आदर-सत्कार तो किया ही, हाथ जोड़े-जोड़े खड़े रहकर उनके स्थान ग्रहण करने तक यों ही खड़े-खड़े और हाथ जोड़े-जोड़े सम्मान किया। जन-समुदाय ने बैठे-बैठे सश्रद्धा-सभक्ति के साथ वह दृश्य देखा, जो अनूठा रहा।

आचार्यप्रवर-भावी आचार्यश्री के विराजने के साथ सन्त-मुनिराजों ने विधिवत् वन्दन-नमन किया। तदन्तर महासतीवर्याओं ने भी वन्दन-नमन करके अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। जन समुदाय भक्ति-भावना से सन्त-सतीवृन्द का वन्दन-नमन का अपलक दृश्य देख-देखकर श्रद्धाभाव से मन-ही-मन नतमस्तक होता रहा।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव भावी आचार्य श्री के साथ प्रवचन-सभा में पधारे तो कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सुश्रावक श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने चन्द जय-जयकार के जयनाद करवाये और कहा आपने जैसी शान्ति बनाए रखी है, आप शान्ति बनाए रखकर कार्यक्रम को देखें और जहाँ तक सुन सकें, सुनने का प्रयास करें।

आज के दीक्षा-प्रसङ्ग पर सुश्री रेणुजी गुन्देचा सुपुत्री सुश्राविका श्रीमती निर्मलाजी एवं सुश्रावक श्री गौतमचन्द

जी तथा सुपौत्री सुश्राविका श्रीमती चम्पाबाईजी एवं सुश्रावक श्री नथमलजी गुन्देचा, निवासी सोजतरोड़, हालमुकाम बैंगलुरु का आज्ञा-पत्र पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में रखा।

षष्ठ वक्ता के रूप में श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने कहा कि पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से दीक्षित होने वाली सभी पुण्यात्माएँ समाधि के माध्यम से अपना लक्ष्य और साध्य साकार करें। मुनिश्री ने कहा कि यहाँ आप कैमरे से नहीं आँखों से फोटो लें, चारित्र का फोटो लें, यह अनेक भव सुधारता है। साधना के शिखर पर बढ़ने वाली चारित्रात्माओं से अपेक्षा रखी कि वे चित्र को नहीं, चारित्र को उजागर करें। जो साधक चारित्र-धर्म की साधना में आगे बढ़ रहे हैं, समाधि उनका लक्ष्य है। आप साधना तो घर पर रहकर भी कर सकते हैं, लेकिन वहाँ समाधि नहीं रह सकती। मुनिश्री ने जन समुदाय को सम्बोधित करते कहा कि शादी जैसे प्रसङ्ग पर आप स्वाहा शब्द का प्रयोग करते हैं, संयम-साधना में भी स्वाहा करना होता है। यहाँ कर्म-रज का स्वाहा करते-करते जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होता तब तक स्वाहा करना है। मुनिश्री ने कहा-जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होता तब तक सब मुमुक्षु ही होते हैं। साधना फलित होती है-ज्ञान, दर्शन और चारित्र से। संयम-साधकों को ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना से अपने-आपको श्रेष्ठ साबित करना होता है। पहली बात है ज्ञान-दर्शन-चारित्र की उत्तमता, दूसरी-विचारों की पवित्रता और तीसरी बात है- आत्मा की सुन्दरता। मुनिश्री ने आगे कहा कि संयम चलता है जबकि हम साधक गुरु के हृदय में बस जाय।

संघनायक पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से दीक्षा-पाठ एवं भावी आचार्यश्री द्वारा दीक्षार्थियों को हितशिक्षाएँ

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने मुमुक्षुजनों से कहा कि आप-सभी अपने-अपने माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद तो लें ही, चतुर्विध संघ से अन्तर्मन से क्षमायाचना भी करें।

आज्ञा-आराधक मुमुक्षुजनों ने अपने-अपने माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों के चरण-स्पर्श करके उनका आशीर्वाद लिया। प्रणाम करने का वह दृश्य अनूठा कहा जा सकता है। माता-पिता और परिजनों ने भी खुले मन से आशीर्वाद दिया। इस प्रक्रिया में कुछ समय लगना स्वाभाविक था अतः सन्त-मुनिराजों ने सस्वर भजन-गीत प्रारम्भ किए-

“अनुमोदना-अनुमोदना-अनुमोदना बारम्बार” तथा

मुक्तिपुरी में चलें मोह की करनी विदाई।

दीक्षा सदा सुखदाई, संयम सदा सुखदायी॥

दीक्षा सदा सुखदाई गीत की समाप्ति के पश्चात् एक-एक मुमुक्षुजन ने चतुर्विध संघ से अब तक ज्ञात-अज्ञात समस्त भूलों के परिमार्जन हेतु हार्दिक क्षमायाचना की तो क्षमायाचना का दृश्य देख-देखकर जन समुदाय द्रवित और भावुक हो गया।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव के संकेत से भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जहाँ भी दो का मिलन होता है वहाँ संसार खड़ा हो जाता है और जहाँ भी वियोग होता है वहाँ संसार नहीं रहता। यहाँ भी आत्मा को कर्म से तथा जीव को जड़ को अलग-अलग करना होता है।

भावी आचार्यश्री ने आगे फरमाया कि-मैं अभी लम्बा तो नहीं कहता, पर संयम की महत्ता सदा से है, सदा रहेगी। आप गुरुदेव को देख रहे हैं। गुरुदेव जीव और जड़ को अलग करने के लिए साधना कर रहे हैं और संसारी जीवों को संयम में लगा रहे हैं। गुरुदेव अपने शासन में एक नया इतिहास रच रहे हैं। पहली बार रत्नसंघ में एक साथ

तेरह-तेरह दीक्षाएँ हो रही हैं। अनुमोदना करने वाले कई हैं, लेकिन संयम स्वीकार करने वाले विरले ही होते हैं। धन्य हैं वे जो संयम ले रहे हैं। इनके माता-पिता और पारिवारिक-परिजन भी धन्य हैं। हमारे जो भी सन्त और सतियाँ यहाँ नहीं पहुँच सके, परन्तु उनके सन्देश-शुभकामनाएँ बराबर आ रहे हैं। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. का सन्देश प्राप्त हुआ है। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री सन्देश पढ़कर सुनायेंगे। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने सन्देश पढ़कर सुनाया।

भावी आचार्यश्री ने कहा-मोह दुःखों का कारण है। आप जितनी-जितनी मात्रा में मोह छोड़ेंगे, उतनी-उतनी मात्रा में समाधि और शांति प्राप्त कर सकेंगे। मैं ज्यादा नहीं कहकर आपसे अभी इतना ही कहूँगा कि आप-सब शांति से सुनें और सुनने में नहीं आ रहा है तो देखें, लेकिन शांति बनाए रखें।

आज्ञा-अनुमति प्राप्ति के अनन्तर दीक्षा पाठ

आचार्यप्रवर ने सबसे पहले माता-पिता एवं परिवारजनों की आज्ञा-अनुमति ली, फिर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पीपाड़ शहर और सकल जैन संघ की स्वीकृति-सहमति प्राप्त करके चउवीसत्थव करवाया। एक-एक पाठ का उच्चारण स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

प्रथम चउवीसत्थव के पश्चात् दूसरा चउवीसत्थव करवाने की तैयारी हो रही थी, सभी दीक्षार्थियों ने पुनः वन्दन-नमन करके दूसरा चउवीसत्थव श्रवण किया। समवेत स्वर में लोगस्स का पाठ सुनकर जन समुदाय अत्यन्त प्रभावित हुआ। आचार्यश्री हीरा ने 1.10 बजे करेमि भन्ते के पाठ से सबको दीक्षित किया।

आचार्यश्री हीरा का सन्देश

दीक्षा पाठ देकर आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव ने जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि दुनिया में साँप-बिच्छू का मन्त्र से ज़हर उतारने वाले हैं तो आधि-व्याधि, दुःख-शोक और रोग मिटाने वाले भी मन्त्र हैं। एक-एक रोग के अनेक तरह के मन्त्र होते हैं। जैसे रोग-दुःख का इलाज करने वाले मन्त्र हैं, वैसे ही दुःखों को दूर करने वाला, भव-भ्रमण मिटाने वाला और कर्म-रज दूर करने वाला कोई मन्त्र है तो वह है- 'करेमि भन्ते' का मन्त्र। यह मन्त्र केवल सुनने-समझने के लिए ही नहीं, आचरण में लाने पर ही काम करता है।

पूज्य गुरुदेव ने 'करेमि भन्ते' का स्वरूप समझाया और दीक्षार्थियों ने विसिरामि...विसिरामि कहकर संयम-साधना में प्रवेश किया तो जन-समुदाय ने हर्षित-प्रमुदित होकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी सन्त-मुनिराजों की जय, साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि सभी महासतियाँजी महाराज की जय, दीक्षा लेने वाले सभी दीक्षार्थियों की जय। जय-जयकार के जयनाद काफी समय तक गूँजते रहे।

भावी आचार्यश्री का पुनः उद्बोधन

भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने आगे फरमाया कि आपने गुरुदेव के मुखारविन्द से दीक्षा-पाठ सुना है। अभी आपने यह भी देखा कि दीक्षित होने वाले सभी मुमुक्षुजनों के चेहरे पर उमङ्ग-उल्लास का भाव था, मैं नव-दीक्षित सन्त-सतियों से कहूँगा कि आज आपने जिस उल्लास से दीक्षा अङ्गीकार की है, सदा ऐसा ही उल्लास बनाए रखें। व्यवहार में निभने-निभाने की कला का उपयोग हो। आज्ञा-आराधन के साथ समाचारी का पालन हो।

भावी आचार्य श्री ने साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के सन्देश, पंजाबी परम्परा के संघनायक पूज्य श्री जयमुनिजी म.सा. सहित प्राप्त सन्देशों का विवरण रखा।

भावी आचार्यश्री ने यह भी कहा कि पूज्य गुरुदेव नया-नया इतिहास रच रहे हैं। आपश्री के चिन्तन में पुरानी परम्परा के रक्षण के साथ कुछ नवीनता भी है। आपश्री दीक्षित सन्त-सतीवृन्द का नामकरण बड़ी दीक्षा पर करते रहे हैं, लेकिन आज उसमें भी एक नई कड़ी जोड़ रहे हैं और वह है आज ही नवदीक्षित सन्त-सतीवृन्द का नामकरण किया जा रहा है। गुरुदेव ने तेरह नव दीक्षितों के नाम इस प्रकार दिए हैं-

मुमुक्षुजन का नाम

1. मुमुक्षु बन्धु श्री सुनिलजी गेलड़ा
2. मुमुक्षु बन्धु श्री अंशजी हीरावत
3. मुमुक्षु बन्धु श्री विनयजी मेहता
4. मुमुक्षु बन्धु श्री कर्तव्यजी गेलड़ा
5. मुमुक्षु बहिन श्रीमती वनिताजी गेलड़ा
6. मुमुक्षु बहिन सुश्री रीताजी आबड़
7. मुमुक्षु बहिन सुश्री निकिताजी गेलड़ा
8. मुमुक्षु बहिन सुश्री अदितिजी जैन
9. मुमुक्षु बहिन सुश्री मोनिकाजी लूंकड़
10. मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रियाजी संकलेचा
11. मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रियलजी जरगड़
12. मुमुक्षु बहिन सुश्री कल्याणीजी मुणोत
13. मुमुक्षु बहिन सुश्री श्रुतिजी नागसेठिया

दीक्षित हो जाने पर नामकरण

- नवदीक्षित श्री सुनिलमुनिजी म.सा.
- नवदीक्षित श्री आनन्दमुनिजी म.सा.
- नवदीक्षित श्री विनयमुनिजी म.सा.
- नवदीक्षित श्री कर्तव्यमुनिजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री वनिताप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री रम्यप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री निकिताप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री मान्यप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री सुप्रियाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री प्रार्थीप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री समीक्षाप्रभाजी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव ने जो नाम दिए हैं, वे मैंने आपके समक्ष रखे हैं आप नवदीक्षित सन्त-सतियों के नए नाम से सम्बोधित कर सकते हैं।

दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ

1. पहली बार दो दिन के बजाय तीन दिन का भव्य एवं सन्तुलित कार्यक्रम रखा गया। 07 दिसम्बर, 2021 को दीक्षा-महोत्सव में सहयोग करने वालों का पीपाड़ संघ की ओर से स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम हुआ।
2. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से विरक्त-विरक्ताओं एवं वीर माता-पिताओं एवं परिजनों का स्वागत-सत्कार-बहुमान एवं अभिनन्दन कार्यक्रम 08 दिसम्बर, 2021 को हुआ।
3. दीक्षित होने वालों के वस्त्र-परिवर्तन, केश-कर्तन एवं आज्ञा-अनुमति पश्चात् संघनायक के द्वारा दीक्षा-पाठ 09 दिसम्बर, 2021 दिन में लगभग 1.00 बजे प्रदान किया गया।
4. तीनों भव्य कार्यक्रमों का समय के साथ नियत-निर्धारित समय पर सफलतापूर्वक आयोजन पीपाड़ दीक्षा-महोत्सव की प्रमुख विशेषता रही।
5. दीक्षा के दिन प्रातः 9 बजे से 2.00 बजे तक जन समुदाय का शान्त भाव से दीक्षा पाण्डाल में रहना कार्यक्रम को देखना और सुनना भी एक अजूबा रहा।
6. रत्नसंघ में पहली बार 4 मुमुक्षु भाइयों तथा 9 मुमुक्षु बहिनों (कुल तेरह) की दीक्षाएँ एक साथ सानन्द सम्पन्न हुईं।
7. आवास-निवास, चाय-नाश्ते एवं भोजन-व्यवस्था सुन्दर रही।
8. पहली बार दीक्षा के दिन सन्त-सतीवृन्द के नामकरण घोषित किए गए।
9. विशाल जनमेदनी के द्वारा सभी कार्यक्रम शालीनता एवं भव्यता के साथ सम्पन्न हुए।

10. पुण्यधरा-पीपाड़ में आचार्यश्री हीरा, भावी आचार्यश्री महेन्द्र सहित 16 सन्त-मुनिराज एवं 28 महासतीवृन्द की उपस्थिति रही।
11. राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक जलते दीप, सुनहरा राजस्थान, गजेन्द्र संदेश, मोक्षद्वार, तरुण जैन, जिनवाणी जैसे अनेक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं में अच्छा कवरेज दिया गया।
12. आगत श्रीसंघों, श्रद्धालुओं एवं वीर परिवारजनों की सभी व्यवस्थाएँ सुन्दर रहीं।
13. तीन दिन के कार्यक्रम योजनाबद्ध-समयबद्ध और नियत समय पर सानन्द सम्पन्न हुए।
14. दीक्षा महोत्सव पर पूज्य गुरुदेव के मंगल-पाठ के पूर्व बड़ी दीक्षा पुण्यधरा-पीपाड़ में 15 दिसम्बर, 2021 को होने की सूचना के साथ भोजन-चाय जैसी आवश्यक सूचनाएँ प्रसारित की गई।
15. स्थानीय संघ सदस्यों का, संयोजक एवं लाभार्थी महानुभावों का पूरे परिवार सहित जबरदस्त उत्साह रहा।
तीन दिन के दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम का समापन पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा मंगल-पाठ से हुआ।

पीपाड़ श्री संघ सभी पधारने वाले दर्शनार्थियों की आवास एवं भोजन व्यवस्थाओं में विशेष रूप से तत्पर है। श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल के सभी सदस्य आतिथ्य सत्कार में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। उत्साह, उमङ्ग से धर्मोल्लासमय वातावरण बना हुआ है।

-नरैस्तनमल मेहता

नवदीक्षित सन्त-सतियों का 15 दिसम्बर को

छेदोपस्थापनीय-चारित्र में प्रवेश

पुण्यधरा-पीपाड़ में 09 दिसम्बर, 2021 को जिन मुमुक्षुजनों ने सामायिक-चारित्र में प्रवेश किया, उन्हें विक्रम संवत् 2078 मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी, बुधवार, तदनुसार 15 दिसम्बर, 2021 को छेदोपस्थापनीय-चारित्र में प्रवेश करवाया गया। श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र पीपाड़शहर के प्रांगण में प्रातः प्रवचन के समय जन समुदाय बड़ी दीक्षा देखने एवं बड़ी दीक्षा के प्रसङ्ग पर त्याग-तप की श्रद्धा समर्पित करने प्रातः करीब 09.15 बजे उपस्थित हुआ। छेदोपस्थापनीय-चारित्र में प्रवेश करवाने का कार्य पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने सम्पन्न करवाया।

निर्धारित समयानुसार भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. प्रभृति संत-मुनिराज कोट में पधारे तो कुछ क्षणों पश्चात् पीपाड़ विराजित सभी महासतीवृन्द का भी कोट में मंगल प्रवेश हुआ। भावी आचार्य श्री एवं सन्त-मुनिराजों को वन्दन-नमन के अनन्तर नवदीक्षित सन्त-मुनिराजों तथा नवदीक्षिता महासतीवर्याओं को भावी आचार्यश्री ने चउवीसत्थव करवाकर भावी आचार्यश्री ने कहा कि दशवैकालिकसूत्र की रचना आचार्यश्री शय्यम्भवजी ने की, उसके पहले आचाराङ्गसूत्र के प्रथम अध्ययन के माध्यम से छेदोपस्थापनीय-चारित्र में प्रवेश करवाया जाता था। भावी आचार्यश्री ने 'धम्मो मंगल मुक्किट्टु' का उच्चारण किया तो सन्त-मुनिराजों ने समवेत स्वर में दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययनों का पारायण किया। जिन श्रावकों को दशवैकालिक सूत्र कण्ठस्थ था, उन्होंने भी स्वर में स्वर मिलाकर दशवैकालिक सूत्र के चारों अध्ययनों का पारायण किया।

भावी संघनायक ने प्रथम अध्ययन का हार्द समझाने और आहार विशुद्धि की प्रभावी प्रेरणा की तो दूसरे अध्ययन में साधक की स्थिरता कैसे बनी रहे और कैसे बढ़े, इस विषयक चिन्तन दिया। संयम की मर्यादा में स्थिर रहने की प्रेरणा हेतु राजीमति-रथनेमि का उदाहरण रखते भावी आचार्यश्री ने कहा कि वमन किया हुआ पुनः ग्रहण नहीं किया जाता। साँप एक बार कैंचुली का त्याग कर देता है तो उधर झाँक कर नज़र नहीं करता। आपने संसार का त्याग कर दिया है तो अब उधर झाँकना तक नहीं है।

तीसरे अध्ययन की विवेचना के साथ प्रेरणा की कि गौरवशाली परम्परा की आचार-संहिता का पालन करते हुए आनन्द का अनुभव करना है। चौथे अध्ययन में छह काय के स्वरूप की जानकारी है। आपको छह काय के आरम्भ से अलग रहकर पाँच महाव्रतों में आरोहण करवाया जा रहा है।

पहले महाव्रत में संयम-साधकों को चेताया जा रहा है कि आज से आपको छोटे-से-छोटे प्राणी के प्राणों की रक्षा-सुरक्षा करनी है। आप द्वारा किसी प्राणी के प्राणों का अतिपात स्वयं तो करना नहीं, न करवाना है और न ही अनुमोदना ही करनी है। इस तरह नवदीक्षित साधु-साध्वियों को पहले महाव्रत में प्रवेश करवाया गया।

दूसरे महाव्रत में आपको न झूठ बोलना है, न बोलवाना है और न झूठ बोलने वालों की अनुमोदना करनी है। क्रोध-मान-माया-लोभ से हास्य और क्रीड़ा के अधीन होकर भी दूसरे महाव्रत में कोई टंटा नहीं लगाना है। आपको भाषा समिति का पूरा ध्यान रखना होगा। आपकी भाषा विवेकपूर्वक होनी चाहिये।

तीसरे महाव्रत में साधक अदत्त का त्यागी होता है। आपको वस्तु याचना करके ही लेनी है। वस्तु चाहे सचित्त हो या अचित्त, बिना याचना किए वस्तु न लेनी है, न लेने के लिए कहना है और न ही अनुमोदना ही करनी है। बिना पूछे राख की चिमटी भी नहीं लेनी है। आपका कोई साधमी भाई भी है तो उससे भी अदत्त वस्तु नहीं लेनी है। आपको न गुरु की, न देव की किसी से भी अदत्त वस्तु नहीं लेनी है। आपको प्रवचन के लिए भी कहा जाय या पढ़ना-पढ़ाना भी है तो पन्ना भी माँगकर लिया जा सकता है। आप इस महाव्रत का सम्यक् पालन करेंगे तो जीवन में कोई खतरा नहीं हो सकता।

चौथे महाव्रत में ब्रह्मचर्य की शुद्ध साधना करनी है। आपको नौ बाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य की पालना करनी है। आपको देव-देवी सम्बन्धी, मानव या तिर्यञ्च सम्बन्धी भी कोई अतिचार नहीं लगाना है। मतलब, आपको अब विजातीय से सम्पर्क तक नहीं रखना है। विजातीय से अकेले में बोलना, बातचीत करना और सम्पर्क रखना नहीं। आप महाव्रत की सम्यक् आराधना करेंगे तो आप अपने गुरु भगवन्तों के आदर्श पर खरे उतरेंगे। ब्रह्मचर्य की दृढ़ता रखेंगे तो इस महाव्रत की पालना में कोई दिक्कत आने वाली नहीं है।

पाँचवें महाव्रत में आप सब साधक किसी भी तरह का परिग्रह नहीं रखेंगे। न तो आपको परिग्रह रखना है और न ही परिग्रह रखने वालों की अनुमोदना ही करनी है। सत्कार-सम्मान भी परिग्रह में शुमार है। परिग्रह त्यागी का मतलब है किसी वस्तु पर आपका अधिकार नहीं। परिग्रह त्यागी मेरा-मेरा नहीं करता। वह तो अपनी वस्तु पर भी ममत्व-भाव नहीं रखता। यदि ममत्व भाव आ गया तो साधना सुरक्षित नहीं रह सकती।

आपको अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य और परिग्रह का त्याग तीन करण-तीन योग से करवाया गया है। नवदीक्षित सन्त-सतियों ने एक-एक महाव्रत को विसिरामि-विसिरामि कहकर अङ्गीकार किया।

भावी आचार्यश्री ने रात्रि-भोजन का त्याग करवाया। रात्रि-भोजन में चारों आहार का त्याग होता है। रात्रि भोजन न करना, न करवाना और न उसकी अनुमोदना भी करनी है। रात्रि में अशन-पान-खादिम-स्वादिम के त्याग के साथ पानी की एक बूँद तक नहीं रखना। पाँच महाव्रत का पालन करने से जीवन सुरक्षित रहेगा। भावी आचार्यश्री ने कहा कि जब भी भूल हो जाय तो प्रायश्चित्त करके शुद्धिकरण कर लेना चाहिए। महाव्रतों में आरोहण प्रतिष्ठा पाने के लिए नहीं है, आत्महित के लिए है। आपको ज्ञान हो, तप हो या कोई अन्य आचरण ही क्यों न हो, आत्म-साधना के लिए हर प्रवृत्ति करनी है।

संयम-साधकों! आपको आत्मार्थी बनना है। आपको हर प्रवृत्ति में आत्महित का लक्ष्य रखकर चलना होगा। आपको हर क्षण- हर पल यह ध्यान रखकर चलना होगा कि शरीर नाशवान् है, आत्मा अजर-अमर है, इसलिए आपको आत्महित का पूरी तरह ध्यान रखना है।

संयमी-साधक छह काया के जीवों को अभयदान देता है। अभयदान देने वाला स्वयं अभय बन जाता है। उसे किसी का भय नहीं रहता। आपको छह काया के स्वरूप को समझकर चलना है। पृथ्वीकाय के अनेक रूप हैं। मुरड़-माटी-पत्थर जो सचित्त हैं, उन पर पाँव तक नहीं रखना। कभी सचित्त मिट्टी का स्पर्श हो जाय तो भूल होने पर प्रायश्चित्त से शुद्धि कर लेना और भविष्य में वैसी भूल फिर से न हो, इसका ध्यान रखना। आपको कभी परठने के लिए जाना हो तो वहाँ भी सचित्त भूमि पर परठना न हो, इसका ध्यान रखना है।

पृथ्वीकाय की तरह अप्काय के जीवों की रक्षा-सुरक्षा करनी है। वर्षाकाल में विशेष सावधानी रखनी है। सचित्त जल वह चाहे वर्षा का हो या तालाब या कुएँ का अथवा नदी का, आपको पानी की एक बूँद तक नहीं रखनी है। क्योंकि पानी की बूँद में असंख्य जीव होते हैं, अतः उनकी रक्षा करनी है। वस्त्र पर कभी सचित्त जल लग जाय तो उसे निचोड़ना नहीं, धूप में सुखाना नहीं, रात्रि में कभी परठने के लिए जाना हो तो पूरे शरीर को ढक कर जाना होगा। कभी धूअर आ जाय तो धूअर में न बोलना-न चलना और यहाँ तक कि स्वाध्याय भी नहीं करना।

पृथ्वीकाय-अप्काय की तरह तेऊकाय के जीवों की रक्षा करना। अग्निकाय से दूर रहना। यहाँ तक कि इलैक्ट्रिक सामग्री वह चाहे मोबाइल ही क्यों न हो, उससे भी दूर ही रहना है। इलैक्ट्रिक साधनों का न उपयोग करना, न करवाना और न ही अनुमोदना ही करना। कभी यह नहीं पूछना कि यह मोबाइल किस कम्पनी का है? कैसा है? कितने का है? दूर से भी उसका प्रयोग संयमी-साधक के लिए वर्जित है। मैंने न तो छुआ है, न हाथ लगाया है मैं तो दूर से बोल रहा हूँ ऐसा भी कभी नहीं करना। धर्म-सभा में आज माइक का प्रयोग बढ़ रहा है। कई हैं, जो कहते हैं कि हम तो दूर से बोल रहे हैं, हाथ का स्पर्श तक नहीं करते, पर संयमी-साधक को ऐसे कार्यों से बचकर ही रहना है।

आप गोचरी के लिए निकले। किसी घर में जाते ही घर का सदस्य यदि लाइट लगाता है या बन्द करता है तो उस घर को असूझता मानकर वहाँ से गोचरी नहीं लेना। वायुकाय की विराधना से बचने के लिए ज्यादा सावधानी की जरूरत है। आपको चाहे उठना हो या बैठना, प्रतिलेखना का काम हो या कोई अन्य काम, आप कहीं जाओ- कहीं रहो, चाहे सर्दी हो या गर्मी, पूरी तरह सावधानी रखनी है। गर्मी है तो हवा के लिए न वस्त्र, न पुस्तक और यहाँ तक कि हाथ से हवा भी न हो, इसका पूरा ध्यान रखना है।

वनस्पतिकाय के जीवों की रक्षा के लिए आपको पूरा ध्यान रखना है। हरी घास पर चलना नहीं। जो हरी घास पर चलते हैं वे मानों गर्भवती माँ के पेट पर पैर रखकर चलते हैं। त्रस जीवों की यतना हो, इसमें आपको पूरी सावधानी रखनी है। जहाँ सावधानी है, वहीं मोक्ष की राजधानी है। एक बार गुरुदेव के विहार में आँख में मच्छर आ गया। मच्छर की रक्षा के लिए गुरुदेव ने पलक तक नहीं झपकी। आपको ऐसे ही संयमी गुरुओं की शरण मिली है। एक बार आचार्य भगवन्त गुरु हीरा आ रहे थे तब गुणवन्तमुनिजी ने देखा तो उन्हें लगा कि ये जीव-रक्षा के लिए कितने सजग हैं?

आपको अब से प्रसिद्धि में नहीं, आत्मा की सिद्धि में रमण करना है। आपके-हमारे जीवन में दोहरापन नहीं हो। आप चाहे दिन में हो या रात, अकेले हो या परिषद् में आपका आचरण हर जगह बोलना चाहिए। कोई देखे या नहीं, देखे तब भी और नहीं देखें तब भी आपका आचार-विचार-व्यवहार जीव की रक्षा-सुरक्षा में और आत्महित में हो।

आपको अभी पाँच महाव्रत, रात्रिभोजन-त्याग और छःकाय का स्वरूप समझाकर क्या करना है, कैसे करना है, बताया गया। अपेक्षा है आप पूरी तरह सजगता-जागरूकता और सावधानी रखकर आचरण करेंगे तो आपका संयम धन्य-धन्य होगा।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से मैंने आप तरह साधकों को छेदोपस्थापनीय-चारित्र में आरूढ़ करवाया है, आज से आपकी दीक्षा पर्याय की गणना प्रारम्भ होगी।

पूज्य गुरुदेव तिथि से चलते हैं अतः आज के दिन आपको बड़ी दीक्षा की स्वीकृति दी गई है। भावी आचार्यश्री के पश्चात् महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा. ने संक्षेप में अपने विचार रखे। तदनन्तर तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने अपना चिन्तन देकर जन समुदाय को लाभान्वित किया।
-नौरतनमल मेहता

5 दिसम्बर को जोधपुर में 10 मुमुक्षुओं की भव्य शोभायात्रा

जोधपुर-चातुर्मासकाल की समाप्ति के पश्चात् पीपाड़ की पावन धरा पर पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन सान्निध्य में होने जा रही तेरह दीक्षाओं के पावन प्रसङ्ग पर उपस्थित होने हेतु यहाँ विराजित सन्त-सती भगवन्त का जोधपुर से पीपाड़ की तरफ पावन विहार हुआ। 5 दिसम्बर, 2021 रविवार को जोधपुर में तेरह मुमुक्षु आत्माओं का भव्य वरघोड़ा एवं अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया, जिसके लिए 3 दिसम्बर को कार्यक्रम का विचार किया गया और 4 तारीख को सभी कार्यकर्ता जोश के साथ स्वीकृति मिलते ही उमङ्ग और उल्लास के साथ अपने कार्य में जुट गए और एक ही दिन में इतनी जोरदार तैयारी की, जो सभी दर्शकों द्वारा अनुमोदनीय थी।

5 तारीख को सुबह लगभग 4:00 बजे ही पीपाड़ की पावन धरा से मुमुक्षुओं को लाने के लिए जोधपुर युवक परिषद् के कार्यकर्ता पीपाड़ गए और सुबह सूर्योदय के साथ ही मुमुक्षुओं को लेकर जोधपुर की पावन धरा पर पहुँच गए। लगभग 8.00 बजे तक सभी मुमुक्षु वरघोड़े के लिए तैयार हुए और सर्वप्रथम जोधपुर में विराजित महासती चंद्रकला जी म. सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण करने के पश्चात् जैसे ही वरघोड़े के लिए शक्तिनगर छठी गली की तरफ पहुँचे कि वहाँ पर आसमान से बादल भी मानो अपनी खुशियाँ व्यक्त कर रहे थे। चारों तरफ दीक्षा कार्यक्रम जैसा माहौल हो गया और हर गली मोहल्ले में लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी। जगह-जगह पर वरघोड़े के स्वागत में तैयारियाँ होने लगी और लगभग 9.00 बजे हल्की-हल्की रिमझिम फुहार के बीच बैण्डबाजे एवं श्रावक-श्राविकाओं की अपार भीड़ के साथ बग्घी में सवार मुमुक्षु भाई-बहनों का वरघोड़ा प्रारम्भ हुआ और युवा शक्ति द्वारा जिनशासन की जय जयकार, दीक्षार्थियों की जय जयकार के नारे लगाते हुए भजनों को गुनगुनाते हुए वरघोड़ा आगे बढ़ रहा था। सबसे आगे बैण्डबाजे एवं उनके पीछे-पीछे श्रावक संघ के अध्यक्ष श्रीमान सुभाषजी गुंदेश, कोषाध्यक्ष जिनेन्द्रजी ओस्तवाल एवं मन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया तथा अखिल भारतीय संघ के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपत जी सेठिया आदि वरिष्ठजनों के साथ सभी श्रावक उत्साह उमङ्ग के साथ वरघोड़े में आगे बढ़ रहे थे और उनके पीछे-पीछे 10 बग्घियों में 10 मुमुक्षु भाई-बहन वरघोड़े की शान बनकर शोभा बढ़ा रहे थे। बीच में श्राविका मण्डल की अध्यक्ष सुमनजी सिंघवी एवं मन्त्री काजलजी जैन के साथ श्राविका मण्डल के सभी सदस्य एवं युवती मण्डल के सदस्य सभी जयकारे और नारे लगाते हुए उत्साह के साथ वरघोड़े की शोभा बढ़ा रहे थे। हर एक बग्घी के पास आकर प्रत्येक मुमुक्षु की जयकारा लगाते हुए पूरे जुलूस में एक उत्साह और जोश भरते हुए युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं उनके सभी सदस्य साथी पूरे कार्यक्रम की एवं शोभायात्रा की व्यवस्था सम्भालते हुए चल रहे थे। भजन मण्डली के माध्यम से गायक श्री अमितजी सिंघवी और श्री कमलेशजी मेहता द्वारा जैन भजनों की सुन्दर प्रस्तुति की जा रही थी और जगह-जगह शोभायात्रा में उपस्थित सभी जन समूह का एवं मुमुक्षु भाई बहनों का स्वागत किया जा रहा था। वरघोड़ा पावटा बी रोड से सी रोड होते हुए पावटा मैन रोड से होते हुए लगभग 12.30 बजे चोरड़िया भवन पावटा बी रोड पहुँचा, जहाँ पर कार्यक्रम के संयोजक श्री राजेशजी कर्णावट, श्री मनीषजी लोढ़ा, शक्तिनगर संयोजक श्री अशोकजी मेहता एवं उनकी सम्पूर्ण टीम द्वारा अभिनन्दन-कार्यक्रम की सुन्दर साज-सज्जा पचरंगी जैन ध्वजा से की गई एवं भव्य स्टेज बनाया गया जहाँ पर सभी मुमुक्षु भाई बहनों को बिठाकर स्वागत अभिनन्दन संघ के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा

किया गया। अभिनन्दन-कार्यक्रम के प्रारम्भ में युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

तत्पश्चात् एक-एक करते हुए सभी मुमुक्षुओं का स्वागत अभिनन्दन किया गया, साथ ही वीर माता-पिता का भी स्वागत-अभिनन्दन किया गया। तत्पश्चात् मुमुक्षुओं द्वारा अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं ने अपार उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया एवं कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस सुन्दर और ऐतिहासिक कार्यक्रम का सञ्चालन श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं तरुणजी बोहरा ने किया।

-नवरतन गिडिया, मन्त्री

कोप्पल एवं विजयपुर में भी मुमुक्षुओं की शोभायात्रा

कोप्पल (कर्नाटक)-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं मेहता परिवार की ओर से हर्षोल्लास के साथ मुमुक्षु विनय मेहता का वर्षीदान वरघोड़ा आजाद चौक से निकाला गया। वरघोड़ा में बच्चे और महिलाएँ हाथों में जैनधर्म के झण्डे लिए महावीर स्वामी की जय, जैनधर्म की जय, वंदे वीरम्, भाई हो तो कैसा हो, विनय भाई जैसा हो, त्यागियों के जयकारे लगाते हुए कतार में चल रहे थे। उनके पीछे पुरुष एवं नव दुल्हे की तरह सजे विनय मेहता रथ में सवार हुए सभी को हाथ जोड़कर अभिवादन कर रहे थे। सड़क के दोनों किनारों पर लोगों का जमघट लगा हुआ था और वरघोड़े का स्वागत कर रहे थे। वरघोड़ा श्री महावीर समुदाय भवन में पहुँचकर अभिनन्दन समारोह में परिवर्तित हुआ।

नवकार महामन्त्र से समारोह का शुभारम्भ हुआ। महिला मण्डल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। जैन समाज के अध्यक्ष श्री अभयकुमारजी मेहता ने स्वागत किया। कर्नाटक जैन कान्फ्रेंस के प्रान्तीय कोषाध्यक्ष श्री गौतमचन्द्रजी मेहता ने अपने प्रास्ताविक भाषण में श्री विनयजी मेहता के जन्म से लेकर आज तक के जीवन के बारे में जानकारी दी। मुमुक्षु श्री विनयजी मेहता एवं उनकी वीरमाता श्रीमती अनिताबाईजी मेहता ने भी अपने भाव व्यक्त किए। इसी मौके पर मुमुक्षु श्री विनयजी मेहता के परिवार की ओर से श्री महावीर जैन गौशाला, कोप्पल को गायों के लिए पेयजल की टंकी निर्माण हेतु दो लाख की दान राशि घोषित की गई। समारोह में बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद, सोलापुर, गदग, इलकल, हुबली, कुक्कनूर, मुद्गल, गंगावती, गजेन्द्रगढ, बल्लारी सहित अनेक गाँवों से लोगों का आगमन हुआ और सभी ने विनय मेहता को शाल ओढ़ाकर माल्यार्पण करके अभिनन्दन करते हुए शुभकामनाएँ दीं।

-सज्जनराज मेहता

इलकल/ विजयपुर-श्री स्थानक भवन से सुबह करीब नौ बजे मुमुक्षु मोनिका लुंकड का अत्यन्त ठाट-बाट और हर्षोल्लास से वर्षीदान वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़ा में बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे और उत्साह तथा उमङ्ग के साथ जैनधर्म का झण्डा लहराते भगवान महावीर स्वामी की जय, जैनधर्म की जय, वंदे वीरम्, त्यागियों की जयकारे से फ़िजा को गुञ्जायमान कर दिया। शहर के प्रमुख मार्ग से होते हुए वरघोड़ा पार्श्व भवन पहुँचा और वहाँ चातुर्मास के लिए विराजित जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर आचार्य देव विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा के दर्शन किए। आचार्यश्री ने आशीर्वाद दिया। वहाँ से वरघोड़ा कच्छी भवन में पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की ओर से कच्छी भवन में दीक्षार्थी मुमुक्षु मोनिका लुंकड का भव्य अभिनन्दन समारोह महासती अर्चनाश्रीजी म.सा आदि ठाणा चार के निश्रा में आयोजित हुआ। महासती अर्चनाश्रीजी म.सा ने कहा कि संयम जीवन में प्रवेश करने पर मन, वचन, काया का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इच्छाओं पर नियन्त्रण रखते हुए किसी प्रकार की आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए सभी जीवों की कल्याण

की भावना रखनी चाहिए। महासती ने साध्वी-जीवन के सम्बन्ध में मार्गदर्शन किया। अन्य महासतियों ने भी सम्बोधित किया।

बेंगलुरु के वरिष्ठ पत्रकार, धर्म रत्न विशारद उपाधि से विभूषित गौतमचन्द ओस्तवाल ने कहा कि विजयपुर की ऐतिहासिक धरा के लुंकड परिवार की लाडली मोनिका लुंकड ने मोह, माया, आसक्ति का त्याग करते हुए संयम की राह पर चलने का जो दृढ संकल्प लिया है वह अभिनन्दनीय है। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ गजेन्द्रगढ़ के अध्यक्ष अशोक कुमार बागमार ने कहा कि विजयपुर धर्म के रत्नों की खान है और खान में से कोहिनूर जैसे हीरे निकल रहे हैं।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, इलकल के प्रधान सचिव इन्द्रकुमार कटारिया ने कहा कि वैराग्य का जितना भी अभिनन्दन किया जा रहा है वह कम ही है। मुमुक्षु सुश्री मोनिका लुंकड का पुण्य उदय में आने से ही उनकी संयम ग्रहण करने की भावना जागृत हुई है। वे आध्यात्मिक साधना में दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करते हुए परिवार, संघ, समाज का नाम रोशन करें। गजेन्द्रगढ़ श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी बागमार एवं अन्यो ने तथा इलकल श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री सज्जनराजजी मेहता और अन्यो ने मुमुक्षु मोनिका लुंकड को साड़ी ओढ़ाकर एवं माल्यार्पण करके अभिनन्दन किया। इलकल श्रीसंघ के करीब बीस सदस्यों ने विजयपुर जाकर मुमुक्षु मोनिका लुंकड का अभिनन्दन किया।

-सज्जनराज मेहता

सन् 2021 के सभी यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न

मानसरोवर, जयपुर-जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की सन्निधि में ज्यों-ज्यों चातुर्मास पूर्णाहुति का समय करीब होता जा रहा था त्यों-त्यों स्थानीय भक्तों का यही सोचकर मन उदास हो जाता कि अब वह जिनवाणी का प्रवाह, वह सन्तदर्शन का लाभ, सुपात्रदान का अवसर, तत्त्व-ज्ञानवर्धक चर्चा हम कहाँ पायेंगे। कहाँ ऐसा मेला, कहाँ ऐसी धार्मिक कक्षा, न जाने कब कहाँ पायेंगे। प्रत्येक व्यक्ति हर मौके पर बड़ी आतुरता से हर गतिविधि में अब दुगुने वेग से लाभ उठाने का प्रयास कर रहा था। कारण बस एक ही था ये स्वर्णिम पल न जाने फिर कब मिलेंगे। चातुर्मास की पूर्णाहुति पर चौमासी होने से आज विशेष चहल-पहल थी। वह चहल-पहल संवर, पौषध, सामायिक आदि नानाविध धार्मिक गतिविधियों के रूप में थी।

कई सारे लोगों ने चौमासी पौषध और संवर करके आत्माराधना में भाग लिया। अगले दिन क्रान्तिकारी वीर लोकाशाह के पावन जन्मदिन के प्रसङ्ग पर प्रवचन में हॉल छोटा पड़ रहा था। लोग वीर लोकाशाह के जीवन से सम्बन्धित हर पहलू को एकाग्रता से श्रवण कर रहे थे। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने विशेषकर एक ही बात पर जोर देते हुए कहा कि जिस वीर लोकाशाह ने विशुद्ध धर्म का मार्गदर्शन किया आज हम उनके अनुयायी धर्म के नाम पर जो मिलावट का कार्य कर रहे हैं उस पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। उन्होंने प्रवचन सभा में लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा कि कैसी दयनीय स्थिति है कि लोग सर्वधर्म समभाव को भी सही ठहराते हुए उसका अनुसरण कर रहे हैं कि गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास। यह करुणदृश्य है। हर पीली वस्तु सोना नहीं होती। जिस महापुरुष ने जड़ पूजा पर विशेष रूप से प्रहार कर निराकार के लिए प्रेरित किया आज उन्हीं के अनुयायी ऊपर से स्थानकवासी कहलाते हैं और दूसरी तरफ जड़पूजा में भी भाग ले रहे हैं और समाधि स्थान को भी उचित ठहरा रहे हैं। ये करुण दशा नहीं है तो और क्या है? भला कैसे हमारा विशुद्ध धर्म व्यापक बन पाएगा? जो स्थानकवासी परम्पराएँ विशुद्ध एकान्त महावीर प्रभु के सत्य सिद्धान्त पर अटल हैं, उनमें ही उन्हीं के भक्त आज

भावातिरेक में बहकर सेन्ध लगा रहे हैं। यदि हम सच्चे स्थानकवासी परम्परा के उपासक हैं तो आज संकल्प करें कि कभी-भी किसी भी परिस्थिति में सिद्धान्तों से समझौता नहीं करेंगे और क्रान्तिकारी वीर लोकाशाह के बलिदान को और योगदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

आज 19 नवम्बर, 2021 का दिन स्थानीय लोगों के लिए अनमने भावों को लिए आया, क्योंकि जिन सन्तों के चातुर्मास से तत्त्वज्ञान सीखा, समझा, जाना और जिनसे गहरा आत्मीय भाव जुड़ा, जिनकी प्रेरणाएँ अन्तर्दिल को छू गई आज वे ही सन्त चातुर्मास की सम्पन्नता की विदाई ले रहे हैं। ठीक 8.30 बजे जब सन्तों ने विहार के लिए क़दम बढ़ाए जय-जयकारों के बीच अनेक लोगों की आँखों से आँसू बह निकले। विहार का विहंगम दृश्य एक ऐतिहासिक पल में दर्ज हो रहा था। सैकड़ों लोग अपने आदरास्पद सन्तों की विदाई के विहार में साथ चल रहे थे। सन्त प्रथम विहार कर पोरवाल भवन पधार गए। शान्तिनाथ भगवान की स्तुति के पश्चात् संक्षिप्त उद्बोधन में महाराज श्री ने यही फरमाया-सन्तों को विदाई दे रहे हो, मगर उनकी प्रेरणा, उनके द्वारा गृहीत ज्ञान को विदा मत करना। जैसे गाय पहले एक बार चर लेती है, फिर एक जगह बैठकर जुगाली करती है ऐसे ही आप भी सन्तों द्वारा गृहीत ज्ञान का चिन्तन कर आत्मसात् करने का प्रयास करें। विहार क्रम में 24 नवम्बर को महाराजी फार्म पधारो। यहाँ 30 नवम्बर तक नीतिश टॉवर में विराजे, जहाँ प्रतिदिन प्रवचन हुए एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि महासती मण्डल को सान्निध्य लाभ मिला। 25 नवम्बर को विरक्ता निकिताजी गेलडा का सभी संघों द्वारा अभिनन्दन किया गया। यहाँ से श्यामनगर, नित्यानन्द नगर, वैशालीनगर, रंगोली गार्डन, पाँच्यावाला, झोटवाड़ा, विद्याधरनगर, बनीपार्क, निर्माण नगर आदि उपनगरों को फरसते हुए सर्वत्र प्रवचन प्रभावना का सुन्दर वातावरण रहा। इसके पश्चात् भाँकरोटा, कोठारीगढ़, बड़ के बालाजी में तीनों स्थानों पर प्रवचन हुए जहाँ जयपुर निवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

विहार के क्रम में 24 दिसम्बर को दूदू में आगमन हुआ, जहाँ परम श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. विराजमान थे। सन्तों के विराजने से दूदू के हर गुरुभक्त में धर्म का वह माहौल बना कि उमङ्ग, उल्लास और उत्साह बच्चे-बच्चे में देखने को मिला। प्रवचन में लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बन्दकर बैठने का संकल्प किया। परिणामस्वरूप प्रवचन में छोटे से लगाकर बड़े तक सभी उत्साहित मन से उपस्थिति दे रहे हैं। रविवार 26 दिसम्बर के दिन प्रवचन में एक अलग ही छटा देखने को मिली, क्योंकि जयपुर के अनेक श्रद्धालुजन तथा विशेषकर मानसरोवर से लगभग 100-125 लोगों ने दर्शन, वन्दन, प्रवचन का लाभ लिया और भी अन्य क्षेत्रों से लोगों ने पहुँचकर अपनी भक्ति-भावना का परिचय दिया।

साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-9 उत्तम सामायिक-स्वाध्याय भवन में सुखे-समाधे विराज रहे हैं। महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आठि ठाणा-4 का विहार 30 नवम्बर से पीपाड़ का लक्ष्य लेकर निरन्तर गतिमान है। महासती-मण्डल अजमेर से आगे पहुँच गये हैं। -सुरेशचन्द्र कोठारी, मन्त्री

गोटन -जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में चातुर्मास काल में श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मध्यान में उत्साह से भाग लिया।

प्रवचन में श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने जैन रामायण के द्वारा श्रोताओं का हृदय वैराग्य से वासित किया। समय-समय पर श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. और श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. तथा महासतियाँजी म.सा. के व्याख्यान का लाभ मिलता रहा।

चातुर्मासकाल में तपस्या 31 की 1, 17 की 1, 12 की 2, 11 की 7, 10 की 8, 8 की 45, 5 की 5, 4 की 4, तेले की तपस्या लगभग 400 तथा उपवास, एकाशन की तपस्या निरन्तर चलती रही। चातुर्मास में एकान्तर की तपस्या भी 4 बहिनों के चलती रही। चार महीने तक संवर साधना में प्रतिदिन 25-30 श्रावक भाग लेते थे।

ध्यान शिविर का आयोजन 14-21 अक्टूबर तक हुआ, जिसमें साधु-साध्वी, वैरागी-वैरागिन बहनों ने भाग लिया। स्थानीय लोगों ने भी धर्मध्यान में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा चातुर्मास की गतिविधियों में भावपूर्वक योगदान दिया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 59वें दीक्षा दिवस पर 31 तेले, 59 एकाशन और 2 अठाई की तपस्या हुई। सभी सन्त-भगवन्तों और महासती मण्डल ने आचार्य भगवन्त के गुणों पर प्रकाश डाला।

-हंसराज चौपड़ा

महासती मण्डल के कतिपय चातुर्मासों में धर्माराधना

अमरावती-आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती सुशिष्या महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 के नेश्राय में सम्पन्न चातुर्मास के दौरान सम्पन्न धर्माराधना इस प्रकार है-

पर्युषणपर्व में 8 दिन सिद्ध पद की आराधना में 48 भाई-बहनों ने भाग लिया। आचार्यश्री के 59वें दीक्षा दिवस पर सिद्धि तप की आराधना में 59 भाई-बहनों ने पूर्ण उत्साह से भाग लिया तथा दीक्षा दिवस सामूहिक एकाशन के साथ मनाया गया। चातुर्मास काल में आने वाले महापुरुषों की जन्म जयन्ती-दीक्षा दिवस, पुण्यतिथि पर त्याग, पचचक्खाण एवं उनके जीवन से प्रेरणा पर सुन्दर उद्बोधन हुआ।

शहर के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री महेन्द्र कुमारजी चौपड़ा के माताजी श्रीमती हंगामबाईजी जवाहरलालजी चौपड़ा को महासतियाँ के द्वारा संलेखना संधारा करवाया गया जो उसी दिन सीझ गया। अहमदनगर (महाराष्ट्र) के स्वाध्याय संघ के समस्त स्वाध्यायी भाइयों का एक दिन का कार्यक्रम हुआ जिसमें लगभग 50 स्वाध्यायी बाहरगाँव से पधारे, उसमें महासतियाँजी म.सा. ने बहुत अच्छा मार्गदर्शन दिया। जिससे समस्त स्वाध्यायी भाई प्रभावित हुए एवं भविष्य में अच्छी से अच्छी स्वाध्यायी सेवा देने के लिए प्रेरित हुए। महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ, जलगाँव का भी 8-10 नवम्बर तक 3 दिन का स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसका सम्पूर्ण आयोजन श्रीसंघ के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ। बाहरगाँव से लगभग 60 स्वाध्यायी भाई अमरावती पधारे। जलगाँव से श्री शुभमजी बोरा, श्री प्रकाशचन्द्रजी (पण्डितजी) ने सभी स्वाध्यायी भाइयों को प्रशिक्षित किया। महासतीजी म.सा. ने भी उन सभी स्वाध्यायियों को अच्छा प्रशिक्षित किया, मार्गदर्शन प्रदान किया। अपनी स्वाध्यायी सेवा में किस तरह दिन-प्रतिदिन सुधार कर सकें उन्हें प्रेरणा दी गई। सभी स्वाध्यायी भाइयों का अमरावती श्रीसंघ की ओर से सत्कार और पुरस्कृत भी किया गया।

चातुर्मास में सम्पन्न तपस्या-30 उपवास (मासखमण) चिरागजी शता, 30 उपवास (मासखमण) सौ. नेहा महावीरजी चौपड़ा, 16 की तपस्या मीनाजी-संजयजी बोकरिया, 10 उपवास की तपस्या अक्षयजी-अमृतजी मुथा, 9 उपवास 11, 8 उपवास 33, 6 उपवास 1, 5 उपवास 6, 4 उपवास 2 तथा कई ऐसे छोटे-बड़े पचचक्खाण हुए, जैसे-आगम की गाथा का स्वाध्याय, सूत्रों को कण्ठस्थ करना, पौषध करना, प्रतिक्रमण करना, संवर करना, इस तरह पूरे वर्ष के लिए पचचक्खाण कराये गये।

आजीवन शीलव्रती-1. गुप्त, 2. श्री अमृतलालजी-मीनाजी मुथा-अमरावती, 3. श्री प्रकाशचन्द्रजी-शोभादेवीजी बोकरिया-अमरावती, 4. श्री ओमप्रकाशजी-विजुबालाजी मुपोत-अमरावती, 5. श्री मंगलचन्द्रजी-अलकाजी कोटेचा-नागापुर, 6. श्री रिखबचन्द्रजी-तारादेवीजी बम्ब-जालना, 7. श्री इन्द्रचन्द्रजी-विजयाबाईजी

सुराणा-अमरावती, 8. श्री ललित कुमारजी-निलीमाजी बेदमुथा-अमरावती, 9. श्री शिवकुमारजी-सरिताजी सकलेचा-अमरावती, 10. श्री गोविन्दरामजी-सुनीताजी अग्रवाल-अमरावती, 11. वीरपिता श्री मोहनलालजी-इलायचीदेवीजी बागरेचा-हैदराबाद, 12. वीर बड़े पिता श्री प्रकाशचन्दजी-शकुन्तलादेवीजी बागरेचा-हैदराबाद, 13. वीर पिता श्री शान्तिलालजी-कमलादेवीजी बागरेचा-हैदराबाद, 14. श्री सुभाषचन्दजी-आरतीजी कोटेचा-नागपुर, 15. रमेशचन्दजी-संगीताजी संचेती-अमरावती, 16. श्री प्रकाशचन्दजी-अरुणाजी बैद-अमरावती, 17. श्री कमलजी-सरोजजी नाहटा-अमरावती, 18. श्री सुरेशजी-भारतीजी बोथरा-अमरावती, 19. श्री नरेन्द्रजी-जयश्रीजी कटारिया-जलगाँव, 20. श्री भविष्य कुमारजी-पुष्पाबाईजी बरडिया-अमरावती, 21. श्री अनिलजी-किरणजी सुराणा-अमरावती, 22. श्री अशोकजी-नीलाजी अजमेरा-अमरावती।

यह अमरावती का चातुर्मास स्वर्ण अक्षरों में सदैव के लिए अंकित हो गया है। महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. की गुरुणीजी साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी म.सा. की पुण्य तिथि सामूहिक एकाशन के साथ मनाई गई और भी व्रत प्रत्याख्यान ग्रहण किये गये।

-सुरेशचन्द मुण्णोल, सचिव

देई-परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री श्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास उमङ्ग और उत्साह से ऐतिहासिक रूप में सम्पन्न हुआ। देई में पहली बार एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेला और संवर की लड़ियाँ चातुर्मास प्रारम्भ से लेकर चातुर्मास पूर्णाहुति तक निरन्तर गतिमान रहीं। बड़ी तपस्याएँ पहली बार हुईं, जिनमें तेले 67, चोले 5, पचोले 3, अठाई 3, नौ 3, दस 2, ग्यारह 2, तेरह 1, पन्द्रह 1 तपाराधना के साथ ज्ञानाराधना का उत्साह भी बालक-बालिकाओं में देखने लायक था। लगभग 26 बच्चों ने सामायिकसूत्र को विधि सहित कण्ठस्थ किया। आचार्यप्रवर का विशेष आह्वान है कि संघ का प्रत्येक सदस्य बालक, युवा, वरिष्ठ सभी प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करे। इस आह्वान को सभी सदस्यों ने शिरोधार्य करके लगभग 7 युवाओं एवं बालकों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है। पूज्या महासतीजी के पावन सान्निध्य में सामूहिक दया तथा भिक्षु दया का आयोजन किया गया, जिसमें कई श्राविकाएँ तथा पाठशाला के कतिपय बच्चों ने दयाव्रत की साधना कर जिनशासन की शोभा बढ़ाई। शरद पूर्णिमा पर लगभग 80 श्रावक-श्राविकाओं ने 10-15 सामायिक के साथ रात्रि जागरण कर धर्म आराधना की।

सामायिकसूत्र, अंतगडदसासूत्र की ओपन बुक परीक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक वन डे मैच का भी आयोजन रखा गया। आठ टीम बनाई गयी, जिसमें से श्रुतिजी जैन की टीम प्रथम रही। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के पर 15 दिन पूर्व से ही 'उत्तराध्ययनसूत्र' का मूल रूप फरमाकर, विश्लेषण किया। देईवासी प्रथम बार ही श्रवणकर हर्षविभोर हो गये। पूज्य गुरुदेव के 59वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय धार्मिक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें प्रथम दिवस को 5 सामायिक, द्वितीय दिवस को संवर और तृतीय दिवस को एकाशन के रूप में मनाया गया। लगभग तीनों ही दिन 59 श्रावक-श्राविकाओं ने गुरु-भक्ति का परिचय दिया। इसी के साथ जैनेतर भाई श्री धनराजजी गुर्जर ने 13 उपवास कर गुरुदेव के श्री चरणों में तपस्या रूपी भेंट समर्पित की।

महासतीजी ने जीवन में ब्रह्मचर्य का महत्त्व एवं महापुरुषों के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य भव में शीलव्रत ग्रहण करने के बारे में समझाया, जिसमें 12 सदस्यों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। महासतीजी ने पूज्य गुरुदेव के दीक्षा दिवस पर गुरुदेव के जीवन के कतिपय संस्मरण तथा दीर्घदृष्टि, दूरदर्शिता पर प्रकाश डालते हुए गुरुकृपा तथा गुरु किस तरह हमारी रक्षा करते हैं उसका महत्त्व समझाया तो सभी गुरु भक्तों ने गुरु के प्रति श्रद्धानवत हो प्रवचन हाल को गुरुदेव के जयघोष से गुञ्जायमान कर दिया। 19 तारीख को चातुर्मास पूर्णाहुति के अवसर पर देई श्रीसंघ ने गुरुदेव की कृपा तथा महासतियाँजी के अथक पुरुषार्थ के लिए आभार व्यक्त कर विदाई समारोह मनाया।

महासतीजी म.सा. की प्रेरणा से कई श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मस्थानक में आकर सामायिक करने या 11 नवकार गिनने के नियम लिये तो कइयों ने अष्टमी, चतुर्दशी को धर्मस्थानक में आकर प्रतिक्रमण करने आदि नियम ग्रहण किये। आयम्बिल लड़ी को भी चातुर्मास पश्चात् गतिमान रखने की प्रेरणा की तो वह गतिमान है। 20 तारीख को श्री ताराचन्दजी जैन (मन्त्री) के निवास स्थान पर आबाल वृद्धों ने अश्रुपूरित नयनों से विदाई दी। देईवासियों के मुँह से जिधर सुनो एक ही आवाज़ थी कि ऐसा चातुर्मास देई में प्रथम बार ही हुआ। देई से विहार कर महासतीजी बंसोली बावड़ी पधारे तो लगभग 50 जनों ने विहार सेवा का लाभ लिया और आगे भी विहार सेवा निरन्तर चली।

चातुर्मास में शीलव्रत ग्रहण वालों की सूची-1. श्रीमती उषाजी-श्री सत्यनारायणजी जैन, 2. श्रीमती सुशीलाजी-श्री शम्भु कुमारजी जैन, 3. श्रीमती विमलाबाईजी-श्री महावीरजी जैन, 4. श्रीमती विमलाजी-श्री सत्यनारायणजी जैन, 5. श्रीमती नन्दूबाईजी-श्री चाँदमलजी जैन, 6. श्रीमती प्रगासीजी-श्री हीरालालजी गुर्जर, 7. श्रीमती नंदादेवीजी-श्री विमल कुमारजी जैन, 8. श्रीमती प्रेमबाईजी-श्री महावीरजी महाजन, 9. श्रीमती नुवासीजी-श्री रामफूलजी गुर्जर, 10. श्रीमती बरदीबाईजी-श्री जगदीशजी खाती, 11. श्रीमती इन्द्राजी-श्री महावीरजी जैन, 12. श्रीमती तेजीबाईजी-श्री रामकुँवरजी गुर्जर।

-ताराचन्द जैन, मन्त्री

पाली-सेवाभावी व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 का पावन चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग की साधना से पूरिपूर्ण रहा। यहाँ छह दम्पती श्रावक-श्राविकाओं ने ब्रह्मचर्य व्रत के पच्चक्खाण लिए, वैरागिन बहन रीताजी और वैरागी भाई अंशजी हीरावत का अभिनन्दन किया गया। तेले की निरन्तर लड़ी चली।

-मन्त्री, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली

पीपाड़ सिटी में संघ एवं संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 22-23 जनवरी 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन समारोह, संघ की सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शनिवार एवं रविवार, दिनांक 22-23 जनवरी 2022 को पीपाड़ सिटी, जिला-जोधपुर (राज.) में किया जा रहा है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमन्त्रित हैं। विवरण निम्नानुसार है-

गुणी-अभिनन्दन समारोह में संघ द्वारा प्रदेय सम्मान

(समारोह 22 जनवरी, 2022, दोपहर 11.30 बजे से)

- (1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान
- (2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)
- (3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान
- (4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान
- (5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

श्रावक संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी की बैठक शनिवार, 22 जनवरी, 2022 को मध्याह्न 2.30 बजे रखी गई है। सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आमसभा एवं सम्मान कार्यक्रम

(समारोह 23 जनवरी, 2022, दोपहर 12.00 बजे से)

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा एवं संघ में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने वाले श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान कार्यक्रम रविवार, 23 जनवरी 2022 को दोपहर 12.00 बजे पीपाड़ सिटी, जिला-जोधपुर (राज.) में आयोजित किया जा रहा है। वार्षिक साधारण सभा में विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. मंगलाचरण
2. स्वागत- राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा
3. गत आमसभा बैठक की कार्यवाही का पठन, अनुमोदन तथा प्रगति की जानकारी।
4. गत संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों एवं सुझावों की जानकारी।
5. कार्यकारिणी द्वारा अनुमोदित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के त्रिवार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन।
6. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2020-2021 के अंकेक्षित वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2021-2022 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
7. अंकेक्षक की नियुक्ति।
8. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षगणों एवं संयोजकों द्वारा अभिव्यक्ति।
9. विशिष्ट संघ-सेवियों का सम्मान कार्यक्रम।
9. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
10. शासन सेवा समिति संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
11. संघ संरक्षक मण्डल संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
12. वर्ष 2021-2024 की समयावधि के लिये संघ संरक्षक मण्डल द्वारा प्रस्तावित नये राष्ट्रीय संघाध्यक्ष एवं सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों के नामों की पुष्टि।
13. नये राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
14. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।
15. धन्यवाद- संघ महामन्त्री द्वारा।

संघ के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि संघहित में अपने लिखित सुझाव संघ के प्रधान कार्यालय को 10 जनवरी 2022 तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार एवं निर्णय करने का प्रयास रहेगा। संघ-सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने हेतु आप अपने क्षेत्रों में भी अवश्य सूचना करें।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन,
प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ व समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-

समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

23. श्री धर्मेन्द्रजी, सुनीलजी लुणावत (जयपुर वाले), हांगकांग 24,000/-

24. श्री मनोज कुमारजी (व्याख्याता) सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन 'पाटोली वाले',
मानसरोवर-जयपुर (पूर्व छात्र) 12,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*,
Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi
Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID :
35288297 निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु
सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

Jain Academic Education : Progress and Futher Plans in America

With the strong support of many philanthropists, dedicated volunteers and well-wishers, the year 2021 has truly been a banner year in the progress of Jain Education in academia. Below is a very brief summary of what has been achieved and done in 2021.

1. New Programs Established in 2021

(A) Permanent (endowed) Professorship at University of Illinois at Champaign, Urbana, IL, University of Colorado at Denver, CO, University of Connecticut at Storrs, CT and University of South Florida at Tampa, FL (B) Permanent (endowed) Post-Doctoral Fellowships at Rutgers University, NJ and University of Pittsburgh, PA (C) 3 year Post-Doctoral Fellowship at Arizona State University, Phoenix, AZ (D) Endowed Jain Study Program at University of Florida at Gainesville, FL (E) Adjunct Professor program at University of Dayton, Dayton, OH and at Florida Atalante University

Prakrit Fellowships

To educate and train scholars to become fluent in Prakrit (language of Jain agmas), 3 fellowships (at a cost of \$12000 each) were awarded to 3 PhD scholars to study Prakrit full time for 9th months in India. This makes a total of 6 scholars to so far.

Initiatives in Jain Studies in Europe and other Countries

(A) U.K, Jain donors have been financially supporting two PhD students at SOAS (London University) and also pledged full funding for next 3 years to the yearly Conference on Jainism at SOAS. (B) Germany, Dr. Claire Maes (a Jain Scholar at University of Texas Austin,

at Austin TX) accepted a senior level academic position at Tubingen University in Germany to start activities and programs in Jainism there. (C) **Belgium**, Funded and established a 3 year program at Professor level in Jain studies at Ghent University in Belgium (D) **Brazil**, Hopefully we recently opened some doors for a start of Jain Studies in August 2022 at a university in Sao Palo, Brazil (E) **Pakistan**, Similarly a few programs to document and catalog Jain Artefacts in Pakistan and offer an introductory course in Urdu language in Pakistan are just going to be started very soon.

Other Programs and initiatives

(A) **Symposium on Jain Mathematics**- Held a first ever 3 day symposium on Jain Mathematics and a world class proceedings of this symposium is expected to be out from a US publisher in 2-3 months. (B) **Dating of birth of Bhagwan Mahavira**- There is a big disagreement (by Jain and Western scholars) about the dating of the birth and Nirvaan of Bhagwan Mahavir Swami. We have recently Initiated a high level research program with reputed scholars (from several countries and disciplines) to remove this confusion if possible. (C) **International Center for Jainism and Science**- Since there is so much Science in Jainism, we have established a funded an International Center for Jainism and Science in India. In future emails, we will share its progress and findings.

International School for Jain Studies (ISJS) www.isjs.in

Established in 2004 (to educate and train scholars in Jainism for academia), ISJS has been expanding significantly in many direction. So far it has hosted more than 800 scholars from more than 26 universities and many countries.

(A) From New Delhi, its offices have permanently moved to Pune under Amar Prerna Trust of Dr. Abhey Firodia ji. (B) ISJS is expanding its staff and has already hired several new staff (in fact looking for more), (C) Signed MOUs of collaborations with several reputed universities in USA, Belgium and India (D) Regularly holds thematic seminars and conferences. (E) Publishes a quarterly refereed journal. (F) Has authored several books.

Plans and Vision in 2022

(A) We already have negotiated the following initiatives and will work to raise needed funds Endowed Chair at Hebrew University in Jerusalem, Israel Endowed Chair at University of California at Berkely, (B) We will work with ISJS and other organizations in India to establish Endowed Chairs in Jainism at at least 2 highly rated and prestigious universities in India. (C) Train a few very promising born Jain scholars to compete and occupy the established Academica Positions in North America , Europe and other countries (D) Work with universities to get the vacant positions filled and make all the academic position functional

-Dr. Sulekh C. Jain, Email Address : scjainphd@gmail.com

जैन नारियों की गौरव-गाथा

(अखिल भारतीय खुली किताब प्रतियोगिता-2021-2022)

‘जैन श्राविकाओं का बृहद् इतिहास’ पुस्तक पर आधारित अखिल भारतीय खुली किताब प्रतियोगिता-2021-2022 का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी प्रश्न-पुस्तिका का वितरण 15 सितम्बर, 2021 से प्रारम्भ हो चुका है तथा उत्तर-पुस्तिका भेजने की अन्तिम तारीख 15 मई, 2022 रखी गई है। परिणामों की घोषणा की

सूचना आगामी 2022 के चातुर्मास से पूर्व की जाएगी। प्रतियोगिता से सम्बन्धित नियमावली निम्नानुसार है-

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पुस्तक में से देने अनिवार्य हैं। उत्तर लिखते समय नीले पेन का ही प्रयोग करें। बिना पृष्ठ संख्या के उत्तर को अंक प्राप्त नहीं होंगे।
2. प्रश्न-पुस्तिका की फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. निर्णायक गणों का अन्तिम निर्णय ही मान्य होगा।
4. विजेताओं का परीक्षा परिणाम व्हाट्सएप्प और फेसबुक पर दिया जाएगा।
5. प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले भाग्यशाली विजेताओं को क्रमशः-1101/-, 701/-, 501/- तथा 201/- के पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। नोट-प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ स्थान तीन (3) निकाले जायेंगे।
6. सुन्दर-स्वच्छ लेखन कार्य होने पर अतिरिक्त अंक (बोनस अंक) दिये जायेंगे।
7. विलम्ब से प्राप्त प्रतियोगिता की उत्तर-पुस्तिका मान्य नहीं होगी।
8. एक पुस्तक पर 2 प्रश्न-पुस्तिका ली जा सकती है। अतिरिक्त प्रश्नपत्रिका का मूल्य रुपये 20/-
9. पुस्तक मूल्य रुपये 550/- है, किन्तु प्रतियोगिता हेतु प्रश्नपुस्तिका सहित मूल्य रुपये 350/- रखा गया है।
10. एक समान अंक प्राप्त होने पर लकी ड्रा द्वारा पुरस्कार निकाला जायेगा।

पुस्तक एवं प्रश्न पत्रिका प्राप्ति स्थान-भक्ति जैन 9819303408, 8779705815 उत्तर-पुस्तिका भिजवाने का पता-साध्वी डॉ. प्रतिभाश्रीजी 'प्राची', द्वारा वर्धमान एज्युकेशन एण्ड रिसर्च इंस्टिट्यूट, वर्धमान प्रतिष्ठान, आँडी शोरूम गली, रत्ना हॉस्पिटल के सामने, हनुमान नगर, शिवाजी नगर, पुणे-411016 (महाराष्ट्र)

बधाई

जोधपुर-सुश्री अमिताजी सुपुत्री श्रीमती ममता-श्री धर्मचन्दजी जैन (रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड) ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), जोधपुर से मास्टर ऑफ टेक्नोलोजी इन एडवान्स मेन्यूफैक्चरिंग एण्ड डिजाइन में एम.टेक की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही आरसेलर मित्तल निप्पोन स्टील इण्डिया लिमिटेड, हजीरा-सूरत में 'गेजुएट इंजिनीयर ट्रेनी' के पद पर नियुक्ति प्राप्त की है।



केलिफोर्निया-सुश्री मेघनाजी सुपुत्री श्रीमती कल्पनाजी-सुभाषजी एवं सुपौत्री श्री सागरमलजी मुणोत, किशनगढ़, राजस्थान ने जोरजिया इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से कम्प्यूटर में मास्टर डिग्री ऑनर्स के साथ प्राप्त की है। धर्मनिष्ठ युवती ने श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की चौथी कक्षा भी उत्तीर्ण की है। वे अपने पिता के स्वाध्याय में तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रस्तुतीकरण में सहयोग करती हैं।



सवाईमाधोपुर-श्री विकासजी जैन सुपुत्र श्रीमती पदमाजी-श्री हनुमान प्रसादजी जैन (ICICI Bank) पचाला वाले-सवाईमाधोपुर की सहायक अभियन्ता, जनस्वास्थ्य अभियानिकी विभाग में नियुक्ति हुई है।





जोधपुर-श्री अविनाशजी सुपुत्र श्रीमती नीताजी-श्री अरुण कुमारजी सुपौत्र श्रीमती शान्तिदेवीजी-स्व. श्री पारसराजजी मेहता इमेजिनेशन टेक्नोलॉजी, क्रेम्ब्रिज (यू.के.) में प्रमुख सॉफ्टवेयर इंजिनियर के रूप नियुक्त हुए हैं।



जोधपुर-श्रीमती सुरभिजी मेहता धर्मसङ्गिनी श्री अविनाशजी सुपुत्रवधू श्रीमती नीताजी-श्री अरुण कुमारजी सुपौत्रवधू श्रीमती शान्तिदेवीजी-स्व. श्री पारसराजजी मेहता की आर्म लिमिटेड, क्रेम्ब्रिज (यू.के.) में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में पदोन्नत हुई है।



पुलिया-चि. पुनीतजी सुपुत्र श्री संजयजी सुपौत्र श्री हरकचन्द्रजी बोरा (राज्य उपाध्यक्ष, भारती जैन संघटना) ने एम.टेक (स्ट्रक्चर) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

श्रद्धाञ्जलि

अमरावती-सुश्रावक श्री नवीनभाईजी देसाई का 16 दिसम्बर, 2021 को 18 दिन के संथारा-समाधिकपूर्वक



स्वर्गमन हो गया। उन्होंने 29 नवम्बर को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण किया था। महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. एवं सतियाँजी संथारा सम्बन्धित सभी स्तवन सुनाने के साथ, महापुरुषों के बताए मार्ग पर अपना उद्बोधन दे रहे थे, श्री नवीनभाई सुन भी रहे थे। सुनते-सुनते ही उन्होंने अपने इस जीवन की अन्तिम श्वास ली। 'मेरे जीवन का जब अन्त हो, मेरे सामने एक सन्त हो', गीत की इस पंक्ति को सिर्फ गाया ही नहीं, अपने जीवन में सार्थक भी किया। सहजता, सरलता और जाग्रत अवस्था में श्री नवीनभाई देसाई ने जिस आत्मबल के साथ संथारा ग्रहण किया और जो आध्यात्मिक वीरता का परिचय दिया, वह हम सबके लिए अनुमोदनीय, प्रशंसनीय है। पूरे जीवनकाल की साधना का निचोड़ है संथारा। संथारा एक साधना है, महातप की साधना है। शरीर की आसक्ति घटा कर मन के अशुद्ध भावों की आहुति का नाम है संथारा। महासतीजी म.सा. ने अपनी साधना करते हुए, संथारा वाले के यहाँ रोज जाकर जो साधना में सहयोग दिया, वह अत्यन्त अनुमोदनीय है। उनके इस उपकार को अमरावती संघ कभी भुला नहीं सकेगा।

-मन्त्री-सुरेशचन्द्र मुण्णेत, श्री वर्धमान स्थानकवासरी जैन श्रावक संघ, अमरावती

दिल्ली-धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती मीमाजी धर्मसङ्गिनी स्व. श्री सम्पतराजजी चौधरी का 76 वर्ष की आयु में 18



दिसम्बर, 2021 को देवलोकगमन हो गया। नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली सुश्राविका ने समय-समय पर तप-त्याग का भी आनन्द लिया। परिवार में आपने सत्प्रेरणा कर सबको आगे बढ़ाया एवं निष्काम भाव से सेवा की। कविश्रेष्ठ श्री सम्पतराजजी चौधरी को आप साहित्य रचना के लिए प्रेरित करती रहती थीं, जिसके फलस्वरूप मुक्ति का राही जैसी श्रेष्ठ रचना हो सकी। अभी सात माह पूर्व ही श्री चौधरी साहब का देहावसान हुआ था। आप स्वाध्याय करने के साथ डायरी में सद्विचारों का संकलन भी करती थीं तथा अपनी सोसायटी में आण्टी के रूप में प्रिय थीं। सकारात्मक विचारों की धनी श्राविका समय-समय पर पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि सन्त-वृन्द के दर्शन-वन्दन का लाभ लेती रहती थीं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सुनीलजी चौधरी मैक्स हॉस्पिटल, दिल्ली में प्लास्टिक सर्जन तथा कनिष्ठ सुपुत्र श्री

विमलजी चौधरी मैकेजी कम्पनी, गुडगाँव में कार्यरत हैं।

जोधपुर-श्रीमती लीलाबाई मानकचंदजी कोचर (जैन) का 73 वर्ष की उम्र में 5 दिसम्बर, 2021 को महासती श्री समर्पिताजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में संधारा सहित स्वर्गवास हुआ। आप अपने पीछे 3 पुत्र, 3 पुत्रियाँ, पौते सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई है, स्वाध्यायी बहन मनीषाजी कोचर की आप माताजी हैं। गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा., श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं अन्य सन्त-सतीवृन्दों के प्रति आपकी गहरी श्रद्धाभक्ति एवं निष्ठा थी।
-धीरज डोसी, जोधपुर



मुम्बई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उमरावकुंवरजी धर्मसहायिका स्वर्गीय श्री प्रहलादचन्दजी भण्डारी दत्तक पुत्रवधू स्वर्गीय श्री कुंकुमचन्दजी भण्डारी (जोधपुर निवासी) का 24 नवम्बर, 2021 को 94 वर्ष की आयु में संधारापूर्वक स्वर्गवास हो गया है। आपकी देव, गुरु, और धर्म के प्रति असीम आस्था थी। आप में उत्तम कुटुम्ब भावना, वात्सल्य भावना, उदारता, सहिष्णुता और सरलता की भावना भरपूर थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



जोधपुर-धर्मनिष्ठ, संघसेवी सुश्रावक श्री प्रकाशमलजी ओस्तवाल का 3 दिसम्बर, 2021 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। संघ-समाज के साथ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहे। आप चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पधारकर सामायिक-साधना-आराधना करते थे। सम्पूर्ण ओस्तवाल परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप जुड़ा हुआ है। आपके बड़े भ्राता श्री पनराजजी ओस्तवाल की श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ में वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ रही हैं। श्री पारसमलजी ओस्तवाल की श्री ओसवाल समाज बासनी क्षेत्र के मन्त्री के रूप में और रत्नसंघ तथा संघीय संस्थाओं में महनीय सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में ओस्तवाल परिवार सदैव तत्पर है।



ईचोड-धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी, सुश्रावक श्री नेमीचन्दजी सुपुत्र श्री मुलतानमलजी श्रीश्रीमाल (कानाना वाले) का 9 दिसम्बर, 2021 को 77 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपने दो मासमखण तप पूर्ण किए और 35 अठाइयों की थीं। उपवास, बेला, तेला आप करते ही रहते थे तथा हर रोज 10 से 15 सामायिक करते थे। 21 वर्ष पहले आपने सजोड़े शीलव्रत के पचचक्राण ग्रहण कर लिये थे। आप भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।-सोहनलाल जैन, बालोतर



अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री शान्तिमलजी साण्ड का 12 नवम्बर, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सेवा के साथ-साथ सरलता, सहिष्णुता तथा उदारता जैसे सद्गुणों से ओत-प्रोत था। स्वाध्याय भवन में आकर आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय एवं प्रतिक्रमण करते थे। आपकी पुत्रवधू श्रीमती कुसुमजी साण्ड साधु-सतीवृन्द को चिकित्सा सेवा में सहयोग देती रही है। आप वर्तमान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ अजमेर के कार्यकारिणी सदस्य थे।
-सी. पी. कटारिया



जोधपुर-संघसेवी सुश्रावक श्री अशोकजी सुपुत्र स्व. श्री माणकमलजी भण्डारी का 16 दिसम्बर, 2021 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तथा संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपका जीवन सरलता, सहजता, सादगीपूर्ण, धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायणता, कर्म



सेवाभावना, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप घोड़ों के चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधार कर धर्मध्यान का लाभ प्राप्त करते थे। परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के चातुर्मास में आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्मध्यान का लाभ प्राप्त किया। आदरणीय स्व. श्री माणकमलजी भण्डारी ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में महामन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया था। आप संघ के विशिष्ट श्रावक होने के साथ उत्कृष्ट समाज-सेवी थे। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी भण्डारी परिवार सदैव समर्पित है। -*धन्यवत् सेठिया, महामन्त्री*



जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री विनयचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री रतनचन्दजी नवलखा का 10 दिसम्बर, 2021 को निधन हो गया। आप बहुत ही सरलहृदय, मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी रत्नसंघ में गहरी आस्था थी। आप सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक हर क्षेत्र में अग्रणी रहते थे। आप सभी सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की सेवा में भी अग्रणी रहते थे। आपका परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। आपका जीवन युवावस्था से ही संघ-सेवा में समर्पित रहा। आपको संघ के साधु-साध्वीवृन्द को विहार के मध्य सदैव ही कभी विश्राम हेतु, कभी चिकित्सा हेतु अनुकूल निवास स्थान उपलब्ध कराने का लाभ श्रीसंघ के द्वारा समय-समय पर मिलता रहा। आपके प्रोत्साहन से आपकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती केसरदेवीजी, पुत्र-पुत्रवधू, पौत्र-पौत्री पूरा परिवार चारित्र आत्माओं की सेवा में तथा साधर्मिक भाई-बहनों के आतिथ्य सत्कार में सदा ही उल्लसित होकर तत्पर रहा।

-*अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

नागपुर-धर्मपरायण सुश्रावक श्री शान्तिलालजी मांगीलालजी गाँधी का 77 वर्ष की आयु में 08 दिसम्बर, 2021 को देवलोकगमन हो गया। श्री नागपुर ओसवाल पंचायती के आज तक के इतिहास में सबसे कम उम्र में अध्यापक बनने वाले व्यक्ति थे आप। नागपुर सकल जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था श्री जैन सेवा मण्डल के आप कई बार अध्यक्ष रहे हैं। आपकी सोच के ही कारण समाज में कई परिवर्तन हुए, जिससे समाज हमेशा उन्नति की ओर आगे बढ़ा। आपका पूर्ण जीवन समाज सेवा को समर्पित रहा। आप नागपुर के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ऑल इण्डिया रेडियो पर पर्युषण पर अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने 65 वर्ष की आयु में बड़ी साधु वन्दना कण्ठस्थ की और रोज प्रातः मात्र 7 मिनट में ही भक्तामर स्तोत्र को गुण लिखा करते थे। आप अपने पीछे पत्नी श्रीमती कमलेशदेवी, दो पुत्र श्री राकेशजी-पूजाजी, श्री रितेशजी-डॉ. नेहाजी तथा दो पुत्रियाँ श्वेताजी पारख एवं स्वातिजी-विशालजी पितलिया को छोड़कर गये हैं। आपकी धर्मसहायिका पिछले 15 वर्षों से नियमित तपस्या कर रही हैं।

-*एस. एम. गाँधी, नागपुर*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

THOUGHTS

Mrs. Minakshi D. Jain

- ❁ You're born with two eyes and two ears and one mouth. You should use them proportionally.
- ❁ The tragedy of human history is decreasing happiness in the midst of increasing comforts.
- ❁ You may be able to pay back any debt but the debt you own your mother, you can never repay.
- ❁ Remain healthy by maintaining a simple diet of pure feeling, good wishes and positive thoughts.

-17/729, CHB, Jodhpur (Raj.)

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक क्रम संख्या 16272 से 16278 तक कुल 7 सदस्य बने। जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार	
100000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर	2100/-
100000/- श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर	2100/-
100000/- डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली	
जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त	
51000/- श्री स्थानकवासी जैन संघ, मैसूर पूज्य महासती श्री रुचिताजी म.सा. के वर्ष 2021 के सफल चातुर्मास के उपलक्ष्य में।	2100/-
11111/- श्री आकांशजी सुपुत्र श्री महेन्द्रजी-निशाजी जैन (बजाज), अलीगढ़-रामपुरा, बहिन अदितिजी द्वारा पीपाड़ में 9 दिसम्बर, 2021 को जैन भागवती दीक्षा अङ्गीकार करने के उपलक्ष्य में।	2100/-
5100/- श्री जितेन्द्रजी नवलखा, जयपुर श्री विनयचन्दजी नवलखा की पुण्यस्मृति में।	2001/-
5100/- श्री आनन्दकुमारजी विनोदकुमारजी नाहटा, बैंगलौर, बंगारपेट, पूजनीया श्रीमती कमलाबाईजी नाहटा का स्वर्गवास होने पर पुण्यस्मृति में।	2000/-
5000/- श्री कन्हैयालालजी, सोसरदेवीजी बोहरा (जैन) धार्मिक ट्रस्ट, भीलवाड़ा जिनवाणी को सप्रेम।	1101/-
5000/- श्रीमती प्रमिलाजी बम्ब, जयपुर, स्व. श्रीमान् संतोषजी बम्ब की 14वीं पुण्य स्मृति में भेंट।	1100/-
5000/- श्रीमती चन्दाजी-डॉ. लक्ष्मीचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, अपने विवाह के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।	
2500/- श्रीमती प्रीतिजी धर्मसहायिका श्री पी.एम.चौपड़ा, जोधपुर के जन्म दिवस (16 नवम्बर) पर सप्रेम।	1100/-
2100/- श्री नरेन्द्रजी (पुत्र), सचिनजी, नितिनजी जैन (पौत्र) (प्रभु-तारा परिवार फाजिलाबाद वाले) हिण्डौन सिटी स्व. वीरमाता श्रीमती तारादेवीजी जैन की 11वीं पुण्यतिथि की स्मृति में भावाञ्जलि।	1100/-
2100/- श्री नरेन्द्रजी जैन से.नि. प्रधानाचार्य-श्रीमती सावित्रीजी जैन से.नि. व्याख्याता (प्रभु-तारा	
	परिवार फाजिलाबाद वाले) हिण्डौनसिटी, बहिन महासतीजी के 19 दिसम्बर, 2021 को संयम के 39वें वर्ष में मंगल प्रवेश करने की प्रसन्नता में।
	श्रीमती तनुजाजी एवं श्री प्रदीपजी समदड़िया, मुम्बई सुपुत्र चि. मनन के विवाह उपलक्ष्य में।
	श्री महेन्द्रजी-श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत, सुपौत्री आननश के जन्म दिवस एवं पुत्र श्री अभिषेक एवं पुत्रवधू श्रीमती प्रिया गांग की वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
	श्री पदमराजजी चन्द्रप्रभाजी मेहता, बेंगलुरु, पीपाड़शहर में भागवती दीक्षाएँ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
	राकेशजी नीलू जी कुम्भट, बेंगलुरु, पीपाड़शहर में भागवती दीक्षाएँ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
	श्री माणकजी लोढा, जयपुर अपनी पत्नी श्रीमती शान्ताजी लोढा की पुण्यस्मृति में।
	श्रीमती सुमनजी भण्डारी, जोधपुर अपने पूज्य पिताजी श्री पुखराजजी मुणोत की प्रथम पुण्यतिथि की पावन स्मृति में।
	श्री कपूरचन्दजी सोमप्रकाशजी जैन (बिलोपा वाले) सवाईमाधोपुर, चि. गौरव का शुभ विवाह सौ.कां. दीप्ति (सुपुत्री श्री अनिलजी जैन, कोटा) के संग 12 दिसम्बर, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।
	श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन (स.मा. वाले) बड़ोदरा, अपनी सुपुत्री सौ.कां. रोमा जैन का शुभविवाह चि. प्रियांक सुपुत्र श्री अनिल कुमारजी जैन, मानसरोवर-जयपुर के साथ 11 दिसम्बर, 2021 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
	श्री सुरेन्द्रकुमार जी विकास कुमारजी (धमूण वाले) सवाईमाधोपुर सुपुत्र चि. सोनू (कपिल) का शुभ विवाह 28 नवम्बर, 2021 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
	श्री धर्मचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी, कमलेश कुमारजी, संजयकुमारजी, तुषारजी जैन (जरखोदा वाले) जयपुर, पिताजी श्री श्रीनिवासजी जैन का

- 29 नवम्बर, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री मुकेशकुमारजी संकेतकुमारजी जैन, इन्दौर, चि. शुभम् (गोलू) संग सौ.कां. प्रेरणा (प्राची) सुपुत्री श्री महावीर प्रसाद जी जैन (जरखोदा वाले), कोटा के शुभ विवाह उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री पन्नालालजी ओस्तवाल, अमरावती, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री दौलतमलजी-उत्तमकुमारीजी चोरड़िया, चेन्नई, वर्ष-2021 के आठ महीनों तक जोधपुर प्रवास में धर्म जागरणा करने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री उच्छवराजजी-श्रीमती विजयजी मेहता, जोधपुर, नवम्बर में अपनी तथा अनुरागजी-सोनलजी मेहता की वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती अजबजी धर्मपत्नी स्व. श्री रामवतारजी जैन (मौजपुर वाले) अपने सुपुत्र चि. विजयजी संग सौ.कां. खुशबूजी सुपुत्री श्री जिनेशजी जैन, जयपुर के विवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री गुलगोविन्दराजजी, राजेशजी, कमलजी मेहता, जोधपुर, श्रीमती कमलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री गुलराजजी मेहता का 27 अक्टूबर, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री हनुमानप्रसादजी (ICICI Bank) श्रीमती पदमाजी जैन (पचाला वाले) सवाईमाधोपुर, श्री विकासजी जैन की सहायक अभियन्ता के पद पर जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग में नियुक्ति होने पर।
- 1100/- श्री अरविन्दजी पुत्र श्री अशोकजी जैन (गहनौली वाले), महवा-दौसा, चि. अजीतजी सुपुत्र स्व. श्री रमेशजी जी जैन का शुभ विवाह सौ. कां. सोनम सुपुत्री श्री महेन्द्रजी जैन, अलवर (मौलोनी वाले) के साथ 14 नवम्बर, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री देवेन्द्रजी-श्रीमती कमलाजी, श्री लोकेन्द्रनाथ जी, श्रीमती ऋतुजी, सुश्री लोरीजी एवं आर्विजी मोदी, जोधपुर, स्व. श्री हकमनाथजी एवं श्रीमती कृष्णाजी मोदी के पुण्यतिथियों के प्रसङ्ग पर स्मरणार्थ।
- 1100/- श्री नरेशचन्द्रजी जैन (बरगमां वाले) हिण्डौनसिटी, सुपुत्र चि. सौरभजी संग सौ. पूनमजी सुपुत्री श्री मंगतुजी जैन का 14 नवम्बर, 2021 विवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री लडडूलालजी, बाबूलालजी जैन (भूरी पहाड़ी वाले) इन्दौर, चि. विशेष सुपुत्र श्री मोहनलालजी सौ.कां. शिल्पी सुपुत्री श्री राजेन्द्रजी श्यामपुरा वाले के साथ 13 दिसम्बर, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री पारसचन्द्रजी जैन (खिजूरी वाले) इन्दौर, चि. गौरवजी का शुभ विवाह सौ.कां. कृष्णाजी सुपुत्री श्री संजयकुमारजी डांगरवाड़ा-स.मा. के सङ्ग 13 दिसम्बर, 2021 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री प्रभुदयालजी, रमेशचन्द्रजी, मोहनलालजी, राजेन्द्रकुमारजी, मनोज कुमारजी जैन, (देवली वाले) कोटा, चि. विनेश्वरजी (गिरीश) का शुभ विवाह सौ.कां. टीनाजी (पलक) सुपुत्री श्री निर्मलकुमारजी जैन (पचाला वाले) स.मा. के साथ 30 नवम्बर, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

- 11000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, सेलम जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर हेतु साभार

- 48000/- श्रीमती चंचलकँवरजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. डॉ. मोहनराजजी भण्डारी, जयपुर, दो छात्राओं हेतु सहकार राशि।

यह मेरा नहीं, संयम का अभिनन्दन है

मुमुक्षु अदिति जैन, अलीगढ़-रामपुरा का जयपुर में विभिन्न स्थानों पर अभिनन्दन हो रहा था। मैंने उसे कहा-“अदिति तुम्हारा तो जगह-जगह खूब अभिनन्दन हो रहा है।”

अदिति बोली-“यह मेरा नहीं, संयम का अभिनन्दन है।”

-डॉ. धर्मचन्द जैन

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

घर में शान्ति और प्रेम

श्रीमती कमला हनुवन्तमल सुराणा

सोहनराज को क्षय (टी.बी.) रोग हो गया। कुछ समय पहले इस रोग का इलाज आया नहीं था। अतः इसे असाध्य रोग माना जाता था। उनके छोटे भाई मोहनराज का परिवार साथ ही रहता था। मोहनराज ने अच्छी से अच्छी चिकित्सा करवाई, लेकिन सोहनराज के स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया। उनका देहान्त हो गया। उनकी पत्नी भँवरी देवी ने सेवा में कोई कमी नहीं रखी।

छूत का रोग होने के कारण भँवरीदेवी भी उसकी चपेट में आ गई। कुछ समय पश्चात् उनकी भी मृत्यु हो गई। मोहनराज और उनकी पत्नी फेना पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। सोहनराज दो लड़के और तीन लड़कियाँ छोड़ गए। बड़ा लड़का 14 वर्ष का था और सबसे छोटी सन्तान लड़की थी। मोहनराज के पाँच लड़के और एक लड़की थी। 11 बच्चे और दो वे स्वयं का खर्चा वहन करना कठिन हो गया।

फेना पर गृहकार्य भारी पड़ गया। मोहनराज दुकान जल्दी चला जाता था। फेना सबकी पढ़ाई का ध्यान रखती थी। सभी बच्चों को तैयार कर समय पर स्कूल भेजती थी। जमा राशि थी, वह इलाज में चली गई। घर का खर्चा चलाना और सबका पालन-पोषण सहर्ष

करती थी। स्वयं के बच्चे और जेठ के बच्चों में कोई अन्तर नहीं था। सबसे छोटी वाली जेठ की पुत्री को अपने पास सुलाती थी। वह माँ के लिए रोती थी।

सोहनराज का बड़ा लड़का धनपत दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चाचा के साथ दुकान पर जाने लगा। धनपत व्यवहार कुशल था। उसके कारण दुकान की आय बढ़ गई। रात में आगे की पढ़ाई करता था। बी.ए. कर आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी करने लगा। सभी बच्चे फेना से बहुत खुश थे और घरेलू कामों में हाथ बँटाते थे। मोहनराज का बड़ा लड़का डॉक्टर बन गया।

घर में शान्ति और प्रेम का वास था। लक्ष्मी वर्षा होने लगी। लगभग सभी बच्चों के सम्बन्ध अच्छे परिवार में हो गए। मोहनराज और फेना की समाज में अलग पहचान बन गई। संयुक्त परिवार एक उदाहरण बन गया।

-ई 123, नेहरू पार्क, जोधपुर (रज.)

King shrenik and Anāthi Muni

King Shrenik of Magadha set out for a forest outing on a horse. As he entered the Madikuli garden, he saw a saintly person in meditation under a tree. He was surprised at the sight of such a pleasant face with a glowing forehead and was impressed by the monk. The

king wondered as to what heart-rendering and shocking experiences of worldly life might have led him to forsake the joys and pleasures of a youthful life and resort to a saintly way of life dedicated to penance.

The king bowed before the monk and asked politely, "I request you kindly set to rest the doubt agitating my mind. What has compelled you to take dikshā in the prime of your life? As I look at the unusual beauty of your body and your youthful age, I am prompted to ask as to what compelled you to forsake your family, wealth and dear ones at such a young age."

In a loving tone the monk said, "O King! I was absolutely lonesome and a helpless being in this world. There was neither any protector, nor friend. I abjured the worldly life because of such helplessness."

King Shrenik laughed and said, "O monk! if you feel so insecure and unprotected (anāth), I shall be your protector (nāth), Moreover, a person like me as your protector will make all the difference and there shall be no problem in having sincere friends, near ones, and dear ones. In their company you shall be able to enjoy all the pleasures like wealth, power and peace. Please renounce this sainthood you accepted at a youthful age and come with me to my grand pleasure place."

To this the monk said, "O King of Magadha! how shall you be my protector when you yourself are unprotected? I also, as you do, possessed invaluable wealth and riches, but once when I had severe pain in my eyes and burning sensation in my limbs, none could help me. Neither could the riches of my father nor any medical help nor the sweet love of my mother help. My devoted wife renounced all the ornaments and my brothers and sisters wept and wailed helplessly. I was helpless. They were helpless too. With a view to avoiding such helplessness, I decided to go

for dikshā which, I thought, was an unfailing remedy to all my pains. I made up my mind to renounce the world if my pain subsided that night. To my utter surprise it started subsiding immediately. By the time the day dawned, the pain had vanished completely. I was perfectly healthy. As per my decision earlier that night, I took dikshā and thus one who was totally unprotected (a-nāth) found this protector (nāth) in Bhagawān Mahāvīr.

Deeply impressed by the preaching's of Anāthi Muni, King Shrenik decided to seek refuge with Bhagawān Mahāvīr.

-From "Jain Story Book"

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- 'इरियावहिया' के पाठ का क्या प्रयोजन है?

उत्तर- 'आलोचनासूत्र' या 'इरियावहिया' के पाठ से गमनागमन के दोषों की शुद्धि की जाती है। गमनागमन करते हुए प्रमादवश यदि किसी जीव को पीड़ा पहुँची हो, तो इस पाठ के द्वारा खेद प्रकट किया जाता है।

प्र. 2- 'इरियावहिया' के पाठ में कितने प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है?

उत्तर- इरियावहिया के पाठ में पाँच प्रकार के जीव- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय की विराधना का उल्लेख है।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

पैदल चलने के लाभ

श्री अभय कुमार जैन

दिमाग-सप्ताह में दो घण्टे पैदल चलने से ब्रेन स्ट्रोक का खतरा 30% तक घट जाता है तथा ब्रेन के टिशू अधिक बेहतर तरीके से काम करते हैं।

याददाश्त-हफ्ते में अगर आप तीन-चार बार 40-50 मिनट की चहल क़दमी करते हैं तो दिमाग तेज होता है। नियमित रूप से चलने और दिन भर एक्टिव रहने से वेस्कुलर डिप्रेशन जैसी बीमारी का जोखिम 70% तक कम हो सकता है। इस आधार पर घूमने के

फायदे ज्ञान क्षमता बढ़ाने में भी मददगार हो सकते हैं।

मूड—दिन में अगर 30 मिनट चलेंगे तो डिप्रेशन का खतरा 36 प्रतिशत नीचे आयेगा। इससे आपका मूड बेहतर बनता है। यही नहीं यह भ्रमण आपके अन्दर तनाव, डर, डिप्रेशन और नकारात्मक भावनाएँ भी दूर करता है और ऊर्जा भरपूर बनाए रखता है। यही नहीं आपके मस्तिष्क को ठीक रखता है।

दिल—प्रति सप्ताह 30 से 60 मिनट चहल-कदमी करते हैं तो दिल के दौरे का खतरा टल जाता है। स्वास्थ्य मानदण्ड के मुताबिक यदि आप रोजाना आधा घण्टा घूमते हैं तो यह किसी भी तरह के कोरोनरी हार्ट डिजीज के खतरे को 19% तक घटा देता है।

लम्बी आयु—हर सप्ताह 75 मिनट पैदल चलना आपकी ज़िन्दगी के कम से कम 2 वर्ष बढ़ा देता है।

ब्लडशुगर पर कण्ट्रोल—यदि आप प्रतिदिन सुबह और खाना खाने के बाद घूमते हैं तो आपका ब्लड शुगर नियन्त्रित रहता है। एक शोध के मुताबिक रोज खाना खाने के बाद 15 मिनट का भ्रमण ब्लडशुगर को कम रख सकता है।

हड्डियाँ—सप्ताह में चार घण्टे चलने पर हिप फ्रेक्चर एवं जोड़ों के दर्द का खतरा 43% कम हो जाता है। यदि आपके हिप और घुटने की हड्डी में दर्द रहता है तो रोज घूमे। यह मसल्स को मजबूत बनाने और लुब्रिकेट करने में काफी मदद करता है। जिन लोगों को आर्थराइटिस है उन्हें तो जरूर घूमना चाहिए।

वजन—हर दिन एक घण्टा चलोगे तो मोटापे से राहत मिलेगी, एक शोध में पाया है कि मात्र चलने से ही शरीर का फेट कम हो सकता है, शरीर में लोच बढ़ सकती है और माँसपेशियों को मजबूती भी मिल सकती है।

सेहत—हर दिन 3500 कदम चलने से मधुमेह (डायबिटीज) का खतरा 29% नीचे आ जाता है।

रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि—यदि आपको तुरन्त सर्दी हो जाती है तो आपको इम्युनिटी बढ़ाने के

लिए प्रातः घूमना चाहिए। फ्लू के मौसम में 1,000 लोगों पर शोध किया गया तो पाया कि प्रतिदिन 30 से 45 मिनट घूमने वाले में 45% तक कम बीमार पड़ने की सम्भावना देखने को मिली।

—तृप्ति बन्दा रोड, भवानीमण्डी (राजस्थान)

पुण्य बड़ा बलवान

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

दो दोस्त थे राहुल और साहिल। कक्षा 12 तक दोनों एक ही स्कूल में साथ-साथ पढ़े थे। दोनों के माता-पिता में भी आपस में मैत्री थी। बाद में दोनों पढ़ने अमेरिका चले गये। राहुल तो पढ़ाई समाप्त होने पर वापस आ गया, पर साहिल ने वहीं नौकरी कर ली और वहीं बस गया।

समय-समय पर साहिल राहुल को समझाता रहता कि वापस अमेरिका आ जा, यहाँ की जीवनशैली, साफ-सफाई, कमाई एक अलग ही स्तर की है, लेकिन राहुल माता-पिता का इकलौता पुत्र था और उसके संस्कार ही ऐसे थे कि वह उनको छोड़कर नहीं जाना चाहता था।

राहुल का घर उपाश्रय के पास में था। धर्म में बहुत रुचि नहीं थी, पर समय-समय पर माता-पिता के साथ साधु-सन्तों के दर्शन के लिए जाता रहता था। गुणवन्तमुनिजी से उसका परिचय हुआ और वह धीरे-धीरे धर्म के रंग में रंगता गया। रात्रि-भोजन त्याग रखने लगा, अष्टमी का आयम्बिल करने लगा और स्वाध्याय को जीवन का अङ्ग बना लिया।

साहिल आर्थिक स्तर पर काफी प्रगति कर रहा था और राहुल ठीक-ठाक काम कर रहा था, पर सन्तोष का सुख सदैव उसके चेहरे पर रहता। राहुल ने कुछ बचत करके अपने नगर के बाहर एक जमीन खरीदी थी और कुछ शेयर्स भी। कुछ ही सालों में उनके दाम बीस गुणा हो गये।

राहुल को विश्वास हो गया कि पैसा सिर्फ पुरुषार्थ से नहीं पुण्यों से मिलता है। समय अच्छा होता है तो

बैठे-बैठे भी धन बढ़ जाता है। पुराने पुण्य अभी उदय में आये हैं, लेकिन अब आगे के लिए भी भाता बाँधना है। उसने अतिथि सेवा का व्रत ले लिया कि जब तक किसी एक अतिथि को खाना न खिला दूँ तब तक भोजन नहीं करूँगा। वह रोज सवेरे घर से टिफिन ले जाता एक को खाना खिलाता, फिर घर आकर खाना खाता। व्यवसाय भी उसका अचानक बढ़ने लगा और वह अपने नगर का सबसे धनाढ्य व्यापारी बन गया।

समय बड़ा बलवान होता है राजा रंक बन जाता है और रंक राजा। अपने हाथ में सिर्फ अच्छे कर्म करना होता है। बस अच्छे काम करते चलो।

-बी 2402, इण्डियानुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड, वर्ली
नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

जल-संयम ही समाधान

डॉ. दिलीप धींग

स्वच्छ जल का अभाव भारी, जल की खातिर घमासान है! संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।

तीर्थंकर महावीर प्रभु ने, जल को चेतनमय बतलाया। सदियों पहले हर मानव को, जल-संयम करना सिखलाया। उनकी शिक्षाओं से जीवन, बनता मंगल गान है। संयममय जीवन जीना ही जल-संकट का समाधान है।।1।।

किसी समय भारत भूमि पर, घी-दूध की नदियाँ बहतीं। हाय! जमाना कैसा है अब, जल-नदियाँ भी सूखी रहतीं। सुजला रहे हर सरिता, यह सबका अरमान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।2।।

कुछ शातिर नेता सौदागर, करते पानी पर अधिकार। ओ विकास के ठेकेदारों, रोको पानी का व्यापार। सूखे पनघट से पणिहारिन, करती यह आद्वान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।3।।

जल के सोते, झरने सारे, स्वच्छ रहें और स्वच्छ बहें। भरे लबालब झील जलाशय, भूजल स्तर भी उच्च रहे। जल प्रदूषण रोकेंगे तो, सच्चा गंगा-स्नान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।4।।

थोड़े जल से काम चलाएँ, चाहे आज प्रचुर हो पानी। जिसने जल की महिमा जानी, कल उसे ही मिलेगा पानी। जल से ही सब हरा-भरा है, जल बिन सब सुनसान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।5।।

जल से विद्युत-शक्ति मिलती, भक्ति-कलश छलकता है। खेती-बाड़ी होती जल से, जल से अन्न उपजता है। भूख-प्यास दोनों ही जल हैं, जल ही अमृत-पान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।6।।

वन उपवन महकते जल से, जल से धरती मुस्काती है। मोर, पपीहा, कोयल, चिड़िया; मीठे गीत सुनाती हैं। स्वस्थ हवाएँ, मस्त फिजाएँ; हर मौसम अभिराम है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।7।।

पशु-पक्षी और पेड़-पौधे, जल के सच्चे पहरेदार। जल की बरबादी के कारण, बूचड़खाने मांसाहार। शाकाहारी जीवनशैली, मानव का वरदान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।8।।

जल-अपव्यय का कोई उत्सव, रीत-रिवाज नहीं पालेंगे। छोटा-सा संकल्प करें कि, जल से होली ना खेलेंगे। जल-बचत से निश्चित बढ़ता, हर उत्सव का मान है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।9।।

जल का अपव्यय नहीं करने की, आज कसम सब खाएँगे। आओ! हम अभियान चलाएँ, बून्द बून्द बचाएँगे। जल है जीवन, जीवन का धन; जल जीवन का प्राण है। संयममय जीवन जीना ही, जल-संकट का समाधान है।।10।।

-निदेशक : आई.सी.पी.एस.आर., 7, अय्या मुदली
स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

Question Answer

Q1. How can we practice austerities?

Ans. The objective of performing austerities (*tapa*) is to reduce the buildup of karmic particles on the soul. Two types of austerities are mentioned in Jaina literature : external (*bāhya*) and internal (*ābhyantara*)

External austerities are of six kinds :

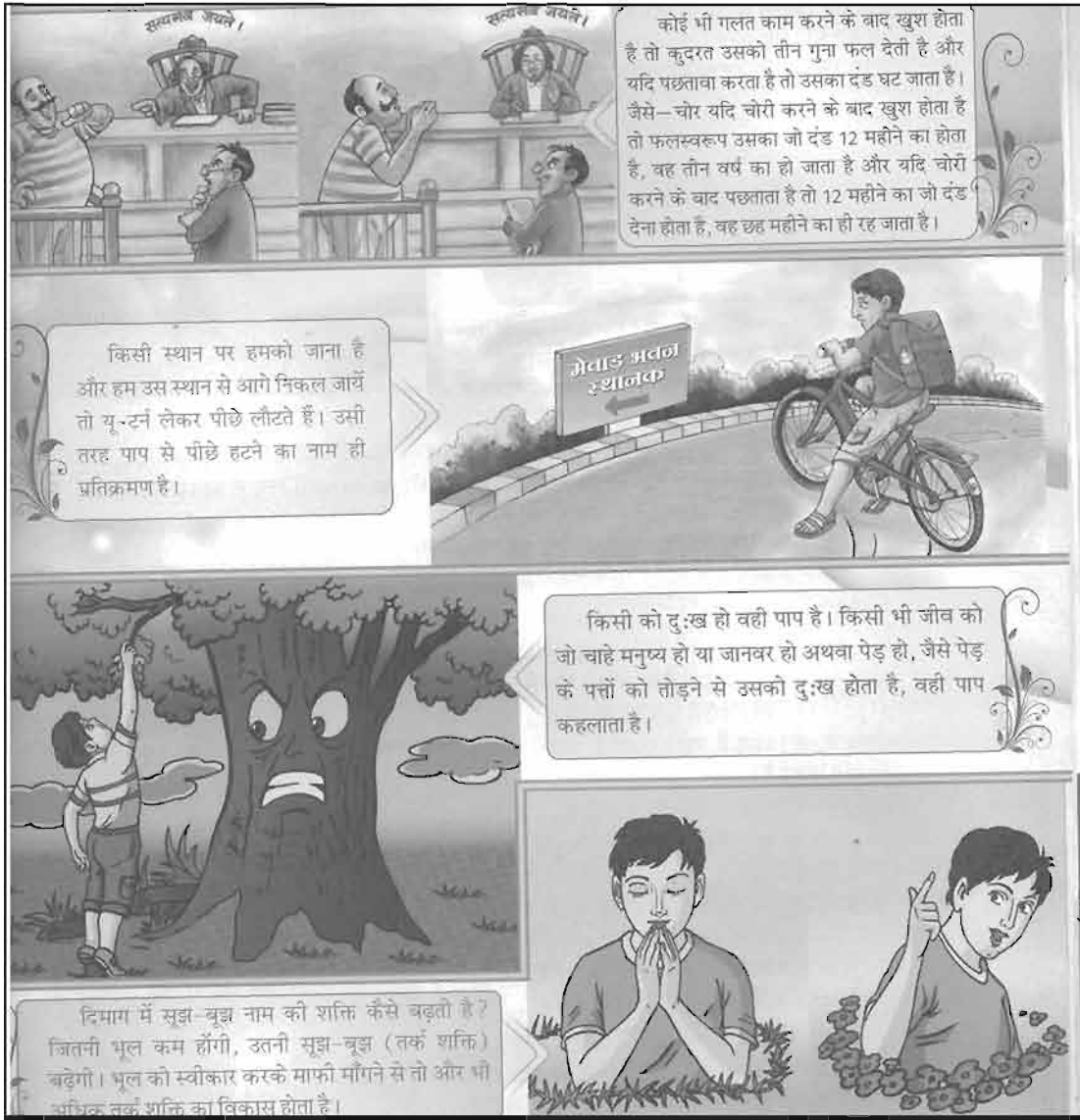
1. *Anāsana* : Fasting for a defined period.
2. *Ūnodarī* : Eating less than required.

3. *Vṛtti Saṁkṣepa* : Restriction in seeking alms (esp. for ascetics) and eating.
4. *Rasa parityāga* : Abstinence from delicious food.
5. *Kāyakeśa* : Penance, Enduring bodily affliction.
6. *Pratisamīnatā* : Staying in a forlorn place by renouncing comforts.
2. *Vinaya* : Humility and reverence.
3. *Vaiyāvṛtṭya* : Selfless service to monks, nuns and needy, including animals and birds.
4. *Svādhyāya* : Study of scriptures.
5. *Kāyotsarga* : Detachment from bodily activities.
6. *Dhyāna* : Meditation.

Internal austerities are of six kinds :

-Shri Dulichand Jain

1. *Prāyaścitta* : Atonement for our sins.



अमरकुमार

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 फरवरी, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

मगधदेश के राजा श्रेणिक चित्रशाला बनवा रहे थे, परन्तु उसका दरवाजा पूरा बनने से पहले ही टूट जाता था। किसी ने राजा को सलाह दी कि-‘बत्तीस लक्षण वाले बालक की यदि बलि दी जाए तो यह दरवाजा बन जायेगा।’ उस समय राजा श्रेणिक भगवान महावीर के श्रावक नहीं थे। उन्होंने बलिदान की बात मान ली। लेकिन प्रजा में से जबरदस्ती किसी बालक को बलि के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं? इसलिए उन्होंने ढिंढोरा पिटवाया-‘‘जो कोई भी अपने बत्तीस लक्षण वाले बालक को राजा के लिए देगा, उन्हें राजा बालक के वजन जितनी सोनैया देंगे।’’

उनके ही नगर में अमरकुमार नाम का एक 32 लक्षणी बालक था। उसका रूप बहुत सुन्दर और आकर्षक था। उसकी वाणी में मिठास थी। उसके गरीब पिता ऋषभदत्त ब्राह्मण उसे बहुत प्रेम करते थे। लेकिन उसकी माता को उसके प्रति बहुत नफरत थी।

अमरकुमार की माता ने राजा का ढिंढोरा सुना। जिसके घर में खाने की कमी हो और किसी के प्रति नफरत हो, तो उसे कुविचार उत्पन्न होता है। इस तरह अमरकुमार की माता को ऐसा कुविचार उत्पन्न हुआ- ‘‘यह ही मौका है, अमरकुमार को मिटा देने का। उसे यदि राजा को दे दिया जाये तो हमारी गरीबी और बला

दोनों एक साथ दूर हो जाएगी।’’

इधर ऋषभदत्त घर में खाने की सामग्री न होने से भोजन की चिन्ता कर रहा था। उसका दुबला-पतला शरीर उसकी गरीबी की गवाही दे रहा था। उसकी पत्नी ने आकर उसको कहा-‘‘तुमने ढिंढोरा सुना?’’ पत्नी की बात को उसने खास तवज्जो नहीं दी और धीरे से सिर हिलाकर केवल हुँकार भर दी। तब ब्राह्मणी बोली-‘‘तो फिर उठते क्यों नहीं? यह भूख का दुःख अब सहा नहीं जाता।’’ ब्राह्मणी को लगा कि ऋषभदत्त कुछ समझा नहीं, अतः उसने अपना पापी विचार खुलकर प्रगट किया-‘‘अपना अमरिया है न! उसे दे देते हैं, बदले में सोना ही सोना मिलेगा।’’ ब्राह्मणी की बात सुनकर ब्राह्मण के मन को धक्का लगा। वह सोचने लगा-‘‘इतने प्रिय बेटे को कैसे दे दें?’’

परन्तु भूख के दुःख के आगे बड़े-बड़े भी पिघल जाते हैं और वह तो एक गरीब ब्राह्मण था। वह भी भूख और दुःख से त्रस्त। अन्त में उसने मन मारकर ब्राह्मणी की बात मान ली। ऋषभदत्त ने अपना प्यारा बेटा राजा को सौंप दिया। अमरकुमार बहुत रोया, विनति की, परन्तु माता-पिता नहीं माने और बेटे के बदले में सोनैया लेकर चले गये।

लोग उनकी आलोचना करने लगे कि ये माता-

पिता हैं या ज़िन्दा राक्षस? धन की खातिर कोई ऐसे सुन्दर पुत्र की बलि चढ़ा देता है क्या? राजा को सौंप दिया, धिक्कार है उन्हें। इधर चित्रशाला में अमरकुमार की बलि देने की तैयारी शुरू हो गई। वेदी बना दी गई। उसमें से अग्नि की ज्वालाएँ निकल रही थीं, लोग इकट्ठे होकर बात करने लगे—“यह कैसा अनर्थ है? राजा के दिल में दया नहीं है?” परन्तु राजा को यह बात कहने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। कुछ लोग मन ही मन में बहुत दुःखी हो रहे थे, तो कुछ निर्दयी लोग माता-पिता का पक्ष लेकर खुश हो रहे थे। कैसा विचित्र संसार है यह? किसी को जिस बात का दुःख है, वही दूसरों के लिए खुशी का कारण है।

राज सेवक अमरकुमार को लेकर चित्रशाला में आ गये। अमरकुमार की आँखें तो रो-रोकर सूख गई थीं। परन्तु अब रोने से कोई फायदा नहीं था। जब माता-पिता ही वैरी बन गये तो वहाँ दूसरा कौन मदद कर सकता था? उसे मरने के अलावा कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

धीरे-धीरे अमरकुमार सामान्य होने का प्रयत्न करने लगा और सोचते-सोचते अचानक उसे किसी जैन मुनि द्वारा सिखाया हुआ नवकार मन्त्र याद हो आया। यह तो मानो डूबते को नाव मिली। बेसहारे को सहारा मिला। उसे बड़ा आनन्द हुआ। वह मन को मजबूत कर एकाग्रचित्त होकर अटूट श्रद्धा और भक्ति के साथ नवकार का स्मरण करने लगा—‘नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्जायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं।’ नवकार का स्मरण करते हुए अमरकुमार शीतल और सुगन्धित पानी के हौज में प्रवेश कर रहा हो, वैसे अग्नि में प्रवेश किया।

अचानक राजा श्रेणिक चक्कर खाकर नीचे जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़े। मन्त्री उन्हें होश में लाने का प्रयास करने लगे। वैद्य भी आकर उपचार करने लगे, लेकिन श्रेणिक को होश नहीं आया। सबके मन में विचार आने लगा—“अमरकुमार को दुःख दिया उसका बदला मिला है।”

अमरकुमार तो चिता में किसी योगी की तरह नवकार गिनते, ध्यान लगाकर बैठा था। सबको लगा—‘इस बालक में बहुत शक्ति है।’ इस तरह चिता शान्त हो गई, लेकिन अमरकुमार को कुछ नहीं हुआ। सब अमरकुमार के चरणों में गिरकर राजा को होश में लाने के लिए विनति करने लगे। अमरकुमार ने लोगों से कहा—“मैं राजा पर क्रोधित नहीं हुआ हूँ और मैंने राजा के बारे में कुछ बुरा भी नहीं सोचा। मैं स्वयं राजा को ठीक करने का प्रयत्न करता हूँ।” ऐसा कहकर उसने नवकार बोलकर राजा पर पानी छिड़का। राजा होश में आने लगे और उठकर बैठ गए। लोग अमरकुमार की प्रशंसा करने लगे। श्रेणिक राजा ने उसे प्रेम से आलिङ्गन किया और कहा—“हे वत्स! मुझे माफ कर। तू जो माँगगा वह मैं दूँगा।”

अमरकुमार ने कहा—“हे राजन्! मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरे पास तो मेरा नवकार मन्त्र है, वह श्रेष्ठ है। संसार के सब दुःखों का नाश करके अनन्त सुख देने की उसमें शक्ति है।”

उसे लगा कि संसार पूरा स्वार्थ का सगा है। अरे! खुद माता-पिता भी? ऐसे संसार की असारता जानकर अमरकुमार ने वैराग्य के साथ दीक्षा ली और सब दुःखों का अन्त किया। नवकार मन्त्र की सच्ची श्रद्धा के कारण अमरकुमार का नाम अमर हो गया। धन्य है अमरकुमार की दृढ़ता को..... धन्य है उनकी श्रद्धा को.....

—‘जैन पाठ्यक्रम - पुस्तक : 1’ से सारभार

- प्र. 1 श्रेणिक राजा ने क्या ढिंढोरा पिटवाया था?
- प्र. 2 अमरकुमार किस कारण से जैनधर्म के इतिहास में अमर हो गए।
- प्र. 3 कहानी में निहित सन्देश को लिखिए।
- प्र. 4 लोगों द्वारा किनकी आलोचना की गई और क्यों?
- प्र. 5 राजा श्रेणिक के बेहोश होने का क्या कारण था?
- प्र. 6 “कैसा विचित्र संसार है यह?” इस पंक्ति में क्या व्यंग्य छिपा है?

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2021] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सुन्दरी का पति' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	सुदर्शन जैन, चौथका बरवाड़ा (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अखिल पालडेचा, विजयनगर (राजस्थान)	21
	सिद्धार्थ जैन, सरवाड़ (राजस्थान)	21
	भाव्य जैन, बठिंडा (पंजाब)	21
	रितिक जैन, कोटा (राजस्थान)	21
	प्रखर जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	21

बाल-जिनवाणी दिसम्बर, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 फरवरी, 2021)

- प्र. 1. व्यक्ति पर-कल्याण कब कर सकता है?
- प्र. 2. श्रमण-निर्ग्रन्थों की पर्युपासना करने से क्या लाभ हैं?
- प्र. 3. कर्मवीर किन्हें कहते हैं?
- प्र. 4. कम बोलने के क्या-क्या फायदे हैं?
- प्र. 5. 'व्यक्तित्व की पहचान' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 6. हमारे हाथ मूल्यवान् कब बन जाते हैं? 'कीमत हाथों की' कविता के आधार पर लिखिए।
- प्र. 7. साधु-साध्वियों को आहार बहराते समय कोई चार ध्यान रखने योग्य बातें लिखिए।
- प्र. 8. 'अंगूर खट्टे नहीं हैं' कहानी किस तरह नवीनता लिए हुए है?
- प्र. 9. जीवन में 14 नियमों का पालन किस तरह उपयोगी है?
- प्र. 10. What did the angel request Bhāgwan Mahāvīr? What did Bhāgwan Mahāvīr Say?

बाल-जिनवाणी [सितम्बर-2021] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	दीपल जैन, कोटा (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	कु. सुवर्णा एस. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	35
	पुलकित जैन, आदर्शनगर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	35
	आर्यन जैन, चौथका बरवाड़ा (राजस्थान)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर प्रयार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफ्तराज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	
श्रीमान् प्रवणशचन्द्र जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai	श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवर् जी भंडारी, द्विपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़) कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद। श्रीमती हेमलता मदनलाल जी सांखला, मुम्बई। श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर	श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)।

सहयोग के लिए बैंक या ट्राफिक कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

“छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का”

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री उम्मेदराजजी, एबन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
- (2) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
- (3) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
- (4) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
- (5) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
- (2) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
- (3) श्री स्वरूपचन्दजी, सुदर्शनजी बाफना, सूरत
- (4) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
- (5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
- (6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
- (7) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
- (8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (9) इन्दर कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
- (10) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
- (11) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
- (12) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)
- (13) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (14) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (15) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (16) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (17) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (18) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (19) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (20) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना

एवं

**स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का
हार्दिक स्वागत।**



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

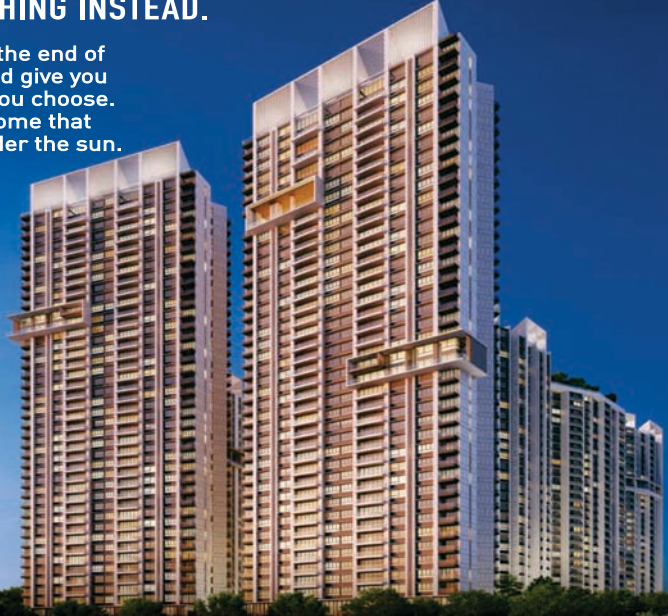
FSSAI LIC. No. 10012013000138



**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

In association with


If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन